●

मूल्य ३)

प्रकाशक
नीलाभ प्रकाशन, ५ खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद-१
मुद्रक
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

'कबूतरखाना' की हीरोइन को

●

क्रम

निवेदन

हिन्दी साहित्य के गम्भीर पाठको और सुधी समालोचको को "कोणार्क" के वाद शायद मेरे ये एकाकी हलके जंचे। न इन नाटको में कोई गहन दर्शन है, न किन्ही प्रवल प्रेरणाओ का आघात-प्रतिघात, न किन्ही उदात्त आदर्शो की आवेशपूर्ण अभिव्यजना !

एक वार तवियत आई कि क्यो न कुछ ऐसे रूपक लिख डालू जिन पर किसी उद्देश्य-विशेष के आग्रह की छाप न हो ! कुछ दिल-वहलाव हो जाय !— अपना अधिक, दूसरो का कम या ज्यादा, जैसा वे समझें।

किन्तु कौन ऐसा लेखक होगा जिसकी कलम पर सामाजिक समस्याए सवार न होती हो, अनजाने ही या डके की चोट के साथ ? शुद्ध मनवहलाव भी ऐसी ही मरीचिका है, जैसी शुद्ध कला । सो इन नाटको में भी आपको कही विल्कुल स्पष्ट, कही सकेतो के रूप

मे, सामाजिक विषमताओ का निदर्शन और उन पर व्यग्य, मिलेगा। नवीनता यही है कि यहाँ जिन कमजोरियो का खाका खीचा गया है उन पर मैंने खड्गहस्त और कुंचित्-भ्रू होकर प्रहार नही किया है, वल्कि उनके अतिरजित स्वरूप—केरिकेचर—को सामने रख कर पाठक और दर्शक को उनके बेडौलपन से परिचित कराना चाहा है। मेरी धारणा है—मुमकिन है यह धारणा गलत हो—कि कभी कभी मानसिक और सामाजिक रोगो का जितना ही हास्यास्पद रूप दिखाया जाता है, उतना ही अधिक उसके निदान की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट हो जाता है। इसीलिए मैंने इन्हे "नटखट नाटक" नाम दिया है— ऐसे नाटक जिनमें पात्रो के साथ कुछ छेडछाड, कुछ चुहल, कुछ शरारत तो की गई है, लेकिन उनको बिल्कुल स्याह या बिल्कुल सफेद नही रँगा गया।

पाठक यह न समझें कि इन नाटको की रचना किसी पूर्व-निश्चित योजना के फलस्वरूप हुई है। असल मे ये एक व्यस्त सरकारी जीवन के कोनो में दुबके हुए दो चार फुरसत के क्षणो की देन है। सन् '४८ से सन '५२ तक के दौरान मे कभी सरकारी काम काज की थकान मिटाने के लिए और कभी यो ही ये रचनायें 'बिसर पडी'। थोडे बहुत संशोधन के बाद उन्ही का यह सग्रह प्रस्तुत कर रहा हूँ।

परिशिष्ट वाला निबन्ध—"मै भी खेल चुका हूँ" पटने की मासिक पत्रिका "नई धारा" के रगमच-विशेषाक के लिए लिखा गया था और शायद इस सग्रह के वातावरण से मेल खाता है।

१५ अगस्त १९५३

जगदीश चन्द्र माथुर

नाटक खेलने वालों से--

यदि आप रगमच पर किमी नाटक को (चाहे वह इस सग्रह का हो, या अन्य कोई) प्रस्तुत करने जा रहे है तो मेरा सुझाव है कि कृपया निम्नलिखित प्रश्नावली अपने और अपने सहकर्मियो के सामने रखे --

(१) क्या आपके पात्रो को अपना अपना अश याद है या वे प्राम्प्टर के आसरे काम चलाते है ?

(२) क्या आपने रगशाला की सव से पीछे वाली बेंच पर बैठकर नाटक का वार्तालाप सुना है ? यदि हा, तो क्या वहा से प्रत्येक अभिनेता का प्रत्येक शब्द साफ माफ सुनाई देता और समझ पडता है ?

(३) क्या आपके अभिनेता या अभिनेत्रियां सारे नाटक के दौरान में एक ही स्वर में तो नही बोलते ? क्या वे लोग स्वाभाविक ढग से रुकते, अटकते, उठते बैठते, असली स्त्री-पुरुषो की तरह बाते करते है या किताबी नर-नारियो की तरह ?

(४) क्या रगमच पर फर्नीचर इत्यादि इस तरह तो नही रखे हुए है कि पात्रो की शक्ल ही छिप जाय और छोटे-से रगमच पर भीड ही भीड नजर पडे ?

(५) क्या आपका पर्दा ठीक वक्त पर बिना अटके हुए गिर जाता है ? उसका अभ्यास कई बार किया गया है या नही ?

(६) पात्रो को कब आना और प्रस्थान करना है—इसका पक्का अभ्यास है या नही ?

(७) कौन ग्रीनरूम का जिम्मेदार होगा, कौन रोशनी का, कौन पर्दा उठाने-गिराने का, कौन मेहमानो को बैठाने का—इन तथा अन्य कर्त्तव्यो का विभाजन हो गया है या नही ? इन लोगो ने अपने अपने काम का यथोचित अभ्यास कर लिया है या नही ?

(८) क्या आपके अभिनय के नोटिस मे पहले से ही यह स्पष्ट लिख दिया गया है या नही कि ६ बरस से कम उम्र के बच्चो को दर्शक मा-बाप अभिनय के वक्त न लाये, क्योकि उनके रोने अथवा अन्य चेष्टाओ मे विघ्न होता है ?

(९) क्या आपने उतने ही लोगो को बुलाया है जितनी आपके पास सीटें है, या अन्धाधुन्ध निमन्त्रण भेज दिये है ? देर से आने वाले 'बडे लोगो' के लिए कुछ फालतू कुर्सिया भी आपने अलग रखी हुई है या नही ?

(१०) क्या आपका 'शो' टिकट खरीदने वालो को दिखाया जायेगा या निमन्त्रण पाने वालो को ? यदि टिकट बेचे जा रहे है तो आपका कर्त्तव्य है कि पहले लेखक की अनुमति प्राप्त कर ले और अपनी आमदनी से उसे रॉयल्टी देने के लिए प्रस्तुत रहे । यदि 'शो'

मुफ्त है और निमन्त्रण-पत्र भेजे जा रहे है, तो भी लेखक को पहले से सूचित अवश्य कर दीजिए ।

अनुभवी निर्देशको को उल्लिखित सकेतो में कोई नवीनता शायद न झलके । लेकिन मैंने अक्सर अच्छे-भले नाटको को इसीलिए रग-मच पर ढेर होते देखा है कि निर्देशको और अभिनेताओ ने इन साधारण-सी दीखने वाली बातो पर ध्यान नही दिया । मैंने अपने सामने अपने ही नाटको की हत्या होती देखी है और आप मेरी तकलीफ का अन्दाज़ कर सकते है। इसलिए मेरा यह आग्रह है कि इन सकेतो को छोटा मुह बडी बात न समझें ।

एक बात और । इस सग्रह के प्रत्येक नाटक के साथ मैंने एक चित्र दिया है, जिसमें रगमच की स्थिति दिखाने की चेष्टा की गई है । हो सके तो तदनुसार अपनी 'सेटिंग' तैयार कीजिए । लेकिन उससे भी सरल और अधिक प्रभावोत्पादक सेटिंग आप देना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति न होगी ।

—लेखक

ओ मेरे ...

घोंसले
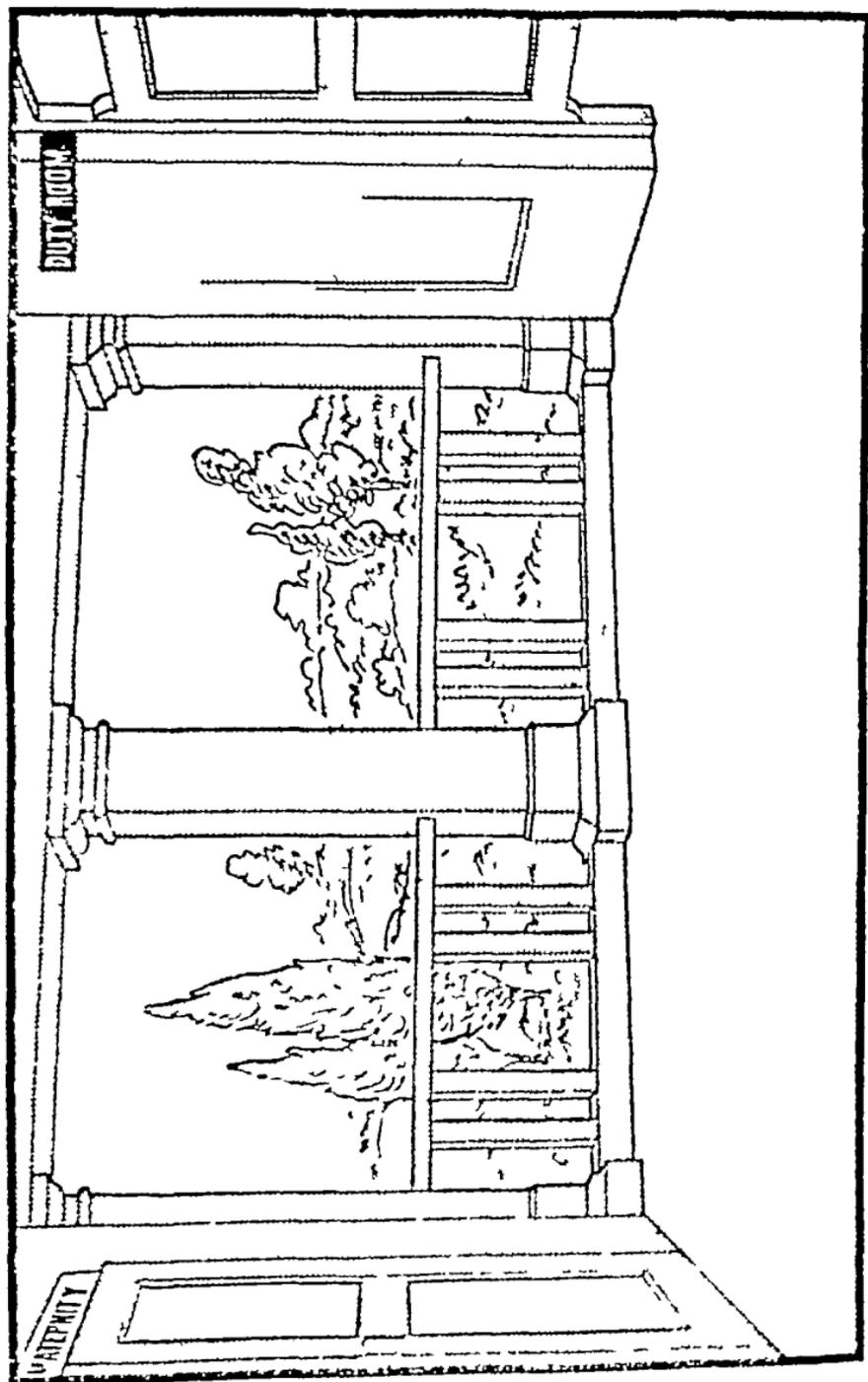
[एक वरामदा। वायीं तरफ दो कमरों में जाने का रास्ता, दाहिनी तरफ अन्यत्र जाने का। सामने एक स्तम्भ और रेलिंग। वाहर की हरियाली श्यामल होकर झलक रही है। दरवाजों के ऊपर लिखा है—मेटर्निटी वार्ड। कभी-कभी इधर-से-उधर नर्स और दाइयां तामचीनी के नाना प्रकार के वर्तन लिये, आती-जाती नजर पड़ती हैं, कभी-कभी द्रुत गति से, कभी आराम से।

समय लगभग ७ वजे शाम। पर्दा उठने पर जगमोहन रेलिंग के सहारे दर्शकों की तरफ पीठ किये खड़ा दीखता है। वाहर की ओर देख रहा है। सिगरेट पी रहा है और धुआं फेंक रहा है।

थोड़ी देर में दाहिनी ओर से विजय का प्रवेश। विजय जगमोहन को देखकर चौंक-सा उठता है, गौर से देखता है, फिर करीव जाता है।]

विजय हलो, वन्धु !

[जगमोहन मुड़कर देखता है। सुन्दर चेहरा, किन्तु इस समय चिन्ता की रेखाएं। फैशनेवल विना रिम का

चश्मा, कपड़े भी अच्छे सिले हुए, टाई लेटेस्ट फैशन। लेकिन मुखड़ा कुम्हलाया।]

जगमोहन (कुछ अनिश्चित-सा और अनमना-सा) हलो !

विजय पहचाना ?

जगमोहन (हिचकिचाता हुआ) कोशिश तो कर रहा हूँ।

विजय कमरा नं० ३, मेगस्ताफ होस्टल, प्रो० करुणाकर की क्लास।

जगमोहन (पहचानकर सोल्लास हाथ मिलाता हुआ) विजय ! विजय पहलवान !

विजय (हँसता हुआ) "खंडहर बता रहे हैं, इमारत बुलन्द थी" ! अब कहाँ वह पहलवानी ? जब से गामा रिटायर हुआ, हमारी भी तबियत उचट गई।

जगमोहन . उन दिनों की खूराक ने तो कुछ असर दिखाया है। चार अंडे, सेर भर दूध, चार आउँस मक्खन—सब को घोल कर एक साँस में चढ़ा लेते थे तुम।

विजय (फिर वही स्वच्छन्द हँसी) और वह सोते वक्त पाव भर मलाई। भई, उसी का तो यह असर है, यह गद्देदार शरीर। लेकिन बाल तो खिचड़ी हो चले। तुम तो यार, जगमोहन, वैसे के वैसे ही हो, खजाने का नया रुपया। वही जुल्फें, वही छरहरा बदन, वही नया तुला फाल्टलेस सूट, वही मुस्कराहट .....(चौंक कर) अरे !

जगमोहन · बातूनी तुम भी वैसे ही हो !

विजय · (वही आश्चर्य भरी मुद्रा) न होता तो भी तुम्हारी बढ़ी हुई हजामत को देख कर तो बोल ही उठता। भई जगमोहन, तुम्हारी हजामत तो बढ़ निकली होगी

थी कि ठोडी पर मक्खी भी फिसल पड़े। यह हुआ क्या ?

[एक नर्स का एक तामचीनी की ट्रे में सर्जरी के औज़ार लिये हुए प्रवेश। हँसमुख, साँवली, कुछ मोटी, कुछ शोख। सफेद फ्राक के नीचे स्कर्ट। विजय को देखकर रुक जाती है।]

नर्स हलो मि० विजय नारायण !

विजय : हलो नर्स ! हलो सिस्टर ! क्या हाल है ?

नर्स मज़े में। कहिए आप फिर आ पहुँचे। कहाँ है मेम साहब, कमरा मिल गया ? इस बार पहले से कन्सल्ट करने के लिए भी नहीं आये ? क्या बाहर रहे थे आप लोग ?

विजय . अरे, नही सिस्टर। तुम तो इतनी जल्दी नतीजे पर पहुँच जाती हो। क्या तुम्हारे अस्पताल में और किसी मतलब से आना गुनाह है ?

(नर्स हँसती है।)

जगमोहन (चिन्तित स्वर में नर्स का ध्यान आकृष्ट करने के लिए) नर्स !

नर्स (जगमोहन पर ध्यान न देती हुई, उसी हँसी भरे स्वर में) और क्या मतलब होगा मि० विजय ? यहाँ तो फलने-फूलने वाले ही आते हैं।

विजय हाँ, और दिवालिये होकर जाते हैं !

नर्स खूब ! ..साहब, बच्चे तो दौलत है, दौलत !

विजय दौलत ? सुनो नर्स। पहला बच्चा खुशी का आलम, दो बच्चे खतरे की घटी, तीन बच्चे, बस भई; चार बच्चे, खुदा की पनाह; और ..पाँच बच्चे, मा – त – म !!

जगमोहन (चिन्तित स्वर) नर्स !

नर्स (हँसती हुई) आपकी शक्ल से तो नही मालूम होता मि० विजय, कि आप खुदा की पनाह माँगते हो। चार लडकियो के बाप और ...

विजय और वौर कुछ नही। हिन्दुस्तान की आबादी का ठेका हमी दोनो ने थोडे ही लिया है।

जगमोहन · नर्स !

नर्स (विजय से) तो फिर कैसे आना हुआ ?

विजय वे अपनी एक सहेली को देखने आई थी, मिसेज मेहरा ..

नर्स छ नम्बर कमरा।

विजय हाँ, लौटी तो बोली, चलो डाक्टर मधुरानी से अपना 'चेक अप' करा लूँ।

नर्स · अभी डयूटी-रूम से वजन तोलने की मशीन की माँग हुई। हमारी डाक्टरनी साहब को भी वजन तोलने की मशीन का मर्ज है, जुकाम हो तो वजन लो, दिल की तकलीफ हो तो वजन। मैं तो उस मशीन के करीब नही फटकती।

विजय आज तो कुछ दुबली लग रही हो, नर्स !

नर्स . दुबली ! बातें करके ही तो अपना मुटापा कम करती हूँ मि० विजय। चार मरीजो के रिश्तेदारो से झक-झक, और आधा पौंड वजन कम।

जगमोहन नर्स। . क्या मैं पूछ सकता हूँ—

नर्स . (मुस्कराती हुई और हाथ की ट्रे को देखती हुई) अभी नही, अभी ना

विजय : नर्स, जगमोहन मेरे दोस्त हैं, पुराने दोस्त ! ।

नर्स : तब तो आप इन्हें समझाइए। अरे, मुझे तो यही

खडे-खडे वहुत देर हो गई। (जाते हुए मुस्कराहट) आपने तो मेरा वहुत वजन घटा दिया मि० विजय !

(दाहने कमरे में चली जाती है।)

जगमोहन . नर्स, नर्स !

विजय क्या बात है, भई, जगमोहन !.. क्या तुमने अपना पेशा छोडा नही अभी तक ?

जगमोहन · पेशा ? कौन सा पेशा ?

विजय अरे, वही शौकीनी, मुहब्बतवाजी ?

जगमोहन इस लडकी से ?.. तुम भी विजय.... .

विजय क्यो ? मुस्कराती तो अच्छा है। .. लेकिन हाँ, वह वात नही जो तुम्हारी उन दिनो की लाडलियो में थी। .. कहाँ कहाँ गईं वे सव ? तुम तो यार, वहुत आँखो के सितारे थे उन लोगो के। सारे अच्छे अच्छे कटाक्ष तो तुम्हारे ही लिए रिजर्व थे ! हम लोगो को तो जूठन भी नसीव नही होती थी। . कहाँ गई वह रजना ?

जगमोहन (कुछ उदासी के भाव से) सुना शायद उमेश से शादी हो गई।

विजय · उमेश ? वह वाँगड्।

जगमोहन इजीनियर वन गया है।

विजय . और वह दारु लता ?

जगमोहन दारु लता ?

विजय वही न जिसकी किताव तुम्हारी किताव से वदल गई थी और जिसकी साइकिल से तुम्हारी साइकिल टकरा गई थी ?

जगमोहन दारु लता नही तरु लता !. . वह तो सुना है अव काली मुखर्जी की वीवी है।

जगमोहन . (चिन्तित स्वर) नर्स !

नर्स (हँसती हुई) आपकी शक्ल से तो नहीं मालूम होता मि० विजय, कि आप खुदा की पनाह माँगते हो। चार लडकियो के बाप और ....

विजय और वीर कुछ नही। हिन्दुस्तान की आबादी का ठेका हमी दोनो ने थोडे ही लिया है।

जगमोहन : नर्स !

नर्स (विजय से) तो फिर कैसे आना हुआ ?

विजय वे अपनी एक सहेली को देखने आई थी, मिसेज मेहरा -

नर्स छ नम्बर कमरा।

विजय हाँ, लौटी तो बोली, चलो डाक्टर मधुरानी से अपना 'चेक अप' करा लूँ।

नर्स : तभी डयूटी-रूम से वजन तोलने की मशीन की माँग हुई। हमारी डाक्टर्नी साहब को भी वजन तोलने की मशीन का मर्ज़ है, जुकाम हो तो वजन लो, दिल की तकलीफ हो तो वज़न। . मैं तो उस मशीन के करीब नही फटकती।

विजय : आज तो कुछ दुबली लग रही हो, नर्स !

नर्स : दुबली ! बातें करके ही तो अपना मुटापा कम करती हूँ मि० विजय। चार मरीज़ो के रिश्तेदारो से झक-झक, और आधा पौंड वजन कम।

जगमोहन नर्स। क्या मैं पूछ सकता हूँ—

नर्स : (मुस्कराती हुई और हाथ की ट्रे को देखती हुई) अभी नही, अभी तो ....

विजय : नर्स, जगमोहन मेरे दोस्त है, पुराने दोस्त !

नर्स : तब तो आप इन्हे समझाइए। अरे, मुझे तो यही

खडे-खडे वहुत देर हो गई। (जाते हुए मुस्कराहट) आपने तो मेरा वहुत वजन घटा दिया मि० विजय !

(दाहने कमरे में चली जाती है।)

जगमोहन नर्स, नर्स !

विजय क्या वात है, भई, जगमोहन ! . . क्या तुमने अपना पेशा छोडा नही अभी तक ?

जगमोहन पेशा ? कौन सा पेशा ?

विजय : अरे, वही शौकीनी, मुहब्बतवाजी ?

जगमोहन इस लडकी से ? तुम भी विजय . . . .

विजय · क्यो ? मुस्कराती तो अच्छा है। . लेकिन हाँ, वह वात नही जो तुम्हारी उन दिनो की लाडलियो मे थी। . . कहाँ कहाँ गई वे सब ? तुम तो यार, वहुत आँखो के सितारे थे उन लोगो के। .सारे अच्छे अच्छे कटाक्ष तो तुम्हारे ही लिए रिजर्व थे ! हम लोगो को तो जूठन भी नसीव नही होती थी। . . कहाँ गई वह रजना ?

जगमोहन (कुछ उदासी के भाव से) सुना शायद उमेश से शादी हो गई।

विजय · उमेश ? वह वाँगड़ू।

जगमोहन इजीनियर वन गया है।

विजय · और वह दारु लता ?

जगमोहन दारु लता ?

विजय वही न जिसकी किताव तुम्हारी किताव से वदल गई थी और जिसकी साइकिल से तुम्हारी साइकिल टकरा गई थी ?

जगमोहन दारु लता नही तरु लता ! . . वह तो सुना है अव काली मुखर्जी की वीवी है।

विजय : अरे वह, कालू। वह तो भई, सिवाय पढने और खेलने के और कुछ जानता ही नहीं था। पतलून पहनने का भी तो शऊर नहीं था उसे।

जगमोहन : हाँ, वही। अब एयर-फोर्स में ऊँचा अफसर है।

विजय · तब तो 'ए-वन' क्लास की तो सिर्फ रेखा ही रह गई।

जगमोहन : वह था न शिव प्रसाद ?

विजय . वह रुई की वास्कट वाला ? भई, मै उसे चिढाया करता था कि जब तक तुम यह वास्कट पहनोगे, तब तक तुमसे कोई लडकी शादी नहीं करेगी। .. मगर पढने में तेज था और नाइट स्कूल चलाने का भी खब्त था शायद उसे।

जगमोहन · रेखा की शादी उसी से हुई है।

विजय नहीं यार कहाँ रेखा और कहाँ . . .

जगमोहन . आइ० ए० एस० में आ गया कम्बख्त ...

विजय यह भी परमात्मा को अच्छा मजाक सूझता है। जितनी अच्छी-अच्छी अप्सरा जैसी लडकियाँ थी, वे तो चली गईं इन टट्टुओ के साथ और तुम जैसे गन्धर्व, बढिया ड्रेस, मनोहर रूप, नये से नये फैशन के अगुआ, बातचीत में निपुण, जो जलसा हो उसी में स्वागत करने के मुतजिम, तुम, हमारे छबीले सरदार, यो ही रह गये। . न जाने क्यो हमेशा ऐसा होता है।. . खैर, फिर भी तुम्हारी बात दूसरी है। तुम क्या परवाह करते होगे ?

जगमोहन क्यो ?

विजय तुम्हारा तो वह सिद्धान्त था न, 'यदि सभ्यता को बचाना है तो कानून के जोर से शादियो को बन्द कर

देना चाहिए। शादी वह दीवार है जो मनुष्य अपनी आत्मा-रूपी अनारकली के चारो तरफ चिनता है ताकि वह घुट कर मर जाय।' भई, जगमोहन तुम्हारी वह 'थीसिस' लाजवाब थी शादी के खिलाफ। पूरी हुई ?

जगमोहन · थीसिस ? (खोखली, आत्म-प्रतारणा से भरी हँसी) थीसिस !

विजय दो चार खूसट प्रोफेसर बहुत भडकते थे तुम्हारी उस थीसिस से। लेकिन सारी यूनिवर्सिटी में चर्चा थी उसकी। कभी-कभी तो दोस्त, मुझे तुम्हारी दलीलो की अब भी याद आती है।

जगमोहन चार लडकियो के पिता हो चुकने पर भी ?

विजय पछतावा तो, भाई जान, मैं करता ही नहीं। लेकिन (हँसकर) प्रतिज्ञाएँ तो अक्सर करता रहा हूँ।

जगमोहन (विचार मग्न) मैंने भी प्रतिज्ञाएँ की और तोडी है।

विजय · सुनो भी ! जब दूसरी लडकी हुई तो हम लोगो ने कहा चलो पहली के साथ खेलने के लिए सहेली चाहिए। तीसरी हुई तो सोचा एक 'स्पेयर पार्ट' भी तो हो। जब चौथी का नम्बर आया तो क्या कह कर तसल्ली पाते ? कहा कि चलो शुरू-शुरू में ही इन सब झंझटो से निबट लें, आगे फुरसत रहेगी। अब, दोस्त, इसी अवस्था में आकर प्राणायाम करने का इरादा है।

जगमोहन और हर मर्तबे तुम इसी अस्पताल में आते रहे हो ?

विजय मेरी बीबी आती रही है और मुझे भी खास मौके पर मौजूद रहना पडता है। डाक्टरो का कहना है कि पति की निकटता के विश्वास से, होनेवाली माता की हिम्मत बढती है।

जगमोहन और. और होनेवाले पिता की हिम्मत ?

विजय तुम्हारी सिगरेट ठडी हो चली ।

जगमोहन · ओह । .. (जेब से टिन निकालता हुआ) तुम पियोगे ?

विजय नही, मैं तो पीता ही नही । लेकिन देखता हूँ तुम तो चेन स्मोकर हो । वह कालिज के दिनो वाली पाइप कहाँ गई ?

जगमोहन वह पाइप तो 'डमी' थी, रोब के लिए । अन्दर उस में कुछ नही होता था ।

(सिगरेट जलाकर कश लेता है ।)

विजय लेकिन तुम जँचते खूब थे उसमें, न जाने कितनी तो तुम्हारी उसी धजा पर मरती थी ।

जगमोहन (बात का रुख पलटते हुए) विजय, लडकियो की पैदायश के वक्त अस्पताल आते थे तो इंतजारी की घडी में भी तुमने सिगरेट नही फूकी ?

विजय . तबीयत तो करती थी कि सिगरेट क्या घर फूक डालू, यह अस्पताल फूक डालू....

जगमोहन (गहरी दिलचस्पी के साथ) सच ?

विजय क्या पूछते हो ! अरे, इसी बरामदे में चहलकदमी करते-करते मैंने रात के तीन-तीन पहर बिता दिये है .. बारह का घटा बजा । सुनसान ।. कोई खबर नही ! ड्यूटी-रूम में लाइट, मेटर्निटी-रूम में लाइट, पास के जनरल वार्ड से दो चार नये बच्चो के रोने की आवाज़ । एक का घटा बजा, वही बात । दो का घटा बजा, वही काला रेगिस्तान, जिसका कोई अन्त नही । याद है न बच्चन की वह पक्ति "रात्रि का अन्तिम प्रहर था झिलमिलाते थे सितारे"......

जगमोहन (पूरा करता हुआ) "वक्ष पर युग बाहु धारे म खडा सागर किनारे"।

विजय अरे कहाँ सागर का किनारा और कहाँ झिलमिलाते सितारे। .सितारे भी तो मजाक में आँख मारते-से दीख पडते हैं, मानो कहते हो, तो, बच्चू खूब फँसे।

जगमोहन (कुछ रस लेता हुआ) कभी-कभी तो सोचते होगे कि किस झोक में यह गलती कर डाली।

विजय गलती? लगता था कि अहमक बन गये सरासर अहमक।

जगमोहन बिल्कुल अपराधी की-सी भावना—

विजय बिल्कुल। मानो गुस्से में आकर किसी दोस्त के तमाचा मार बैठे हो और बाद में फुरसत से मलाल करने बैठे हो। क्या पूछते हो यार, बडी नाजुक हालत होती है।

जगमोहन और कोई तसल्ली देनेवाला भी नही।

विजय तसल्ली? .अरे, यह नर्स जो अभी इतना चहक-चहक कर बातें कर रही थी, उस मौके पर मुझे ऐसे देखती है मानो रास्ते का ठीकरा हूँ, ठीकरा। डाक्टर्नी आती है तो एक नजर डाल कर मुह फेर लेती है, जैसे नौकरी के उम्मीदवार को मिल मालिक देखता है। यहाँ तक कि अस्पताल की नौकरानी की आँखो को भी दो टूक नही सुहाते।

जगमोहन यानी मर्द क्या हुआ फैसले का मुतज़िर मुद्दालह हो गया।

विजय बिल्कुल। तुमने मेरे मुह की बात छीन ली जगमोहन।

लोग कहते हैं, इस मौके पर माँ को बडी तकलीफ़ होती है, दूसरा जन्म होता है। मैं कहता हूँ बाप पर जो गुजरती है उसका भी किसी ने ख्याल किया है? ... इधर-से-उधर नर्सें जा रही है, वह औज़ार गये, यह डाक्टर की पुकार हुई, कोई इधर आया कोई उधर गया, लेकिन आप है कि खडे हैं बुत की तरह, देख रहे हैं बेकार।

जगमोहन : देख रहे है टुकुर-टुकुर और जला रहे हैं सिगरेट।

विजय · हाँ जी। और कभी-कभी उसी पहचानी आवाज में कराहे भी सुन पडती हैं। लेकिन हम हैं कि कुछ कर भी नही पाते। अरे, बीवी अगर बीमार हो तो दवा दे दें, नाराज हो तो खुशामद कर ले, उदास हो तो मनबहलाव कर लें। मगर इस हालत में आप कर ही क्या सकते हैं? करीब तक फटकने की इजाजत नही (जगमोहन को देखता हुआ, रुककर) क्यो किस सोच में पड गये?

जगमोहन कुछ नही। (चिन्तित स्वर में) पर नर्स अभी तक नही आई।

विजय यार, मामला क्या है? किसी झमेले में पड गये हो क्या?

जगमोहन जो भी समझो। (टालता हुआ) बडी देर कर दी इस नर्स ने।

विजय · जगमोहन, बच्चू हमी से उडते हो। तुमसे ऐसी गलती कैसे हो गई?

जगमोहन कौन-सी गलती?

विजय तुम तो हमेशा कोयल पछी की तरह रहे थे। . घोसले और अडो से कोई वास्ता नही।

जगमोहन · अरे नही, भई, अब तो घर का पछी हूँ। परकैंच परिन्दा!

(नर्स का प्रवेश। जल्दी -जल्दी दूसरी तरफ को जाती है)

जगमोहन नर्स, नर्स, कोई खबर ?

नर्स खास खबर है। लेकिन पहले डाक्टर को बुलाना है।

(बाईं तरफ दौडते हुए प्रस्थान)

जगमोहन खास खबर ! न जाने क्या मतलब है उसका ?

विजय परेशान होने की बात नही। मुझसे पूछो, बार-बार बार .

जगमोहन · मै तो यार परेशान हूँ। मुह सूख रहा है, दिल की धडकन बढ रही है।

(सिगरेट जलाता है।)

विजय · सिगरेट क्यो जलाते हो, और मुह सूखेगा।

जगमोहन सिगरेट के बिना तो सांस लेना महाल हो रहा है।

विजय . अब समझा।

जगमोहन . क्या ?

विजय : क्यो तुम्हारी हजामत इतनी बढी हुई है। मै भी तो कहूँ कि आखिर माजरा क्या है ?

जगमोहन समझ लो दो रोज़ से चाय और सिगरेट पर जी रहा हूँ। हलक के नीचे रोटी उतारने को तबीयत ही नही करती।

विजय . चलो कोई बात नही है। ऐसा ही सेवा-भाव बीबी की कृपा-दृष्टि को कायम रखता है।

जगमोहन . बीबी की कृपा-दृष्टि !

(म्लान हँसी)

विजय · दुनिया जानती है कि दाम्पत्य-जीवन की जो इमारत वर-वधू के रसीले प्यार की बुनियाद पर खड़ी होती

है, समय बीतने पर उसे एक सहारे की जरूरत पड़ती है, पति-पत्नी की एक दूसरे के लिए चिन्ता और परेशानी का सहारा । प्यार का परिधान ही तो आश्वासन का आलिंगन बन जाता है, जगमोहन !

जगमोहन जो चिन्ता मुझे सता रही है वह दूसरी ही है ।

विजय दूसरी चिन्ता ? गैर मुमकिन ।

जगमोहन सुनो विजय, जब तुम्हारी श्रीमती को पहली बार अपने माता होने का ज्ञान हुआ तो उसने क्या कहा तुम से ?

विजय अजब सवाल है तुम्हारा । स्त्री इस समाचार को जबान से नहीं, संकेत के द्वारा बताती है, वही संकेत जो उषा की लाजभरी लालिमा में बिखरता है ।

जगमोहन तुम तो विजय, शायरी करते हो । (गहरी सांस) मेरी पत्नी मुझसे बोली—यह सारा कसूर तुम्हारा है ।

विजय सारा कसूर ?

जगमोहन जी !

विजय यह तो, भई ज्यादती थी उनकी ।

जगमोहन ज्यादती ? (कुछ रुककर) बहुत दिनों बाद तुम से मुलाकात हुई है विजय, लेकिन मेरे पुराने और गहरे दोस्त रह चुके हो । इसलिए क्या छिपाऊँ तुमसे । मेरे अनुभव में तो विवाहित जीवन दो हिस्सेदारो का एक बैंक है ।

विजय बैंक ?

जगमोहन हाँ, वह बैंक जिसमें पति गुमसुम हिस्सेदार (sleeping partner) होता है, और पत्नी हिस्सेदार भी और मैनेजिंग डायरेक्टर भी ।

विजय (हँसते हुए) खूब ! मगर स्लीपिंग पार्टनर भी तो कभी-कभी अपने अधिकारों पर अड़ जाता है ।

जगमोहन कौन सिर दर्द मोल ले। एक दिन ही की तो बात नहीं है।

विजय कोई चिन्ता नहीं है । माँ बनी नहीं कि पत्थर का कलेजा भी पिघल जायेगा। डर यही है कि तब तुम्हारा कतई ख्याल करना न छोड़ दे ।

जगमोहन उसी उम्मीद का तो आसरा है।

विजय ऐसी भी क्या मायूसी ! आखिर कहाँ की शादी तुमने ?

जगमोहन वह थी न अनिल कुमारी ?

विजय अनिल कुमारी ? वही तो नहीं जो एक ही क्लास में तीन बरस तक डटी रही थी !

जगमोहन जी हाँ।

विजय (उसी धुन में) वही जिन्हे —

(रुक जाता है।)

जगमोहन हाँ हाँ, पूरी करो बात। वही जिन्हें हम लोग अगिन-बोट कहते थे। .. विजय, उन्ही से मेरी शादी हुई है। तुम चुप हो। ... सोचते होगे कि जगमोहन वहाँ कैसे फँस गया। उसका भी अलग किस्सा है।

विजय (कुछ पसोपेश में) नहीं-नहीं . फँसना क्यों कहते हो। भई . हार में जो बिंधा, वही मोती।

जगमोहन हार नहीं, विजय गले की रस्सी ।

विजय तुम भी जगमोहन . (बात मोड़ते हुए) लेकिन मुझे तो याद नहीं पड़ता कि कालिज में तुम्हारे और उनके बारे में चर्चा हुई हो ।

जगमोहन बात तबकी है जब तुम यूनिवर्सिटी छोड़ आये थे। एक दिन मैटिनी शो देखने देर से पहुँचा, पिक्चर

शुरू हो चुकी थी। बाहर था उजाला, अन्दर अँधेरा। दिखाई न दिया कि किसके बराबर वाली सीट में जा बैठा हूँ, वह गोरी है कि काली, दुबली है या मोटी, टेढे सुभाव की है या गऊ! लेकिन . लेकिन . विलायती सेण्ट की भीनी सुगन्ध आ रही थी, सामने पर्दे पर कोई रोमाण्टिक सीन चल रहा था। और . विजय, मुझे तो तुम जानते ही थे. ?

विजय सोचा थोडी तफरीह ही सही. ....

जगमोहन सच मानो मैंने सिर्फ, हाथ ही दबाया था। लेकिन, वे हाथ जो बँधे तो बस पुरोहित के सामने पाणिग्रहण के बाद ही खुल पाये!

विजय तो क्या बुरा हुआ। दुनिया में ऐसे ही हाथो हाथ बिका जाता है।

जगमोहन . (गहरी सास) यहाँ तो अपने ऊपर ऊँची कीमत लगा रखी थी, दोस्त। क्या मालूम था यो—

विजय आदमी का मोल ही क्या? अब मुझे ही लो—

(नर्स का तेजी से प्रवेश)

नर्स विजय बाबू। बाहर आपकी मेम साहब आपकी राह देख रही हैं, जल्दी बुलाती हैं।

जगमोहन (पुन. चिन्तित स्वर) नर्स!

विजय जल्दी बुलाती है?

जगमोहन नर्स, डाक्टर्नी कहाँ है?

नर्स लेबर रूम में। दूसरे रास्ते से पहुँच गई। थोडा इतजार कीजिए, अभी आई।

(तेजी से दाहिनी ओर प्रस्थान।)

विजय . अच्छा, तो जगमोहन, उन्हें मोटर में बैठा कर अभी आया।

जगमोहन हां, दोस्त ! तुम्हारी वजह से कुछ तबीयत बहल गई, कुछ आपबीती कह ली। अब फिर अकेले में तो बस, सिगरेट . ...

(सुलगाता है।)

विजय यह घडी ऐसी ही होती है, एक-एक मिनट मानो पहाड़ हो लेकिन थोड़ी ही देर में ..जब खबर सुनोगे तो दिल हल्का हो जायेगा ..शायद बल्लियो उछलने लगे। (मुस्कराते हुए हाथ हिलाता हुआ) चीरियो !

(प्रस्थान)

जगमोहन (सिगरेट हाथ में, चेहरे पर अविश्वासपूर्ण मुस्कान) चीरियो ! (कुछ रुक कर) हल्का दिल !...वे जमाने ही लद गये जब इधर-उधर फेंकने की खातिर दिल को हल्का कर रखा था। (रेलिंग का सहारा लेकर खड़ा हो जाता है।) यह नर्स साफ जवाब क्यो नही देती ? कोई कम्प्लिकेशन तो नही हो गया ? . लेकिन कुछ तो कहती। . ये अस्पताल वाले भी अपने को न जाने क्या समझते है ?. लेकिन विजय पर भी तो यही बीती। क्या आदमी है, चार लड़कियां और माथे पर शिकन नही। .मैं तो एक की चिल-पों भी कैसे बर्दाश्त कर पाऊँगा ? उफ !..कैसी मुसीबत है ! ..(सिगरेट खत्म हो जाती है। जेब में हाथ डालकर सिगरेट का पैकिट निकालता है। साथ में तार का फार्म निकला चला आता है) तार का फार्म ! ... इनके पापा को फौरन खबर भेजनी होगी। (रेलिंग पर तार का फार्म रखकर फाउंटेनपेन से लिखते हुए) क्या बुराई है...अभी से लिख कर तैयार रख लूँ...एक

ही शब्द तो जोड़ना होगा, "सन्"...या.."डॉटर" (कुछ रुकता है) .. बेटा ...या बेटी । खूब . (लिखते हुए) श्री कान्तिलाल, जगतरोड, कानपुर . . (जिस तरफ पीठ किये खड़ा है उधर से नर्स का प्रवेश। जगमोहन को लिखते हुए देखकर रुक जाती है, और सुनती है।) ! ब ..धा ई ...नहीं नहीं .. नाती (रुकता है) या नातिन (कुछ हँसकर) मु . बा . र . क। दो नो .. ठीक है। जग मोहन (फिर अल्पहास) नाती या नातिन !! .

नर्स (मुस्कराती हुई आगे बढ़कर) लाइए यह मुझे दीजिए .. मि० जगमोहन !

जगमोहन (चौंककर) एँ ?

नर्स आप .. अन्दर जाइए। . आपकी बुलाहट है। . तार मैं पूरा कर लूँगी ।

जगमोहन · तार !.. तुम्हारा मतलब—

नर्स · (तार हाथ में लेती हुई) जी हाँ, जी हाँ! मुझे मालूम है तार में क्या लिखा जायेगा । आप अन्दर जाइए.. आपको भी मालूम हो जायेगा। (धक्का-सा देकर जगमोहन को अंदर भेज देती है । फिर तार पढ़ते हुए) श्री .. कातिलाल. .

[तार का शेष अंश बिना बोले हुए, पढ़ती है और एक स्थल पर कलम से संशोधन करती है इतने में बदहवासी की हालत में विजय का प्रवेश।]

विजय जगमोहन ! जग . (नर्स को देखकर रुक जाता है। फिर झुंझलाहट के स्वर में) नर्स !

नर्स (ईषत् मुस्कान) कहिए मि० विजय नारायण !

विजय मैं पूछता हूँ, नर्स, यह तुमने कैसा मजाक किया ?

नर्स मजाक ? क्यो, मिसेज नारायण नही मिली क्या ?

विजय मिली तो ! मोटर पर रवाना करके आ रहा हूँ। लेकिन लेकिन तुमने भला मुझे बता क्यो न दिया ?

नर्स मैंने सोचा उन्ही के मुह से सुनने में यह बात मीठी लगेगी।

विजय मीठी। (तनिक हँसी) खूब नर्स। और मैं जगमोहन से शेखी बघार रहा था कि (रुककर चारो तरफ देखते हुए) लेकिन जगमोहन कहाँ है ?

नर्स अन्दर गये हैं।

विजय क्यो ? सब ठीक है न ?

नर्स यह लीजिए। यही तार जा रहा है उनके ससुर के नाम।

(विजय तार हाथ में लेकर पढता है।)

विजय श्री कान्ति लाल जगत रोड कानपुर नाती (रुकता है) नातिन (दुबारा) नाती-नातिन मुबारक। (कुछ अचरज-से) नर्स। क्या मतलब ?

नर्स आगे पढिए।

विजय तीनो ठीक है। तीनों। नर्स। तीनो ?

नर्स जी तीनो यह देखिए जगमोहन जी वापस आ गये।

(जगमोहन का प्रवेश।)

विजय (मतलब समझते हुए)अरे, वाह, भई, जगमोहन! वाह, मेरे शेर ! (करीब जाकर जोर से हाथ मिलाता हुआ।) पहली बार ही यह जौहर ! इस

रफ्तार से तो थोडे ही दिनो मे तुम मुझे भी मात दे दोगे । खिलाओ, मिठाई, इसी बात पर !

नर्स इनके चेहरे पर तो मुर्दनी छाई है । जबान खुलती ही नही ।

विजय क्या बोली भाभी साहिबा !

नर्स कमाल की दिलेर है मिसेज मोहन । जब मैने कहा दो है तो बोली. . .

जगमोहन (बात पूरी करता हुआ) कि इनके सब काम बेढगे होते है ।

नर्स तो आपसे भी वही बात कही ?

विजय एक लडका और एक लडकी । तराजू के दो बराबर पल्ले । तुम तो यार, खुशनसीब हो । मै तो इसी फेर मे हूँ कि यह पाँचवी भी कही लडकी ही हुई तो .

जगमोहन पाँचवी ? विजय, तुम्हारा मतलब—

विजय (मजबूरी के स्वर में) हाँ, भई !

जगमोहन : खूब ! (जोर से हँसते हुए विजय से हाथ मिलाता है ।) खूब ! !

(तीनो ठहाका मार कर हँसते है ।)

(पर्दा गिरता है ।)

खिड़की की राह

पात्र

दिलीप

चन्दू

प्रवीण

उर्मिला
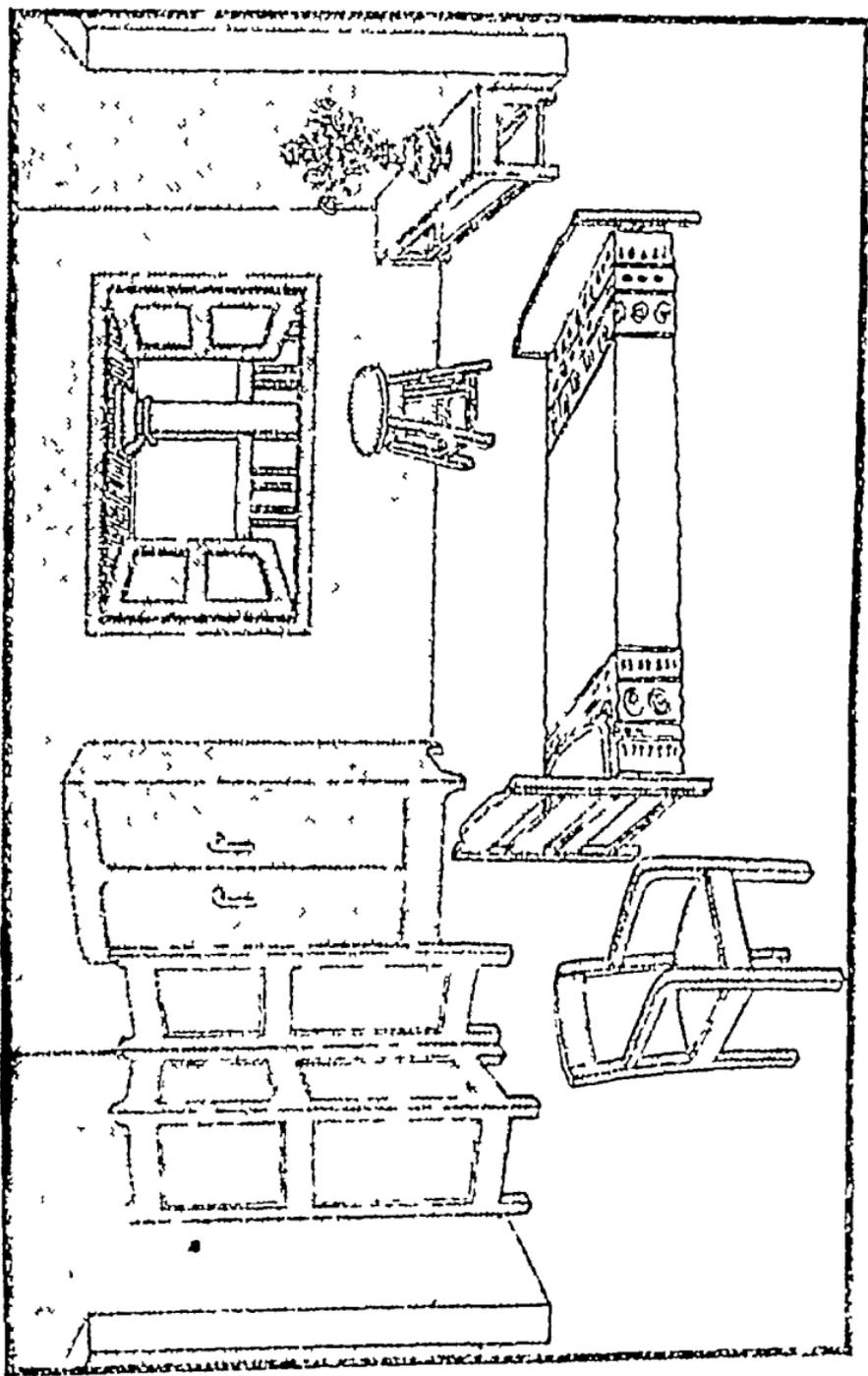
खिडकी की राह—पवीण के सोने का कमरा

[कमरे की दीवारें आसमानी रग की है और उसमें पर्दे, पलग-पोश, मेजपोश, कुर्सियो की गद्दियाँ भी लगभग उसी रग से मेल खाती है। सामने वाली दीवार में दाहिनी ओर एक चौडी और नीची खिडकी है, जिसके नीचे एक छोटा स्टूल है ! बाये कोने में एक लकडी के फ्रेम वाला पर्दा इस तरह रखा है कि उसकी आड में कपडे वगैरह बदलने का प्रबन्ध रहे। पर्दे और खिडकी के बीच में एक फैशनेबल पलग है, जिस पर एक सुन्दर पलगपोश बिछा है ! एक वार्ड्रोब के ढंग की आलमारी भी है और इधर-उधर कुछ कुर्सियां और छोटी मेजें है, फूलदान भी है। बायी तरफ बाथ रूम में जाने का रास्ता है और दाहिनी तरफ बाहर के कमरे में जाने का। पर्दा उठने पर कमरे में बहुत हल्का प्रकाश जान पडता है क्योंकि बिजली बन्द है और खिडकी में से ही बरामदे के बल्ब की रोशनी आ रही है। बल्ब और बरामदे के खम्भे का अंश खिडकी में दीख पडता है, जिससे मालूम होता है कि खिडकी के पीछे बरामदा है। कमरे में कोई नहीं

हैं। बाथरूम की ओर कुत्ते के जोर-जोर से भूकने की फिर कुछ टकराने की आवाज आती है। कुछ देर बाद बदहवासी की हालत में दिलीप का प्रवेश। चुस्त पाजामा, बन्द गले का कोट, जिसके बटन ऊपर से खुले हुए हैं। हाथ में वायलिन का केस]

दिलीप मैं कहता हूँ जनाब कि अगर आपको एक आर्टिस्ट को बुलाना था तो बाहर कुत्ता क्यों रखा और वह भी इतना खूखार ! (चारों तरफ देखकर) अरे यहाँ तो कुछ भी नहीं . यह कैसी दावत है ? प्रिंसिपल साहब ने कहाँ फाँस दिया ? (पलंग पर बैठता हुआ) जब कुत्ता ऐसा है तो मालिक कैसे होंगे !

[दाहिनी ओर से चन्दू का प्रवेश। पोशाक बेरा की, यानी पाजामा, अचकन, कमरबन्ध और पगड़ी कंधों पर झाडन। आते ही स्विच दबाते समय दिलीप की ओर पीठ करके खड़ा होता है तभी दिलीप खखारता है और चन्दू चौंक कर घूमता है।]

चन्दू कौन ?

(घूमकर देखता है।)

दिलीप (पलंग पर से उठता हुआ) मैं ही हूँ !—मैं !

चन्दू लेकिन लेकिन आपको मैंने पहले इस घर में नहीं देखा। आप .

(दिलीप बात काट देता है और बराबर ऐसा करता है।)

दिलीप तुम इस घर के नौकर हो न ?

चन्दू जी, बेरा हूँ ! लेकिन आप . . . . .

दिलीप आज यहाँ छोटी-सी दावत है न ?

चन्दू जी दावत है तो ! लेकिन आपको . . . .

दिलीप तो कहाँ है वह दावत ?

चन्दू गोल कमरे मे । यह तो पलग-कमरा है।. लेकिन ..
लेकिन आप है कौन, आपका नाम, आपका.......

दिलीप वाह भई ! तुम्हारे मालिक का खूखार कुत्ता
भी नाम पूछता है और तुम भी ! उससे
बचकर तो पलग-कमरे मे घुसा पर तुमसे बचना
मुश्किल है ।

चन्दू लेकिन यह तो बताइए कि आप कौन. ...

दिलीप उफ ! तुमने तो नाक मे दम कर दिया ! .देखते
हो यह वायलिन ?

चन्दू बाजा ?

दिलीप हाँ बाजा ! . सुनो दोस्त मै बाजा बजाता हूँ,
तुम हाजिरी बजाते हो ! हम तुम दोनो आर्टिस्ट
है । मिलाओ हाथ इसी बात पर ।

(चन्दू का हाथ पकड कर हिलाता है ।)

नेपथ्य से बेरा, बेरा !

चन्दू गजब हो गया ! अरे हाथ छोडिए ! साहब आवेंगे तो
कहेंगे, अपने यारो को बेडरूम मे बुलाता हूँ !

दिलीप तो मुझे गोल कमरे मे पहुँचाओ न !

नेपथ्य से बेयरा, बेयरा !

(किसी के आने की पद-चाप)

चन्दू आया हुजूर ! अच्छा चलिए इधर से !

दिलीप खिडकी मे से ? यह भी ठीक ! (खिडकी की तरफ
बढता हुआ) जानते हो दोस्त, समाज किसके काबू में
आता है ?

(खिडकी के उस पार कूद जाता है ।)

चन्दू (वायलिन केस पकडाते हुए) यह लीजिए अपना बाजा !

दिलीप (झांकता हुआ) समाज उसके आगे झुकता है जो खिडकी की राह कूदकर उसे दवा सके। जिसने दरवाजा पकडा, वह तो उसका गुलाम है, गुलाम ! समझे?
(गायब हो जाता है।)

चन्दू अजब आदमी है !
[खिडकी बन्द करता है। प्रवीण का प्रवेश। सूट पहने है, शक्ल सूरत में भव्य, बातचीत करते समय दोनो हाथ मलने की आदत है।]

प्रवीण कौन अजीब आदमी है जी बेयरा ? आओ उर्मिला, तुम्हारी मुलाकात इस घर के स्तम्भ से कराऊ !
(उर्मिला का प्रवेश। सुन्दर, इकहरा, प्रफुल्ल बदन)

— यह है मेरा बेयरा !

चन्दू सलाम हुजूर !

उर्मिला सलाम !

प्रवीण काम अच्छा करता है और उम्मीद है आगे भी करेगा !

उर्मिला ए बैचलरस बियरर ! (दोनो हँसते है) क्या नाम तुम्हारा ?

चन्दू चन्दू !

प्रवीण अच्छा, चन्दू ! गोल कमरे मे जाकर देखो, अगर कोई बाबू म्यूजिक कालिज से आये हो तो उनसे कहना कि मेहमानो के आते ही कुछ चीज़ शुरू कर दे।

चन्दू (प्रश्न सूचक मुद्रा) चीज शुरू कर दे ?

प्रवीण हाँ, गाना-बजाना शुरू कर दे !

चन्दू बजाना ! बाजा ! बाजा तो वह बाब

प्रवीण — हाँ, और देखो खाने की मेज को ठीक वैसे तैयार कर दो जैसे मैंने बताया है । समझे ?

चन्दू — हुजूर !

(प्रस्थान)

उर्मिला — देखती हूँ बडी तैयारियाँ है । मैंने तो समझा था मुझे ही डिनर पर बुलाया है !

प्रवीण — उर्मिला यह डिनर ही नही, 'इन्ट्रोडक्शन नाइट' भी है ।

उर्मिला — न बाबा ! कालेज की इन्ट्रोडक्शन नाइट मुझे अब भी याद है !

प्रवीण — वह नही ! तुम्हे इस शहर मे आये एक ही हफ्ता हुआ है ! सोचा तुम्हे आज अपने दोस्तो से ही मिला दू !

उर्मिला — मुझे पहले से बता दिया होता तो ..

प्रवीण — तो क्या ?

उर्मिला — साडी तो बदल आती !

प्रवीण — उसके लिए सब इन्तजाम है ! यह देखो उर्मिला !

[आलमारी खोलकर एक केस निकालता है, उसे खोलकर एक कीमती साड़ी दिखाता है ।]

उर्मिला — ओ ! हाऊ लवली ! !

प्रवीण — और यह पेटीकोट और ब्लाउज और ब्रेसिया !

उर्मिला — प्रवीण तुम बडे नटखट हो !

प्रवीण — तुम तो जानती ही हो कि मेरा कोई काम अधूरा नही होता । देखो यह नेकलेस इस साडी के साथ कैसी जायगी ?

(नेकलेस निकालता है ।)

उर्मिला — यह सब मेरे लिए ?

प्रवीण — यह भी तो

उर्मिला — पौडर बोक्स ! और हर एक चीज मेरे मनचाहे रग की !!

प्रवीण — रग ? तुमने बैठक के पर्दे और सोफा सेट पर गौर किया ?

उर्मिला — हाँ, सभी गुलाबी रग के हैं । और देखती हूँ कि इस बेडरूम में आसमानी की ही बहार है ! प्रवीण, मुझे न मालूम था तुम्हारे अन्दर कलाकार भी मौजूद है !

प्रवीण — जब मेरी प्रियतमा आर्टिस्ट हो तो मैं इतना भी न करूँ ? देखो, दीवारो पर मैंने इतनी सब जगह छोड दी है तुम्हारी पेंटिंग्ज के लिए ! सोच लो कहाँ कौन सी तस्वीर टँगेगी ।

उर्मिला — जान पडता है शीघ्र ही तुम्हारी भी पेंटिंग्ज यहाँ टँगेगी !

प्रवीण — मैं और पेंटिंग ! (हँसता है) लेकिन उर्मिला एक तरह से तुम्हारा कहना ठीक है ! मैं भी आर्टिस्ट हूँ दी आर्टिस्ट इन लाइफ (**खिडकी के सहारे खडा होता है और तैयार किये हुए भाषण के ढग से बोलता है**) सगतराश की तरह मैं नाप-जोखकर, चुन-चुनकर अपने जीवन का डिजाइन तैयार करता हूँ, मेरा हर एक दिन जौहरी की माला की लडियो की तरह है, साफ सुथरा, मैं माली की तरह अपने चारो ओर फूल-पौधो को तराश कर, सँवार कर, रखना पसन्द करता हूँ मैं

उर्मिला — उफ्फोह, आज तुम कैसी भी अनोखी बोल रहे हो ! सगतराश, जौहरी, माली !! (हँसती है) जान

पड़ता है यह मेरी भी इन्ट्रोडक्शन नाइट है और तुम्हारी भी।

प्रवीण (वही स्वर) शायद तुम ठीक कह रही हो, उर्मिला! अभी तक शायद मैं तुम्हारे लिए कुछ पहेली-सी बना रहा था। लेकिन..

उर्मिला हम दोनो बराबर एक दूसरे के लिए पहेली-सी बने रहे और रोज़ नयी पहेलियां सुलझाते रहे, इसी में तो आकर्षण है।

प्रवीण शादी के बाद भी, उर्मिला?

उर्मिला तभी तो हमारा विवाहित जीवन हरा-भरा और सरस रहेगा।

प्रवीण हूं! (रुक जाता है) लेकिन शादी के पहले एक दूसरे को समझ लेना भी ठीक ही है।

उर्मिला जिस दिन समुद्र के किनारे हम दोनो ने एक दूसर का हाथ पकड़ा, उसी दिन हम एक दूसरे को समझ गये थे न?

प्रवीण उर्मिला, जिस तरह मैं तुम्हारा अनन्य प्रेमी रहा हूं, वैसे ही मैं एक आदर्श पति बनना चाहता हूं!

उर्मिला कैसे तुम्हें बताऊँ कि मैं अपने को कितनी भाग्यवती समझती हूं?

प्रवीण बीसियों किताबों में पढ़ चुका हूं कि पति की स्वार्थपरता और नासमझी के कारण वैवाहिक जीवन असह्य हो जाता है। छोटी-छोटी बातों की विषमता सारे दाम्पत्य-जीवन को विषमय बना देती है। सो मैं वैसा अवसर ही न आने दूंगा उर्मिला!

उर्मिला यदि ऐसे अवसर आयेगे, तो भी हम लोगो को कोई शक्ति अलग नही कर सकती।

प्रवीण बचपन से ही मैंने यह सबक सीखा कि जो समाज के ढाचे मे अपने को ढाल सके सफलता उसी की है। समाज फूल है तो कुटुम्ब फल। पति और पत्नी के उत्तरदायित्व के लिए मैंने अपने को ट्रेन किया है!

उर्मिला (कुछ मुस्कराकर) सुनू तो कौन सी वह सुन्दरी थी जिससे तुम्हे ट्रेनिग मिली ?

(हँसती है।)

प्रवीण मजाक न करो उर्मिला। जब कभी मै जीवन के आदर्श की सतह पर से बाते करता हूँ। तब मजाक मुझे आँख की किरकिरी-सा लगता है।

उर्मिला सॉरी प्रवीण, वेरी सारी।

प्रवीण लेकिन इस बहाने मुझे एक महत्वपूर्ण बात कहने का मौका मिला। दाम्पत्य जीवन की सब से बडी जिम्मेवारी यही है कि पति अपने प्रति पत्नी का विश्वास कायम रख सके। मै तुम्हे कभी शिकायत का मौका न दूगा उर्मिला।

[बाहर से वायलिन पर अत्यन्त सुन्दर, बहार रागिनी की ध्वनि]

उर्मिला यह बाहर मे वायलिन की आवाज कैसे आ रही है ?

प्रवीण मैंने सोचा, पार्टी मे कुछ सगीत भी रहे। सो, म्यूजिक कालिज के प्रिंसिपल से एक आदमी को भेजने के लिए कह दिया था। वही होगा। (खिडकी खोलता है। स्पष्ट और सुमधुर बहार रागिनी का स्वर) जान पड़ता है सब लोग आ गये।

उर्मिला वडा सुन्दर वायलिन बजा रहा है !

प्रवीण : तुम्हे क्लासिकल सगीत पसन्द है न ? मैं तो उसका मिर-पैर कुछ जानता नही हूँ, लेकिन तुम्हारे लिए तरह-तरह के रिकार्ड मगा कर रख रहा हूँ फैयाज खाँ, हीरावाई वडोदकर, रविशकर वगैरह, वगैरह !

उर्मिला प्रवीण मुझे कभी-कभी लगता है

प्रवीण क्या ?

उर्मिला लगता है कि क्या मैं तुम्हारे योग्य भी हूँ !

प्रवीण योग्य . ...

[वायलिन वन्द हो जाता है और कुछ खटपट की आवाज आती है।]

— है ! यह वायलिन एक साथ वन्द कैसे हो गया ? और यह आवाज़ ! कुछ गडवड जान पडता है ! चलू देखू !

उर्मिला मैं भी चलू ?

प्रवीण ऐसे नही, इस कोने मे जो पर्दा है न, उसके पीछे जाकर यह नयी साडी और ज़ेवर पहन लो। तभी अपने दोस्तो मे तुम्हारा परिचय कराऊँगा।

(वैठक से भगदड की आवाज आती है।)

— देखू, क्या मामला है !

[प्रवीण का प्रस्थान। उर्मिला कुछ पसोपेश में कुछ सोचती-सी साडी, ब्लाउज़, जेवर उठाकर देखती है। फिर पर्दे के पीछे चली जाती है। थोडी देर वाद वरा-मदे में कुछ हलचल और फिर खिडकी में से दिलीप कुछ परेशानी में झाकता नजर पडता है। देखता है कि कमरे में कोई है तो नहीं। फिर कूदकर अन्दर आ जाता

है और खिड़की बन्द कर लेता है। फिर दाहिना दरवाजा बन्द कर सिटकिनी लगा देता है।]

दिलीप (दबे स्वर में) बस अब इधर बाथरूम की तरफ से रफू-चक्कर हो जाता हूँ।

[बाथरूम की ओर बढता है, ज्योही पर्दे के बराबर से निकलता है एक साडी उसके ऊपर आ पडती है।]

दिलीप ऐं साडी! (ब्लाउज आ पडता है) यह क्या, ब्लाउज? हे परमात्मा! अब खैर नही! देखू, इस पर्दे के पीछे कौन है

[पर्दा थोडा हटाकर झाकता है। उर्मिला चीखती है। पीछे हट जाता है।]

दिलीप आई बेग योर पार्डन! क्षमा कीजिए देवी जी!

[सकपका कर बाथरूम की तरफ जाता-जाता रुक जाता है। उर्मिला थोडी देर में गुस्से में बाहर आती है।]

उर्मिला आप आदमी है या हैवान? देखते नही है कि एक महिला कपडे बदल रही है और आप अन्दर घुसे चले आ रहे है?

दिलीप माफ कीजिएगा, मैंने समझा कि यह बेचलर का कमरा है।

उर्मिला आखिर आप है कौन?

दिलीप अगर मै पूछू कि आप कौन है तो गुस्ताखी तो नही होगी?

उर्मिला (अनमुनी-सी) जी?

दिलीप बात यह है कि मैंने सुन रखा था कि इस घर के मालिक कुआरे है! मुमकिन है मैंने गलत सुना हो!

उर्मिला (अवहेलना भरे स्वर में) जी ! (दरवाजे के करीब जाकर धक्का लगाती हुई) यह दरवाजा आपने बन्द किया है ?

दिलीप जी ! उसे खोलिए मत ! (फिर उसी स्वर में) तो आप लोगो का गंधर्व-विवाह......

उर्मिला (सरोष) जी नही ! न हमारा विवाह हुआ है, न गंधर्व विवाह ! आपसे मतलब ?

दिलीप ठीक !

(गहरी साँस लेता है ।)

उर्मिला इसके क्या मानी ?

दिलीप यही कि अब मुझे इतमीनान है !

उर्मिला आपका इतमीनान तो अभी ठिकाने किये देती हूँ ! (खिडकी की ओर जाकर) यह खिडकी भी आपने ही बन्द की है ?

(खोलने का प्रयत्न करती है ।)

दिलीप हे, हे, उसे न खोलिए !

उर्मिला खिडकी को भी न खोलू, दरवाजे को भी न खोलू, (रुककर) क्यो ?

दिलीप इसलिए कि जहाँ आपने इन्हे खोला, वहाँ मै बाथरूम की राह से रफू चक्कर हुआ ! और मेरे यहाँ से चले जाने से आपका मतलब पूरा नही होगा !

उर्मिला मेरा मतलब ?

दिलीप आपका तो मतलब यही है न कि मुझ मि०—क्या नाम उनका—मि०—

उर्मिला प्रवीण चन्द्र !

दिलीप जी, मुझे मि० प्रवीण चन्द्र के हवाले कर दे, यही न ?

उर्मिला जितनी देर मे आप बातो मे उलझे है, उतनी देर मे आप यहाँ से भाग सकते थे !

दिलीप आपकी शका ठीक है ! **(बैठता हुआ)** मगर असल बात यह है कि मैं यहाँ से जाना नही चाहता !

उर्मिला हूँ ! इसके बाद आप कहेंगे कि आप मुझ से प्रेम करते हैं ! . ...

दिलीप इतनी जल्दी नही मिस .

उर्मिला उर्मिला !

दिलीप जी ! मिस उर्मिला इतनी जल्दी नही ! मुझे थोडा वक्त तो दीजिए !

उर्मिला आप न सिर्फ बदतमीज है, बल्कि अपने आपको कुछ समझते भी है !

दिलीप यदि आपने भी मेरी तरह एक-एक करके चार मूर्खों के मुह पर तडातड चार चपत लगाये होते तो आप भी अपने आपको कुछ समझती !

उर्मिला चार मूर्ख कौन ?

दिलीप आपके मि० प्रवीण चन्द्र के चार दोस्त, जो उनकी बैठक मे विराजमान थे !

उर्मिला (आश्चर्य से) आपने उनको चपत लगाये ? आप है कौन मि०—

दिलीप मिस्टर दिलीप कुमार ! सुनिए मिस उर्मिला **(रुककर लाचारी के स्वर में)** लेकिन क्या फायदा ? कही आपके भी कान उन्ही लोगो की तरह सगीत के लिए बहरे हुए वही

उर्मिला सगीत ! तो क्या आप ही थोडी देर हुए वायलिन पर बहार बजा रहे थे ?

दिलीप (आवेशपूर्ण उत्साह से उर्मिला का हाथ पकड़कर मानो उससे पहली जान पहचान हो) वायलिन पर वहार ! सच ? तो क्या सच आप राग-रागिनियाँ समझती हैं ? उफ्फोह ! आपने अब तक बताया क्यो नही ?

उर्मिला (हाथ छुडाते हुए) अगर बता देती तो आप क्या करते ?

दिलीप क्या करता ? कह नही सकता ! शायद अपनी अधूरी रागिनी को पूरी करता ! सच कहता हूँ मिस उर्मिला, उस रागिनी को तोडते हुए मेरा दिल टुकडे-टुकडे हो रहा था ! लेकिन मजबूरी ! मैं तो वहार की मौजो मे वहा जा रहा था, समाँ वधने वाला था, पर वे चार अहमक वाते किये जा रहे थे, लगातार वे ही छिछली ओछी वाते, वही वेहूदेपन की हँसी ! और मुझसे कला की यह वेकदरी देखी न गई ! वायलिन एक तरफ रखकर उन लोगो के पास गया और विना कुछ पूछे और कहे, मैंने चार तमाचे चारो के मोटे-मोटे गालो पर रसीद किये ! कहिए ठीक किया न ?

उर्मिला (हँसी दवाते हुए) ताज्जुव है कि उन लोगो ने आपको घेर कर वही आपकी खवर नहीं ली !

दिलीप जव तक कि वे सम्हले, मैं चम्पत हो चुका था ! वे मेरे पीछे वाहर की ओर भागे और मैं उन्हे चकमा देकर चला आया इधर, इस इरादे से कि पिछवाडे से रफूचक्कर हो जाऊँगा ! लेकिन आपने तो मेरा प्रोग्राम ही ढेर कर दिया !

[पलग पर रखी हुई एक पुस्तक उठा लेता है और उसके पन्ने उलटने लगता है । क्षणिक मौन, जिसमें

उर्मिला अनायास दिलीप की ओर पल भर की ईषत् मुस्कानपूर्ण दृष्टिपात करती है। लेकिन तुरन्त ही सम्हल कर, जैसे कुछ याद आया हो—]

उर्मिला अच्छा, तो अब आप जा सकते है, क्योकि मुझे लगता है कि वे इधर ही आ रहे है और तब मुझे दरवाजा खोलना ही होगा।

दिलीप वे ?

उर्मिला मि० प्रवीण चन्द्र ।

दिलीप मि० प्रवीण चन्द्र ! ओह ! मिस उर्मिला, जिस व्यक्ति के दोस्त ऐसे वहशी है कि उनके सामने एक मधुर और कलापूर्ण रागिनी बजे और वे सुनना तो अलग, चुप भी न रहे, मेढको की भाँति टर्र टर्र करते रहे. ऐसे व्यक्ति के साथ आपको अकेला छोड दू ? नामुमकिन ! ऐसे व्यक्ति की तो छाया भर आपके कलाप्रिय हृदय की पखुडियो को कुम्हला देगी, टुकडे-टुकडे कर देगी !

उर्मिला मि० दिलीप कुमार, शायद आप नही जानते कि मि० प्रवीण चन्द्र से शीघ्र ही मेरी शादी होने वाली है।

दिलीप शादी ! आपकी, (रुकता है, फिर उर्मिला की ओर देखता है। मानो उस दृष्टि में उसे किसी नूतन रहस्य का आभास मिला हो, ऐसी मुस्कराहट के साथ) हाँ, यदि आपकी उनके साथ शीघ्र ही शादी होने वाली है तब तो मेरा और आपका अकेले बन्द कमरे मे उनके द्वारा पाया जाना शायद ठीक न होगा ! अच्छा तो मै चलता हू—

उर्मिला (सहसा मानो आग्रह के साथ) आप आप सच ही जा रहे है ?

दिलीप जी ! नमस्ते !

उर्मिला (कुछ रुक कर) नमस्ते !

[दिलीप का बाथरूम की ओर से प्रस्थान । उर्मिला उसको जाते हुए देखती है और जब उसकी पीठ मुड जाती है तब मानो उसको रोकने के लिए इशारा-सा करती है, मगर हाथ उठा ही रह जाता है ! कुछ देर तक ध्यान मग्न ! फिर उठती है और खिडकी खोलती है ! इसी समय बाई ओर से दिलीप का पुन प्रवेश]

दिलीप मिस उर्मिला !

उर्मिला (सिर घुमा कर) आप फिर आ गये ?

दिलीप देखिए, एक तो इसी तरफ प्रवीण बाबू का खूखार कुत्ता घूम रहा है ! दूसरे, जब मेरी जान से भी प्यारी वस्तु यहाँ रह गई तो जाना फिजूल था !

उर्मिला (सस्मित) सुनू तो कौन है आपकी सब से प्यारी वस्तु ? .

दिलीप (बनावटी हिचकिचाहट से) मेरा मतलब.... मेरा मतलब तो मेरा मतलब तो महज़...महज़ अपने वायलिन से था !

उर्मिला (निराश स्वर) ओ !

दिलीप भला मिस उर्मिला, एक म्यूजिशियन अपने साज़ को बेकदरो के घर में कैसे छोडकर जा सकता है ?

(बाहर से कोई दरवाजे पर दस्तक देता है ।)

उर्मिला (चिन्तित स्वर) आपका वायलिन आपको भी ले डूबेगा और मुझे भी ! सुनिए, प्रवीण बाबू आ गये !

दिलीप आप दरवाज़ा खोल दीजिए, मैं जा रहा हूँ ! .. (जाते-जाते रुक जाता है) लेकिन एक बात है !

उर्मिला जल्दी कीजिए ! !

दिलीप थोडी देर के लिए इस पर्दे के पीछे खडे होकर जरा प्रवीण बाबू की आवाज तो सुन लूं। फिर उधर ही से बाथरूम के रास्ते से बाहर हो जाऊँगा ? आपको कोई एतराज तो न होगा !

उर्मिला आप कायर भी हैं ! !

(फिर दस्तक "उर्मिला, उर्मिला !")

दिलीप (हँसता हुआ) यह तो बाद मे पता चलेगा कि कौन कायर है (पलग वाली पुस्तक हाथ में लेकर उसी पर्दे के पीछे चला जाता है, जिसके पीछे उर्मिला ने कपडे बदले थे।)

उर्मिला खूब !

(प्रवीण का प्रवेश।)

प्रवीण उर्मिला, मुझे क्षमा करो ! मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ कि इतनी देर तक तुम्हे अकेला छोडकर मकान के बाहर चला गया ! क्या कहूँ अजब गडबडझाले मे पड गया !

उर्मिला मैंने तो समझा कि कालिज की ही तरह यहाँ भी 'इन्ट्रोडक्शन नाइट' होने वाली है !

प्रवीण अरे, भई, एक पागल की हरकतों ने मेरा सारा प्रोग्राम चौपट कर दिया !

उर्मिला पागल ?

(पर्दे की तरफ देखती है।)

प्रवीण हाँ, म्यूजिक कालेज के प्रिन्सिपल ने न जाने किस हैवान को वायलिन बजाने के लिए भेज दिया था ! मैंने तो अब तक उसकी शक्ल भी नहीं देखी !

उर्मिला वायलिन तो अच्छा वजा रहा था।

प्रवीण लेकिन उस जाहिल को क्या हक था कि मेरे चारो दोस्तो के मुह पर तमाचे लगाकर चलता बने ? उर्मिला, मेरे चारो दोस्त नाराज़ होकर चले गये। मै उस कम्बख्त के पीछे-पीछे भागा, लेकिन वह ऐसा गायव हुआ कि दूर तक नामोनिशान भी नही।

उर्मिला जब आपने उसकी शक्ल ही नही देखी तो ढूढ कैसे पाते ?

प्रवीण उर्मिला, मै उस वक्त बहुत परेशान था (ऊँचे स्वर में) वेरा वेरा

चन्दू (नेपथ्य से) आया हुजूर।

(वेरा का प्रवेश)

प्रवीण कुछ पता लगा ?

चन्दू नही हुजूर। वहुत तेज भागा मालूम देता है। लेकिन अपना बाजा छोड गया है, ले आऊँ ?

प्रवीण अबे अहमक, मै बाजे को क्या करूँगा, गवा। (गुस्से पर लगाम लगाता हुआ उर्मिला से) मुझे माफ करो, मै इस वक्त आपे में नही हूँ उर्मिला।

उर्मिला कुछ दवा ले लो एसप्रीन वगैरह।

प्रवीण दवा से ज्यादा मुझे मानसिक दवा की जरूरत है। (पलग पर कुछ खोजता है) वेरा, वह किताव कहाँ गई ?

चन्दू वही जो आप रोज़ सवेरे पढ़ते है ? यही रखी हुई थी हुजूर।

(पलग पर खोजता है।)

प्रवीण देखो उधर पर्दे के पीछे तो नहीं पडी हुई है ?

[चन्दू पर्दे की ओर वढता है। उर्मिला झट से उसे मना करती हुई बोलती है।]

उर्मिला — जल्दी कीजिए ।।

दिलीप — थोडी देर के लिए इस पर्दे के पीछे खडे होकर जरा प्रवीण बाबू की आवाज तो सुन लूं। फिर उधर ही से बाथरूम के रास्ते से बाहर हो जाऊँगा ? आपको कोई एतराज तो न होगा !

उर्मिला — आप कायर भी हैं !!

(फिर दस्तक "उर्मिला, उर्मिला !")

दिलीप — (हँसता हुआ) यह तो बाद मे पता चलेगा कि कौन कायर है (पलंग वाली पुस्तक हाथ में लेकर उसी पर्दे के पीछे चला जाता है, जिसके पीछे उर्मिला ने कपडे बदले थे ।)

उर्मिला — खूब !

(प्रवीण का प्रवेश।)

प्रवीण — उर्मिला, मुझे क्षमा करो ! मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ कि इतनी देर तक तुम्हें अकेला छोडकर मकान के बाहर चला गया ! क्या कहूँ अजब गडबडझाले मे पड गया !

उर्मिला — मैंने तो समझा कि कालिज की ही तरह यहाँ भी 'इन्ट्रोडक्शन नाइट' होने वाली है !

प्रवीण — अरे, भई, एक पागल की हरकतो ने मेरा सारा प्रोग्राम चौपट कर दिया !

उर्मिला — पागल ?

(पर्दे की तरफ देखती है ।)

प्रवीण . हाँ, म्यूजिक कालेज के प्रिन्सिपल ने न जाने किस हैवान को वायलिन बजाने के लिए भेज दिया था ! मैंने तो अब तक उसकी शक्ल भी नही देखी !

उर्मिला वायलिन तो अच्छा बजा रहा था !

प्रवीण लेकिन उस जाहिल को क्या हक था कि मेरे चारो दोस्तो के मुह पर तमाचे लगाकर चलता बने ? उर्मिला, मेरे चारो दोस्त नाराज होकर चले गये ! मै उस कम्बख्त के पीछे-पीछे भागा, लेकिन वह ऐसा गायब हुआ कि दूर तक नामोनिशान भी नही !

उर्मिला जब आपने उसकी शक्ल ही नही देखी तो ढूढ कैसे पाते ?

प्रवीण उर्मिला, मै उस वक्त बहुत परेशान था (ऊँचे स्वर में) बेरा बेरा

चन्दू (नेपथ्य से) आया हुजूर !

(बेरा का प्रवेश)

प्रवीण कुछ पता लगा ?

चन्दू नही हुजूर ! बहुत तेज भागा मालूम देता है ! लेकिन अपना बाजा छोड गया है, ले आऊँ ?

प्रवीण अबे अहमक, मै बाजे को क्या करूँगा, गधा ! (गुस्से पर लगाम लगाता हुआ उर्मिला से) मुझे माफ करो, मै इस वक्त आपे मे नही हूँ उर्मिला !

उर्मिला कुछ दवा ले लो एसप्रीन वगैरह !

प्रवीण दवा से ज्यादा मुझे मानसिक दवा की जरूरत है ! (पलग पर कुछ खोजता है) बेरा, वह किताब कहाँ गई ?

चन्दू वही जो आप रोज सवेरे पढते है ? यही रखी हुई थी हुजूर !

(पलग पर खोजता है ।)

प्रवीण देखो उधर पर्दे के पीछे तो नहीं पडी हुई है ?

[चन्दू पर्दे की ओर बढता है । उर्मिला झट से उसे मना करती हुई बोलती है ।]

उर्मिला नही, नही, किताब वहाँ नही है।

(चन्दू रुककर उसकी ओर देखता है।)

प्रवीण तो क्या तुमने वह किताब देखी है ?

उर्मिला हाँ हाँ वही न ? यही पडी हुई थी। ए ए .क्या नाम है उसका ?

[सहसा पर्दे के पीछे से दिलीप निकलता है, हाथ में पुस्तक लिये हुए। चेहरे पर मुस्कराहट]

दिलीप पुस्तक का नाम है, "सफल जीवन की कुजी" ! माफ कीजिएगा, जनाब, आपकी यह गीता मैंने आपके पलग पर से उठा ली थी वडी लाजवाब चीज़ है ! आप शायद उसके तीसरे अध्याय का ख्याल कर रहे है ? लीजिए आपके काम की चीज़ पढकर सुनाये देता हूँ। (पढता है) 'विवाहित जीवन मे पुरुप को अपने मिज़ाज पर कावू रखना वहुत जरूरी है क्योंकि परेशान मिज़ाज वाला पुरुप अपनी स्त्री को न तो सन्तुष्ट कर पाता है और न उस पर ठीक तौर पर कावू रख सकता है। जैसा हम पहले कह आये है, विवाहित जीवन भी एक कला है। पुरुप को सगतराश की तरह नाप-जोखकर, चुन-चुन कर अपने जीवन का डिज़ाइन तैयार करना है, उसका हर एक दिन जौहरी की माला की लडियो की तरह है, माली की तरह उसे अपने '

उर्मिला अरे, ठीक यही शब्द तो प्रवीण वावू ने मेरे सामने आज कहे थे !

चन्दू (जो अब तक सकपका कर सब कुछ देख सुन रहा था) अरे हुज़ूर, यह तो वही आदमी है !

प्रवीण कौन ?

दिलीप ठहरो, दोस्त, मैं खुद ही बताये देता हूँ। बात यह है प्रवीण बाबू कि मैं और आपका नौकर पुराने दोस्त हैं, फेलो आर्टिस्ट्स।

प्रवीण तो यह किताब तुम्हारे हाथ में कहाँ से आई ? तुम तुम आये कहाँ से ? उर्मिला, तुम्हे मालूम है ?

चन्दू अरे, हुजूर, यही तो वह बाजे वाला है।

प्रवीण बाजे वाला ?

दिलीप (चन्दू से) उफ्फोह, दोस्त। तुमने तो सारा मजा ही किरकिरा कर दिया। मैं तो वही बात बताने वाला था, लेकिन ज़रा तकल्लुफ के साथ, जरा कलापूर्ण ढंग से। (प्रवीण बाबू से) प्रवीण बाबू, मैं ही आज रात का हीरो हूँ। मैंने ही आपके दोस्तो के मोटे-मोटे गालो पर चार भरपूर तमाचे लगाये हैं और मुझे खुशी है कि इस तरह मैंने जहालत के खिलाफ खूबसूरती की ओर से बगावत का झंडा उठाया। क्यों, ठीक है न मिस उर्मिला ? आप तो पहले से ही मेरी बात को मानती हैं।

प्रवीण पहले से ? तो क्या तुम इस शख्स को पहले से जानती थी उर्मिला ?

उर्मिला (कुछ रुककर) हाँ, मैं इस शख्स को बहुत पहले से जानती हूँ, इतना पहले से कि यह भी याद नहीं पडता कि कब मैं इन्हे नही जानती थी।

दिलीप (विस्मित) हैं ?

उर्मिला (दिलीप की ओर विजय भाव से देखती हुई) जी।

[प्रवीण इस आघात से मानो आहत हो निश्शब्द

हो जाता है। थोडी देर के लिए सव लोग चुप हैं। फिर इस अस्वाभाविक शान्ति को तोडता हुआ चन्दू खखारता है।]

चन्दू हुजूर, इनका वाजा ले आऊ ?

प्रवीण (मानो जागा हो) ऐ, वाजा ! हाँ, इनका वायलिन ले आओ। (चन्दू जाता है) उर्मिला, क्या मैं एक सवाल तुमसे पूछ सकता हूँ ? (उर्मिला चुप) एक ऐसे विचित्र व्यक्ति से इतनी पुरानी जान-पहचान होने पर भी तुमने मुझसे इनका अव तक जिक्र भी करना मुनासिव नही समझा ! सो क्यो ?

उर्मिला अगर मै तुम्हे यह वता भी देती तो क्या इससे तुम्हारे निश्चय मे कोई अन्तर हो जाता ?

दिलीप सवाल यह नही है उर्मिला देवी ! सवाल यह है कि इस किताव —"सफल जीवन की कुजी" के पाँचवे अध्याय में लिखा है कि (पढते हुए) पुरुष और स्त्री को एक दूसरे से कोई भेद नही छिपाना चाहिए।" जव आप लोगो की एक दूसरे से शादी होने वाली है तो प्रवीण वावू आपसे यह कैसे उम्मीद कर सकते थे कि आप उनसे इस लम्बी इतनी लम्बी जान-पहचान का जिक्र ही न करेगी ? क्यो प्रवीण वावू मैंने आपकी वात को ठीक समझा न ?

उर्मिला (कृत्रिम झुझलाहट से) जी, आप इनकी वात भी ठीक तरह से समझते है और मेरी भी ! यानी आप खूव है !

दिलीप हैं, हैं, हैं ! उर्मिला देवी, आप तो जानती ही है कि स्त्री और पुरुप के जीवन को समझना मेरा एक तरह

से पेशा हो गया है। खास तौर से स्त्रियों को तो सिर से पैर तक समझे हुए हूँ।

प्रवीण सिर से पैर तक ?

दिलीप जी हाँ, दिल तक ही नही बल्कि .....

उर्मिला आखिर आपकी मंशा क्या है ?

दिलीप मेरी मंशा ? अगर आप पूछती है तो उत्तर देना मुश्किल है, लेकिन अगर प्रवीण बाबू पूछते है तो मेरी मंशा है, अपना वायलिन लेकर मै रवाना हो जाऊँ। अच्छा तो प्रवीण बाबू, बाहर से वायलिन लेकर मै चलता हूँ।

(चलने को उद्यत)

प्रवीण ठहरिए, अभी ठहरिए, और थोड़ा बैठ जाइए। (दिलीप बैठता है) हालाकि मुझे आपका नाम नही मालूम है तो भी. ..

दिलीप दिलीप कुमार !

प्रवीण मि० दिलीप कुमार, आपने मेरे दोस्तो को चपत लगा कर मुझे सख्त तकलीफ पहुँचाई, लेकिन एक तरह से आपने मेरा उपकार भी किया है।

दिलीप उपकार ? तो क्या आप अच्छे सगीत की इज्जत करने लगेगे ?

प्रवीण सगीत ? साहब, सगीत से मेरा कोई सम्बन्ध नही !

दिलीप अगर मेरी वजह से कला की इज्जत करना भी आप न सीखे तो भला मैने आपका क्या उपकार किया ?

प्रवीण मेरा इशारा उर्मिला और मेरे सम्बन्ध की ओर है। (उर्मिला से) उर्मिला, जीवन मे जानबूझ कर मै जोखिम लेना पसन्द नही करता और—(कुछ रुककर)

. और मि० दिलीप कुमार के कारण एक बात साफ हो गई कि मेरा और तुम्हारा विवाह एक बडे जोखिम वाला सौदा होगा।

उर्मिला मनुष्य का तो सारा जीवन ही जोखिमो से भरपूर है।

दिलीप लेकिन, उर्मिला देवी, इस पुस्तक यानी, "सफल जीवन की कुजी" के छठे अध्याय, पृष्ठ छयानवे पर लिखा है (पढता हुआ) 'याद रखो, विवाहित जीवन मे जोखिम लेना फूस के छप्पर पर आतिशबाजी से खिलवाड करने के मानिन्द है। जिंदगी का सबसे बडा उसूल '

प्रवीण मि० दिलीप कुमार, मुझे शक होता है कि शायद आप इस बेशकीमत किताब का मखौल उडा रहे है।

दिलीप इसे आप मखौल कहते है ? अरे, साहब मै तो इसे एक ही निगाह में पढ गया और तभी खोज-खोजकर इसके मोती आपके सामने रख रहा हूँ।

प्रवीण और मुझे एक और शक हो रहा है। मालूम होता है कि आप उर्मिला से प्रेम करते है और उर्मिला आप से।

दिलीप (पुस्तक के पन्ने जल्दी-जल्दी उलटता हुआ) प्रवीण बाबू, आपकी इस अनोखी बात का तो हवाला इस किताब मे कही नही मिलता, कही भी नही।

उर्मिला आप इस किताब को इसके पुजारी को लौटा दीजिए।

दिलीप (चौंकने का अभिनय) यानी आप भी इनके सदेह को सच मानती है

उर्मिला चुप रहिए। (खडी होकर प्रवीण से) प्रवीण, तुम समझते हो कि इस तरह मेरे मत्थे दोष मढकर और खुद नादान बने रहकर तुम दुनिया को धोखा दे सकोगे और विवाह के बाद मुझे हमेशा के लिए दबा कर रख

सकोगे, अपनी पवित्रता और नेकनीयती के ढकोसले के नीचे।

दिलीप ठहरिए, ज़रा

उर्मिला और शायद तुम्हारी इतनी हिम्मत इसलिए भी है कि मैं एक आधुनिक और ऐशपसन्द लडकी इस साधारण म्यूज़िक मास्टर से शादी करने का तो विचार भी मन में नही लाऊँगी? यही न तुम्हारी चाल है? लेकिन मैंने तय किया है, अभी-अभी तय किया है कि इसी शख्स के साथ शादी करूँगी, चाहे इनके पास कानी-कौंडी भी न हो।

दिलीप (शरारत भरी मुद्रा) और मेरी भी तो मर्जी पूछ ली जाय।

उर्मिला आप चुप रहिए।

प्रवीण (विनीत स्वर में मानो आवरण हट गया हो) उर्मिला उर्मिला मैं भी तो तुम से प्रेम करता हूँ।

उर्मिला (हेयभाव से।) हूँ! (बैठती है) पुराने ज़माने में कापालिक योगियों को अपनी योगसाधना पूरी करने के लिए आखिर में एक कुमारी की ज़रूरत पडती थी! ऐसे ही शायद तुम्हे मेरे प्रेम की ज़रूरत है! जीवन के किनारे से तुमने कुछ काच के टुकडे उठा लिये है, जिन्हे तुम आदर्श कहते हो और जिन्हे जोड-जोडकर तुम अपने लिए एक दर्पण सा बना रहे हो। क्या उस दर्पण की तुम्हारी छायामूर्ति को मै असलियत समझूँ? तुम प्रेम करते हो, मुझ से नही, उस छाया-मूर्ति से जो तुम्हारा कार्टून है! लेकिन मै तो आदमी से शादी करना चाहती हूँ, कार्टून से नही!

दिलीप उर्मिला देवी ! मैं आपको जान बूझ कर जोखिम का काम नही करने दूगा । मैं तो फक्कड हूँ ! जिन्दगी मेरे लिए एक वहाव है, बस !

उर्मिला मेरे लिए भी ! हम दोनो इस बहाव मे बहेगे, तिनको की तरह नही, नौकाओ की तरह जो लहरो पर आरूढ होती है !

प्रवीण मेरी बर्दाश्त की सीमा गुज़र चुकी है ! उर्मिला, मेरे मकान मे मेरी ही भेंट की हुई साडी और जेवर पहन कर, तुम मेरे ही सामने इस गलियो मे भटकने वाले व्यक्ति से साँठ-गाँठ लगा रही हो !

दिलीप यह क्या, प्रवीण बाबू ? आप और इस तरह जामे से वाहर ? आपने तो इस (**किताब उठाता हुआ**) किताब की लुटिया ही डुबा दी !

उर्मिला जेवर ? (**नेकलेस निकालती हुई**) यह लो अपना नेकलेस ! (**पलग पर फेंकती है**) और ..

दिलीप ठहरो उर्मिला ! (**मुस्कराता हुआ**) साडी बाद मे भिजवा देना !

प्रवीण मैं कहता हूँ—

(**चन्दू/का प्रवेश ।**)

चन्दू हुजूर . वे लोग वाजा लाने नही देते !

प्रवीण कौन लोग ?

चन्दू चारो मेहमान ! वापस आ गये है और कहते है ..

(**अटक जाता है ।**)

प्रवीण वात पूरी करो चन्दू !

चन्दू कहते है कि वाजे वाले वावू की अक्ल दुरुस्त किये विना हम यह वाजा नही छोडेंगे !

प्रवीण (मानो सिकन्दर पोरस से बात कर रहा हो) कहिए मि० दिलीप कुमार, क्या ख्याल है? न्याय की माँग मानकर आप को उन लोगो के हवाले करूँ या—

उर्मिला या?

दिलीप उर्मिला के नाम पर तरस खाकर छोड दू? यही न कहने वाले थे प्रवीण बाबू? तो साहब आपके तरस का यहाँ कोई भूखा नही है। आप जाइए और अपने अरमान पूरे कीजिए। बन्दा हाजिर है।

प्रवीण (तैश में) यह बात है। बाद मे न झीकना उर्मिला कि तुम्हारे प्रेमी को बचाया नही। लेकिन लातो के भूत बातो से नही मानते। मेरे ही घर मे और यह शेखी ..

[तेज़ी से जाता है, चन्दू भी पीछे-पीछे उन दोनो की तरफ देखते हुए जाता है।]

दिलीप आ गये न अपनी असलियत पर। कच्चा रोगन कब तक ठहरेगा?

उर्मिला (चिन्तित स्वर) लेकिन लेकिन अब क्या होगा?

दिलीप मामला बेढब है। वे पाँच और मै अकेला। हड्डी पसली का पता नही रहेगा।

उर्मिला (हाय री, नारी!) मुझे डर लग रहा है।

दिलीप सामने के दरवाज़े से वे लोग आ रहे है। बाथरूम की तरफ खूखार कुत्ता—

उर्मिला (भयातुर) वे लोग आ रहे है ओह!

[दिलीप के पास सट कर खडी हो जाती है और उसकी बाह पकड लेती है।]

दिलीप बस एक ही रास्ता है। (उर्मिला की बाह पकड कर खिडकी की तरफ ले जाता हुआ) चलो, उर्मिला!

उर्मिला कहाँ ?

दिलीप खिडकी की राह ! (खिडकी खोलकर उर्मिला को सहारा देकर खिडकी के पार उतारता हुआ) जल्दी चलो !

(स्वय खिडकी के पार उतरता है।)

उर्मिला (हँसते हुए) मैंने ठीक कहा था। ..

(दोनो अब खिडकी के उधर है।)

दिलीप कि मै कायर हूँ (हँसी) लेकिन क्या रुक्मिणी ने कृष्ण को कायर कहा ! या सयोगिता ने पृथ्वीराज को ? (फिर हँसकर) चलो !

[दोनो की बातचीत की आवाज़ धीमी होती जाती है, क्योकि वे चले जा रहे है और कमरा खाली है।]

उर्मिला आपका वायलिन ! जान से प्यारा !!

दिलीप वायलिन ! (प्रसिद्ध गीत के स्वर में) तुम हो मेरे सग, वीणा है मेरे सग—

उर्मिला (उसी तान में) "आगे बढा कदम !

[दोनों हँसते हुए गायब हो जाते है और उस तरफ हँसी की प्रतिध्वनि गूजती-सी जान पड़ती है !]

(पर्दा गिरता है।)

कबूतरखाना

पात्र

कचन

रतन

[एक मध्यवर्ग के घर की बैठक, जिसे नये फैशन की भाषा में गोल कमरा कह सकते हैं।

कमरे की सजावट, फर्नीचर और उपादानों की फेहरिस्त देना बेकार है, क्योंकि आप अनुमान कर ही सकते हैं। दूसरे, शायद आप यह जानने के लिए बेकरार होंगे कि कमरे में बैठा कौन है?

आपकी बेकरारी उचित ही है, क्योंकि कमरे में एक सुन्दरी बैठी है और उम्र भी उसकी २५ वर्ष से कम ही है।

नये फैशन की पोशाक और भाव-भंगिमा, लेकिन अधिक नहीं, कुछ संयम के साथ, मानो बढ़ती नदी ने अपनी सीमा पहचानी हो।

सोफे के एक किनारे में बैठी हुई वह किस आकार के शरीर के लिए स्वेटर बुन रही है, यह इतने फासले से कहना कठिन है, लेकिन आँखें और अंगुलियाँ ऊन पर हैं। पर कान?

आहट?

वह पहचानी-सी पग-ध्वनि, वह परिचित-सी

मुस्कान ! मुस्कान ! हाथो से ऊन और सलाइयो का साथ छूट जाता है और सुन्दरी उठ खडी होती है। स्निग्ध सरोवर की मथर लहरी-सी उत्सुकता उस "छपी-सी पी-सी मुस्कान" से हिलमिल गई है। नेपथ्य से पुरुष-स्वर]

पुरुष अरे भई कचन, यह बनकर आ गया है।

कंचन (दरवाजे की ओर बढती हुई) क्या ?

[पुरुष का प्रवेश—कोट, पैण्ट, टाई और दफ्तर से लौटते अफसर की मुद्रा-सभी इस बात को घोषित करते हैं कि पुरुष और कोई नही, कचन का पति है। रहा नाम, सो आधुनिक गृहिणी से भी आप पति का नाम तो सुन नही पायेंगे। अत काम चलाने के लिए हम लोग उसका नाम रतन रख लेते हैं। वैसे कचन और रतन इन दो नामो का जोडा बुरा नही है। और चाहिए ही क्या ? लेकिन। खैर, थोडी देर में आपको सभी कुछ मालूम हो जायगा।

रतन आता है और इससे पहले कि कचन को शिकायतो का खजाना खोलने का मौका दे, उसकी बढती उत्सुकता से लाभ उठा लेना चाहता है।]

रतन (सोफे पर बैठ कर, टाई खोलते हुए) यही।

कंचन (जिसकी उत्सुकता झुंझलाहट में बदल रही है) यही, यही क्या कर रहे हो। कुछ बताओगे भी !

रतन (ऊँचे स्वर से दरवाजे की ओर पुकारते हुए) ए चपरासी जरा यहाँ लाना।

[वर्दी पहने दफ्तर का चपरासी हाथ में लकडी का

एक डिब्बा लिये आता है। डिब्बा एक हाथ लम्बा, लेकिन मुश्किल से छ इंच चौडा होगा और उसमें तीन खाने हैं। ढकना नही है, इसलिए डिब्बे की शक्ल दफ्तरो में पाये जाने वाले 'रैक' की तरह है जिसमें अफसर लोगो के लेटर पैड, लिफाफे इत्यादि रखे जाते हैं। चपरासी उसे कालीन पर रतन के सामने रखता है।.]

रतन हाँ, यही रख दो। (कचन की तरफ गर्वभरी दृष्टि से देख कर) देखा, मेरा दिमाग !

कचन यह क्या कबूतरखाना बनवा लिया है। पैसे फालतू है क्या ?

रतन कबूतरखाना नही, यह है "बिल-खाना" !

कंचन "बिल-खाना" ?

रतन हाँ, देखो यह जो पहला खाना है, इसमें रखा करो वे सब 'बिल' जिन्हे महीने में चुकाना है; इस बीच वाले खाने मे जो बिल चुका दिये गये हैं, उनकी रसीदे और इस तीसरे खाने मे, बीमे की पालिसी और बैंक की नोटिस। समझी ?

कचन समझी तो लेकिन

रतन और देखो, बाहर लिख भी दिया है—Unpaid bills, Paid up bills, notices बस ! आँख मूद कर जिस खाने की जो चीज है, उसी में डाल दो। न कागज खोने की दिक्कत, न मेज पर कूडा।

(खडा हो जाता है।)

कंचन अच्छा तो लो, अभी से शुरुआत किये देती हूँ (कोने में रखी मेज पर से कागजो का गट्ठर उठा लाती है

और फिर डिब्बे के पहले खाने में डालते हुए) यह लो—ये और ये और ये ये

रतन हे, हे (निकट जाकर कलाई पकड़ता है) सभी कागज पहले ही खाने मे डाले दे रही हो। क्या इन सभी बिलो के रुपये इसी महीने मे चुकाने है ?

कंचन जी ! और यह लो तीसरे खाने की चीजे बीमे की नोटिस, मोटरकार की किस्त की नोटिस और बैंक के ओवरड्राअल की नोटिस और .

रतन ठहरो ! आखिर बीचवाले खाने मे भी तो कुछ डालती जाओ ।

कंचन रसीदें? यही दो तीन रसीदे है—सो रखे देती हूँ, लो !

रतन बस तीन ? तब यह खाना फिजूल ही बनवाया।

कंचन और क्या ! अब तो इसके कारीगर का भी बिल देन पड जायगा ।

(व्यग्यमयी हँसी)

रतन (तैश में आकर) तो लाओ चेकबुक। आज ही सब रुपये बेबाक किये देता हूँ ।

कंचन चेकबुक ? चेक काटते समय तो तुम्हे बहुत अच्छा लगता है ।

(वही व्यग्यपूर्ण स्वर)

रतन मुझे क्या, मेरा लिखा हुआ चेक बैंकवालो को भी पसद आता है । उस रोज एजेण्ट कह रहे थे कि मेरा दस्तखत बडा सुडौल और रोबीला है ।

कंचन क्या कहने ! लेकिन उस दस्तखत का जोर नही चलने का, महीने का आखिर है और एकाऊट (Account) देखो तो बिल्कुल सिफर ।

रतन (मानो गगन-गामी भानु धरती पर आ पड़ा है) बड़ी मुश्किल है। . मैं समझता हूँ कि तुम्हारा जो यह वायलिन (कोने की ओर इशारा करते हुए) इतने दिनो से बेकार पड़ा है, उसे बेच कर कुछ बिल क्यो न चुका दिये जायँ।

कंचन खूब! — तुम्हारी जेब मे यह जो फाउण्टेन पेन (Fountain pen) है, इसे ही क्यो नही बेच डालते— सोने की निब और क्लिप है—अच्छे दाम आ जायँगे।

रतन जानती हो इस फाउण्टेन पेन से मैंने कितने बड़े-बड़े काम किये है।

कंचन हूँ—फाइलो पर दस्तखत, और क्या?

रतन जनाब, इस फाउण्टेन पेन से मैंने तुम्हारे बगीचे में बैठ कर कई तस्वीरे बनाई थी। (कुछ रुक कर) बहुत पहले।

कंचन बहुत पहले—जब मैं तुम्हे इस वायलिन पर धुन सुनाया करती थी।

[क्षणिक मौन और फिर जान पड़ता है, मानो पुरानी याद की कदरा में से उसके स्वर की प्रतिध्वनि आती हो।]

रतन हाँ, बहुत पहले। क्या सच ही बहुत पहले?

कंचन (स्त्री-सुलभ उपालभ के स्वर में) तुम तो ऐसे बातें कर रहे हो, जैसे अभी से हम लोग बुड्ढे हो चले।

रतन मैं क्या गलत कह रहा हूँ—तुम सच ही अपने सारे हुनर भूल गई हो। यही वायलिन लो। कभी बजाती हो इसे? पड़ा-पड़ा अपने करम को रोता रहता है बेचारा।

कंचन उफ्फोह ! तुमने ही कौन से अपने शौक जारी रखे हैं ? इस फाउण्टेन पेन से अब कितनी तस्वीरें बनाते हो ? (आवाज में जो तेजी है अब उसके पीछे बेकार इंतजारी के घंटों की बेबस याद है और इसलिए असलियत भी) खामख्वाह की बातें ! रोज तो आफिस से सात बजे शाम को लौटते हो। इतवार का दिन मुलाकातों में बीत जाता है। वही दिन भर काम की रटना ! तुमको तो काम से शादी करनी चाहिए थी !

(सोफे पर बैठ कर बुनना उठा लेती है)

रतन (पुरुषोचित अहम्मन्यता के साथ चुटकी बजाते हुए और सोफे के किनारे पर पैर टेक कर।)—अच्छा तो सुनो, मेरी एक सूझ। कल है छुट्टी, तुम उठाओ अपना वायलिन और मैं सँभालता हूँ अपना फाउण्टेन पेन और हम लोग अभी चलते हैं पिकनिक के लिए—आज रात और कल दिन भर रहे यही शगल (मानो दुनिया जीत ली) तुम भी क्या कहोगी !

कंचन (अविश्वासपूर्ण जिज्ञासा) कहाँ चलोगे पिकनिक के लिए ?

रतन जहाँ तुम कहो।

कंचन (व्यंग्य और प्यार की सीमाएँ जहा मिलती हैं, वहा खेलनेवाली मुस्कान के साथ) बड़ा शौक चर्राया एक साथ !

रतन खैर ! जी तो तुम्हारा भी कर रहा है, लेकिन योंही नहीं जाना चाहती हो। बहाना ढूंढ रही हो जाने का।

[दूर को हट जाता है। कुछ कूटनीतिज्ञता भी तो चाहिए न !]

कंचन (पिघलते हुए), कल किस बात की छुट्टी है ?

रतन ठीक याद नही। आज २८ तारीख है न ?...
कल कोई छोटा-मोटा त्योहार है, उसी की शायद छुट्टी है। .चलना है तो अभी चलो .. सोच क्या रही हो ?

कंचन कल २९ तारीख है २९! (हठात्) चलो. .. जरूर चलो (सावेश) जरूर, जरूर

रतन है! यह एक साथ बिजली क्यो चमकी ?

कंचन तुम तो योही हो। .. (शब्दो पर जोर देते हुए)'कल २९ नवम्बर है आया कुछ समझ में ?

रतन २९ नवम्बर! २९ नवम्बर !! (कुछ सोचता है) हाँ, हाँ (अट्टहास) यानी कल पाँच बरस हो जायँगे हम लोगो की शादी को ? खूब सूझी तुम्हे ! मै तो भूल ही गया था। तुम्हारी याददाश्त क्या है— डायरी के पन्ने है।

कंचन तुम तो कुछ मिनट पहले बुड्ढे बने जा रहे थे !

रतन मै गलती पर था। (समा बदल रहा है) चलो ! . यह पाँच वर्ष नही, पाँच दिन बीते है। जीवन सामने है—पीछे नही . यह पिकनिक भी क्या मौके से आया। चलो, कैमरा ले चलना।

कंचन कैमरा क्यो ? (कल्पना जागृत हो चली और अविश्वास की बदली गायब हो गई) इस बार तो तुम फाउण्टेन पेन से तस्वीर बनाना पहले की तरह !

रतन ठीक ! तो फिर ग्रामोफोन की भी जरूरत नही। तुम्ही वायलिन पर कोई पुरानी ट्यून छेडना। (मस्ती के स्वर में) खूब गुजरेगी . जो मिल बैठेगे दीवाने दो!"

कंचन — और यह . . (शरारत की मुस्कान) यह जो कबूतरखाना तुमने बनवाया है ? यह भी जायगा साथ मे ?

रतन — यह बिलो का गट्ठर ? यह मुसीबतो का बस्ता ?

कचन — छोड जाऊँ इसे ?

रतन — (कुछ सोच कर) नही, यह भी साथ मे जायगा।

कचन — (मतभेद का कोई सवाल ही नहीं) वही फुरसत से बैठकर हिसाब-किताब भी कर लेगे ।

रतन — हाँ, यह पिकनिक तो 'माइलस्टोन' है, हम लोगो की जिन्दगी का । और जिन्दगी को कोरा सपना समझना भी इतनी ही बेवकूफी है जितना उसे केवल सघर्ष—कठिनाइयो की मजिल समझना ।

कचन — (वायलिन उठाते हुए) अब लगे झाडने फिलासफी ।

रतन — ठीक कह रहा हूँ । यही तो जिन्दगी है—पथरीली चट्टानो और रस भरे बादलो का सयोग ।

कचन — कभी-कभी तो तुम सच ही चट्टान-से लगने लगते हो।

रतन — और तुम ? बादल !

[कचन के दोनो हाथ पकड कर आँखें आँखो में डालते, प्रसिद्ध फिल्मी तर्ज की नकल में—]

"धीरे-धीरे आ रे बादल . . . धीरे ."

[खींच कर ले जाता हुआ दीखता है, कौन जाने कहाँ ? पर कमरे का कोना-कोना मुखरित हो गया है और यदि पर्दा नही गिरेगा, तो सोफा, कालीन और आतिशदान पर रखे खिलौने भी गा उठेंगे—

इसलिए—

पर्दा गिरता है ।]

———

भाषण

पात्र

मोहिनी
वेरा
रहीम
भोलासिंह
हरीशनन्दन
हेडमिस्ट्रेस
लेडी साहवा की आवाज
गीत गानेवाली लडकिया ।
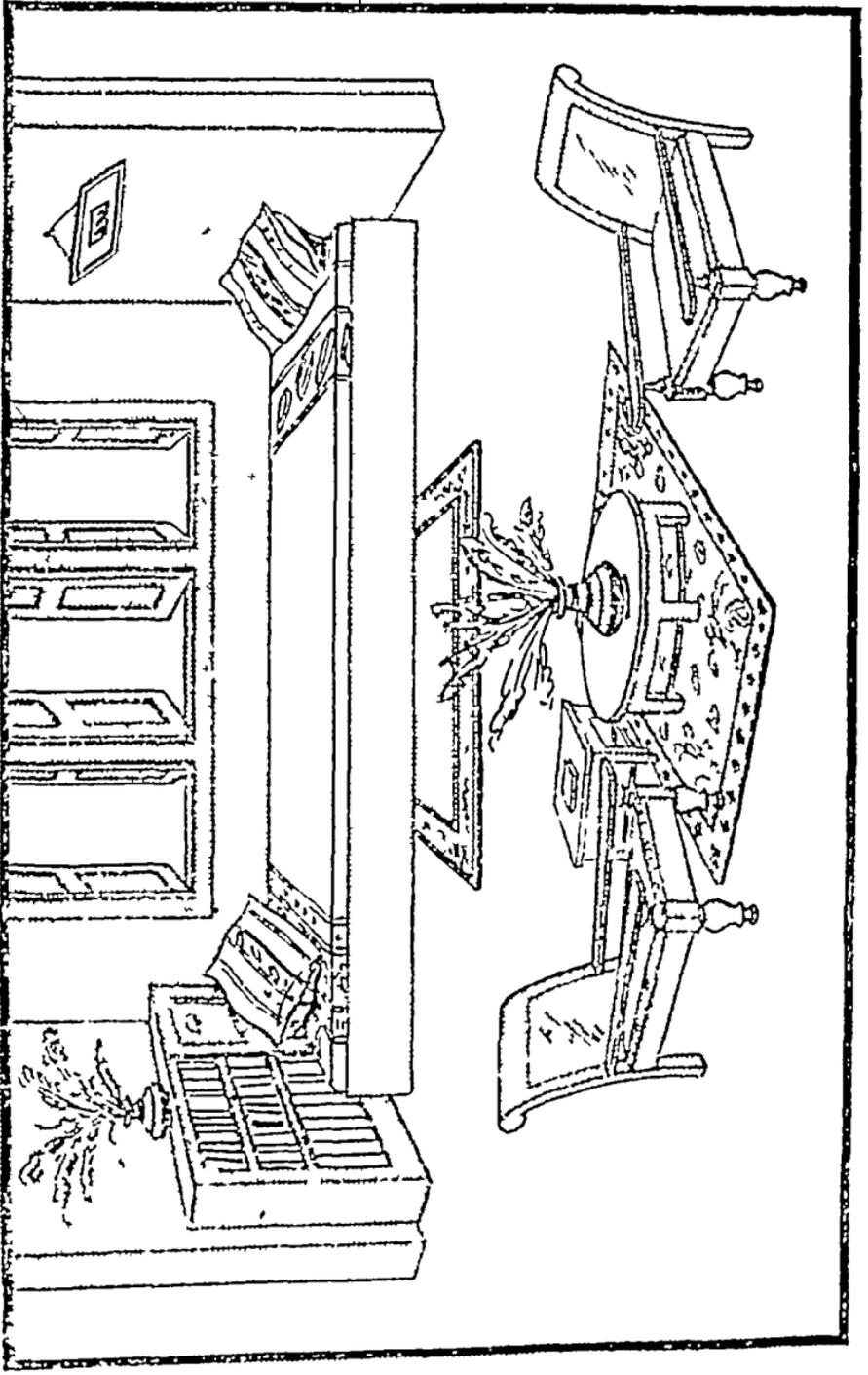
भाषण—पहला दृश्य

पहला दृश्य

[मि० हरोशनन्दन दानापुर के सब-डिवीजनल आफिसर—या आजकल की भाषा में उप-मडलाधीश—के मकान का गोल कमरा। समय सध्या! कमरे की बनावट उस जमाने की है जब गोल कमरा गोल हुआ करता था। दर्शकों को सामने की वे-विण्डो यानी तीन खिडकियाँ नजर आती हैं। और इन खिडकियों के दोनों तरफ एक-एक द्वार। द्वार और खिडकियों के पीछे बरामदा है और उसके पीछे बागीचा जिसकी अस्पष्ट झलक मिलती है। खिडकियों से सटी गद्देदार बेंच है जिस पर बैठ कर उपवन की बहार और आगत व्यक्तियों की झाँकी ली जा सकती है।

कुछ नीची कुर्सियाँ, एक कौच, कुछ छोटी मेजें, एक तरफ किताबों की आलमारी, दूसरी तरफ एक ऊँची मेज जो लैम्प रखने के काम आती है, दो कालीन, दो फूलदान, ऐश ट्रे यही इस गोल कमरे का फर्नीचर है, दीवारों पर कुछ तसवीरें भी, एक तसवीर ऊँची मेज पर भी है।

अँधेरा होने के कारण खिडकी के पास बैठी हुई युवती महिला का चेहरा साफ-साफ नजर नही आता है, लेकिन मिसेज़ हरीशमन्दन या मोहिनी, सुन्दरी है, इसमें सन्देह की गुजायश नहीं। इतजारी की ऊब से बचने के लिए या किसी और कारणवश बुनाई के द्वारा दिल बहलाव कर रही है ! नेपथ्य में पेट्रोमेक्स लैम्प में गैस भरने की आवाज़ जिसे मोहिनी कान लगाकर सुनती है]

मोहिनी नही, जलता बेरा ?

बेरा (नेपथ्य से) जी नही । अकसर ऐसे ही धुक-धुक कर रह जाता है । आजकल के पेट्रोमेक्स भी तो बेकार ....

मोहिनी तो लालटेन ही ले आओ.....

[बेरा लालटेन लाकर रख देता है और फिर बायें दरवाजे से चला जाता है । गोल कमरा अर्ध-विकसित सौन्दर्य से जगमगा उठता है । उसी समय एक अर्दली प्रवेश करता है । यह है रहीम जैसा कि आप बाद के वार्तालाप से समझ जायेंगे !]

रहीम का परिचय उसकी बातचीत से ही मिल जाता है । ठोडी पर हलकी डाढी, आँखो में ज़माने की गर्दिश, छरहरे बदन पर अक्षय सत्ता की वर्दी जो १५ अगस्त १९४७ के तग दर्रे में से भी अछूती निकल आई, सिर पर पगडी, जिसका झब्बा ओहदे का प्रतीक है और ज़बान पर सरस्वती---वीणावादिनी नहीं, बल्कि वह जो मथरा की जिह्वा पर आरूढ हुई थी, ऐसा है रहीम अर्दली । जैसे दूकान को साइनबोर्ड की

जरूरत होती है ऐसे ही अफसर को अर्दली की। रहीम मामूली साइनबोर्ड नहीं है, उसकी दमक जमाने के साथ बढती ही गई है। अफसर आये और चले गये, लेकिन दानापुर कचहरी के इस साइनबोर्ड की आभा वैसी ही है।]

रहीम मेम साहब !

मोहिनी किसको खोजते हो चपरासी ?

रहीम एक बूढा आपसे मिलना चाहता है। बाहर खडा है।

मोहिनी बूढा ? मै किसी बूढे को नही जानती !

रहीम वह तो कहता है कि मेम साहब से दो बात किये बिना .

मोहिनी मेम साहब ? कौन मेम साहब ?

रहीम हुजूर—

मोहिनी चपरासी, मै मेम साहब नही हूँ !

रहीम जी !

मोहिनी मुझे मेम साहब कह कर मत पुकारना ! समझे ?

रहीम लेकिन, हुजूर, इस कोठी में तो बराबर मेम साहब लोग का ही ठिकाना रहा है। (**मोहिनी की मौन उत्सुकता से मानो बढावा पाकर**) बीस बरस से चपरासी हूँ हुजूर, अग्रेजो का जमाना भी देखा है और अब हिन्दुस्तानियो का भी ! मैस्कट साहब की शादी भी यही हुई थी। आप ही की तरह उनकी भी नयी दुलहिन आई थी ! और वह खन्ना साहब स्टेशन से यहाँ तक मय मेम साहब के हाथी पर आये थे और इकबाल हुसेन साहब भी यहाँ एस० डी० ओ० थे और उनकी बेगम साहबा...

मोहिनी क्या ये सभी मेम साहब कहलाती थी ?

रहीम और दूसरा नाम तो इस कोठी मे फबता ही नही है हुजूर । यहाँ के लोगो की घरवाली को मालकिन भी कहते हैं.....

मोहिनी ओह 'नो', मालकिन तो भद्दा सा लगता है ।

रहीम जी हाँ, और फिर बेगम साहिबा.....

मोहिनी नही, वह भी ठीक नही। हमारे पडोसी मौलवी साहब की बेगम साहिबा के मुह से पान की पीक ही निकलती रहती थी !

रहीम कश्मीरियो मे रानी साहिबा कहने का रिवाज है लेकिन .

मोहिनी नही, नही। वह तो किस्से-कहानियो मे कहा जाता है !

रहीम तो हुजूर हमेशा का कायदा चला आया है, अफसरो की बीवियाँ मेम साहब ही कहलाती रही है—इसीमे उनका रुतबा है !

मोहिनी (किंचित पराजित स्वर में) मेम साहब !

रहीम जी हाँ, अग्रेजो ने बहुत सोच-समझकर ये सब नाम रखे थे हुजूर ! देखिए न इस लफ्फज मेम साहब मे साहब शामिल होने की वजह से क्या रोब, क्या हुकूमत आ गई है ! क्या बताऊँ, हुजूर, अब वे हुकूमत के दिन ही लद गये ! हुजूर के साहब तो, परमात्मा की दुआ से सूरत से ही अफसरी टपकती है, लेकिन जमाने ने भी कैसा पलटा खाया है ! इस कोठी मे जब मैक्फाट साहब .

मोहिनी (खिडकी की ओर देखते हुए) चपरासी तुम वात वहुत करते हो और देख-भाल कम ! यह देखो कौन मकान मे घुसा चला आ रहा है !

रहीम (जो निष्प्रभ होना जानता ही नही) माफी हुजूर ! (मुस्तैदी से दरवाजे के निकट आ पहुँचे किसी व्यक्ति को सम्बोधित करके) अरे, यह तो वही वूढा है ! अवे, यह क्या हिमाकत है ? तुझसे कहा था वाहर ही वैठियो चल निकल !

[लेकिन वह व्यक्ति अन्दर आ ही पहुँचता है। नाटे कद का ग्रामीण, आयु ५५ वर्ष के क़रीव, आँखो और चाल ढाल से वेवसी, आते ही मोहिनी के पैरो पर गिर पडता है ।]

मोहिनी अरे, अरे यह मेरे पैर क्यो पकड रहा है ? चपरासी, चपरासी, इसे उठाओ ! कहाँ की मुसीवत आ पडी !

आगन्तुक दया कीजिए ! मुझे वचाइए ! हजूर, हजूर !!

मोहिनी अरे भई, इसे उठाओ भी . (रहीम काफी मेहनत से उसको उठाता है) अरे, यह तो रो रहा है।

रहीम हुजूर, मुसीवत का मारा हुआ है ।

मोहिनी क्या हुआ इसे ?

रहीम वताता क्यो नही भोला सिंह ? वोल !

भोलासिंह वे मौत मर जाऊँगा हुजूर ! दया कीजिए .

(रहीम की ओर उम्मीद से देखता है ।)

रहीम वात यह है हुजूर कि इस गरीव को इसके दुश्मन वहुत परीशान कर रहे हैं ।

भोलासिंह मिनट भर को चैन नही है। सरकार, जुलम का कोई

ठिकाना नही ! झूठे मुकदमे मे फँसा लिया गया हूँ ! जायदाद ले ली सो अलग—

मोहिनी किसने ?

रहीम इसके दुश्मनो ने ! सब इसके रिश्तेदार है, लेकिन आज जान के ग्राहक बने हुए है !

भोलासिंह सरकार मर जाऊँगा । सारे इलाके मे कोना भर भी सरन नही मिलती ! दुश्मन हाथ धो के पीछे पडे है ।

मोहिनी तो क्या सारे इलाके मे कोई इसको सहारा नही दे सकता ?

रहीम सहारा तो बस एक ही जगह से मिल सकता है !

मोहिनी यानी ?

रहीम बोलता क्यो नही बे ?

भोलासिंह हजूर, साहब के ही इजलास मे मुकदमा है—बेमौत मर जाऊँगा ।

रहीम जी हाँ, हुजूर, आपके मुह से सही बात साहब के कानो पड जायगी तो बेचारे का उद्धार हो जायगा ।

मोहिनी हाँ, हाँ जब बेचारे पर इतनी मुसीबत है तो मैं उनसे कह दूगी ! गरीब की मदद होनी चाहिए ।

भोला सिंह हुजूर की उमर दिन दूनी रात चौगुनी हो, हुजूर के गोद मे जल्दी ही चाँद सा बच्चा . . .

मोहिनी (झुंझलाहट से) यह क्या वाहियात बकता है बूढे···

रहीम हजूर वह भी दिन देखने को····

[बाहर मोटर की आवाज सुनकर आतुर हो मोहिनी उठ खडी होती है]

मोहिनी यह लो मोटर गई ! (दरवाजे की ओर बढती हुई) चपरासी, क्या नाम है इसका ?

भोला सिंह हजूर, भोला सिह मौजा विक्रमपुर थाना सरीता—

मोहिनी ठीक है. मैं साहब से बात करूँगी। चपरासी, तुम इसे रोके रखना —

[दाहिने दरवाजे से मोहिनी का प्रस्थान, रहीम की मुद्रा बदलती है।]

रहीम (आहिस्ता किन्तु कर्कश स्वर में) निकाल दे पाँच का नोट!

भोला सिंह अभी काम तो पूरा होने दो चपरासी जी!

रहीम लगाऊँगा एक धौल तो अक्ल ठिकाने आ जायगी! मुझे ही चकमा देता है!

भोला सिह देखिए कोई आ रहा है!

रहीम तो चल बाहर! उधर से नही इधर से! छोड़ूँगा नही!

[बायें दरवाजे से भोला को घसीटते हुए ले जाता है। थोडी देर बाद दाहिने दरवाजे से बातें करते हुए हरीश और मोहिनी का प्रवेश! कहते हैं नया मुसलमान अल्लाह ही अल्लाह पुकारता है; नया अफसर भी काम ही काम की रट में एक अनोखी स्फूर्ति का अनुभव करता है। हरीश अपनी सफाई देने में वही कौशल दिखा रहा है जो मुद्दालह की ओर से बहस के वक्त नया वकील दिखाता है।

हरीश नन्दन. भई माफ करना। क्या करूँ यह काम ऐसा आ पड़ा कि रुक जाना पड़ा। वर्ना शुरू मे ही नयी दुलहिन को इस तरह अकेलेपन की बेबसी में . .

मोहिनी (चौंककर रुकते हुए) शुरू मे ही? .. तो क्या बाद मे यह रोजमर्रा का दस्तूर हो जागा?

ठिकाना नही। झूठे मुकदमे मे फँसा लिया गया हूँ। जायदाद ले ली सो अलग—

मोहिनी किसने ?

रहीम इसके दुश्मनो ने। सब इसके रिश्तेदार हैं, लेकिन आज जान के ग्राहक बने हुए हैं।

भोलासिंह सरकार मर जाऊँगा। सारे इलाके मे कोना भर भी सरन नही मिलती। दुश्मन हाथ धो के पीछे पडे हैं।

मोहिनी तो क्या सारे इलाके मे कोई इसको सहारा नहीं दे सकता ?

रहीम सहारा तो बस एक ही जगह से मिल सकता है।

मोहिनी यानी ?

रहीम बोलता क्यों नही बे ?

भोलासिंह हजूर, साहब के ही इजलास मे मुकदमा है—बेमौत मर जाऊँगा।

रहीम जी हाँ, हुजूर, आपके मुह से सही बात साहब के कानो पड जायगी तो बेचारे का उद्धार हो जायगा।

मोहिनी हाँ, हाँ जब बेचारे पर इतनी मुसीबत है तो मैं उनसे कह दूगी। गरीब की मदद होनी चाहिए।

भोला सिंह हुजूर की उमर दिन दूनी रात चौगुनी हो, हुजूर के गोद में जल्दी ही चाँद सा बच्चा . . .

मोहिनी (झुंझलाहट से) यह क्या वाहियात बकता है बूढे···

रहीम हजूर वह भी दिन देखने को····

[बाहर मोटर की आवाज सुनकर आतुर हो मोहिनी उठ खडी होती है]

मोहिनी यह लो मोटर गई। (दरवाजे की ओर बढती हुई) चपरासी, क्या नाम है इसका ?

भोला सिह हजूर, भोला सिह मौजा विक्रमपुर थाना सरीता—

मोहिनी ठीक है . मैं माहव से वात करूँगी । चपरासी, तुम इसे रोके रखना —

[दाहिने दरवाजे से मोहिनी का प्रस्थान, रहीम की मुद्रा वदलती है ।]

रहीम (आहिस्ता किन्तु कर्कश स्वर में) निकाल वे पाँच का नोट !

भोला सिंह अभी काम तो पूरा होने दो चपराली जी !

रहीम लगाऊँगा एक धौल तो अक्ल ठिकाने आ जायगी ! मुझे ही चकमा देता है !

भोला सिंह देखिए कोई आ रहा है !

रहीम तो चल वाहर ! उधर से नही इधर से ! छोडूँगा नही !

[वायें दरवाजे से भोला को घसीटते हुए ले जाता है। थोडी देर वाद दाहिने दरवाज़े से बातें करते हुए हरीश और मोहिनी का प्रवेश ! कहते है नया मुसलमान अल्लाह ही अल्लाह पुकारता है ; नया अफसर भी काम ही काम की रट में एक अनोखी स्फूर्ति का अनुभव करता है । हरीश अपनी सफाई देने में वही कौशल दिखा रहा है जो मुद्दालह की ओर से वहस के वक्त नया वकील दिखाता है ।

हरीश नन्दन भई माफ करना । क्या करूँ यह काम ऐसा आ पडा कि रुक जाना पडा । वर्ना शुरु मे ही नयी दुलहिन को इस तरह अकेलेपन की वेवसी मे ..

मोहिनी (चौंककर रुकते हुए) शुरू मे ही ? .. तो क्या वाद मे यह रोजमर्रा का दस्तूर हो जागा ?

हरीश नन्दन (जल्दी से) नहीं, नहीं। (कुर्सी पर बैठ कर टाई खोलते हुए) थोड़ा बहुत काम तो लगा ही रहता है। फिर भी इस वक्त तक तो हमेशा कचहरी से फुरसत मिल ही जाया करेगी।

मोहिनी (रूठते हुए) समझ गई। आज तो देरी का रिहर्सल था।

हरीश नन्दन अरे सुनो तो। देरी किस वजह से हुई यह तो सुनो तबीयत फड़क जायगी।

मोहिनी क्या इस बेकार शहर में बिजली लगने वाली है?

हरीश नन्दन बिजली? हाँ, तुम्हें बड़ा अजीब सा तो लगता होगा। कहाँ कानपुर की चहल-पहल और कहाँ यह लालटेन की रोशनी।

मोहिनी वह तुम्हारे पेट्रोमेक्स लैम्प का तो हार्ट फेल कर गया। (हँसकर) बड़ी मिन्नतें की लेकिन न जाने कैसा दिलजला है?

हरीश नन्दन (शरारत भरी मुस्कान) तुम्हें देखकर शरमा रहा होगा।

मोहिनी तुम्हारे ही सामने कौन से जौहर दिखाता है? बेरा कह रहा था कि अकसर यही हाल रहता है।

हरीश नन्दन (अपने उत्साह पर अफसरियत की लगाम लगाते हुए) देखो, लाट साहब के सामने बिजली का जिक्र करूँगा। शायद कुछ

मोहिनी लाट साहब?

हरीश नन्दन वही तो बता रहा था कि देरी क्यों हुई। यहाँ लाट साहब आने वाले हैं, सूबे के गवर्नर और उनकी लेडी। आज ही जरूरी चिट्ठी मिली है और प्रोग्राम

भी। ज़िक्र तो पहले से चल रहा था। आज हुकुम आ गया। दस तारीख को आ जायेंगे।

मोहिनी आठ दिन ही तो रह गये हैं।

हरीश नन्दन हाँ, सभी इन्तज़ाम करने हैं इस बीच में।

मोहिनी (दिलचस्पी बढ रही है) चलो, कुछ चहल-पहल हो जायेगी।

हरीश नन्दन हाँ, तुम्हारे भी ज़िम्मे कुछ काम रहेगा।

मोहिनी चाय पार्टी का बन्दोबस्त करना है ? मीनू तो अभी बनाये लेती हूँ हमारा प्रेज़ण्ट्स वाला टी-सेट अच्छा रहेगा .लेकिन बेरा की शक्ल तो देखो।

हरीश नन्दन चाय पार्टी का तो अभी तय नही हुआ है।

मोहिनी तब ? मेरे ज़िम्मे और कौन काम हो सकता है ? . (सहसा गृहिणी के कर्त्तव्य को याद करते ही पुकारती है) बेरा . चाय ले आओ। जल्दी !

बेरा (नेपथ्य से) जी, तैयार है !

हरीश नन्दन (बात जारी रखते हुए) बात यह है कि गवर्नर साहब को तो मैं ले जाऊँगा देहात, एक इलाके का मुलाहिज़ा कराना है और एक नये बाँध की ओपनिंग भी ! और लेडी साहबा को पहुँचा दूगा अस्पताल ! वहाँ तुम उनका स्वागत करना और अस्पताल दिखा देना !

मोहिनी बड़ा आलीशान है न तुम्हारा अस्पताल !

हरीश नन्दन पुराना कायदा है ! गवर्नर साहब लोगो से हाथ मिलाते हैं और उनकी बीबी अस्पताल देखती है और लड़कियो के स्कूलो मे इनाम बाँटती है !

मोहिनी स्कूल ?

हरीश नन्दन   हाँ, उसके बाद तुम उन्हे लडकियो के स्कूल मे ले जाना !

मोहिनी   लेकिन आजकल तो इनाम बाँटने का वक्त ही नही है ! इम्तेहान तो अभी हुए नही होगे ।

हरीश नन्दन   अरे, जब पिया आये तभी सावन ! जलसा तैयार करने में क्या लगता है !

बेरा   (ट्रे लेकर आता है) चाय हुजूर !

मोहिनी   रख दो यही ! (हरीश से) आज कैसी चाय लोगे ?

हरीश नन्दन   गहरी ! दिमाग पर ज़ोर पडा है ! (मोहिनी हँसती है) अब तुम्हे भी गहरी चाय की ही ज़रूरत पडेगी !

मोहिनी   मेरा दिमाग मेरे काम के लिए तैयार है, बिना चाय के ही !

हरीश नन्दन   तो ठीक है ! अभी से अपना भाषण लिखना शुरू कर दो !

मोहिनी   भाषण ?

हरीश नन्दन   हाँ, जलसे के मौके पर तुम्हे भाषण देना है ।

(मोहिनी चौंक पडती है ।)

मोहिनी   मुझे भाषण .. देना है ।

[आखे हरीश पर है और हाथ में दूध का जग है, जो प्याले पर निछावर हो रहा है]

हरीश नन्दन   हे, हे सारा दूध ही उँडेले दे रही हो ! ऐसी क्या कयामत आ गई !

मोहिनी   कयामत, नही तो क्या तुमने तो मुझे डरा ही दिया । अब बनाओ तुम्ही अपनी चाय ! (ट्रे हरीश की तरफ सरका देती है) . . भाषण ! भई, यह सब मुझ से नही होगा.....और फिर मैं

क्यो भाषण दू ? मुझ से और स्कूल से क्या मतलव ?

हरीश नन्दन मतलव ? वाह तुम तो उसकी मैनेजिंग कमेटी की प्रेज़िडेण्ट हो !

(चाय वनाने लगता है।)

मोहिनी खूब ! मुझ से तो किसी ने पूछा नही कि मुझे स्कूल की प्रेज़िडेण्ट वनना है।

हरीश नन्दन अफसर की वीवी से पूछा नही जाता, हर एस० डी० ओ० की वीवी स्कूल की प्रेज़िडेण्ट रही है सो तुम्हे भी . . .

मोहिनी यह खूब, मार-मार कर हकीम . .

हरीश नन्दन यह लो चाय, गहरी ! (हँसता है) भाषण तैयार करने मे मदद देगी !

मोहिनी भई, मुझे तो वुखार चढ जायेगा।

हरीश नन्दन अरे, भाषण जमाने मे क्या लगता है ! दो चार वकील-मुख्तार तो पहले से तय कर रखूगा। ठीक-ठीक मौको पर ताली वजावेगे। तुम्हारा दिल भी वढ जायेगा और भूले हुए वाक्य याद करने का वक्त भी मिल जायेगा।

मोहिनी लडकियो के स्कूल में वकील-मुख्तार ?

हरीश नन्दन हाँ ! यह तो तुमने ठीक ही कहा ! वहाँ तो सख्त पर्दा है (सोचता है) खैर, उसका भी इन्तज़ाम हो जायेगा

मोहिनी (शरारत से) एस० डी० ओ० के लिए क्या मुश्किल है . लेकिन मेरा भाषण तो तैयार कराओ !

हरीश नन्दन देखो इन भाषणो का भी एक नुस्खा होता है। पहले

खुशामद की चाशनी उठाओ, उसके ऊपर थोड़ा सा स्कूल की खूबियों का सफूफ फैलाओ, फिर चन्द जरूरी माँगो के छींटे डालकर, जोश का जुशादा दो, और और बस हो गई तैयार स्पीच !

मोहिनी — और जिसने इस भाषण का घूट पिया वह तो बस हो गया नीलकंठ ! मामूली ज़हर थोड़े ही है !

(बेरा आकर कोने में खड़ा हो जाता है ।)

हरीश नन्दन — तुम भी क्या बातें करती हो । थोड़े दिन मे तो तुम्हें ही मजा आने लगेगा इसमे ! (बेरा को देखकर) ..क्यो, बेरा, अभी तो हम लोग चाय पी ही रहे है !

बेरा — (कुछ हिचकिचाहट के साथ) जी वह . वह बाहर खड़ा इन्तज़ार कर रहा है।

हरीश नन्दन — कौन ?

मोहिनी — अरे हाँ ! वह तो मै भूल ही गई देखो जी, तुम कैसे अफसर हो ! एक बेचारे दुखियारे बूढ़े का भला भी नही कर सकते ?

हरीश नन्दन — यह खूब रही ! कोई भलेपन का खजाना मेरे पास थोड़े ही है जो बाँटता फिरूँ !

(बेरा बाहर चला जाता है ।)

मोहिनी — अभी तो ऐसी बातें कर रहे थे मानो आकाश में पैवन्द ही लगा दोगे ।

हरीश नन्दन — बताओगी भी कुछ !

मोहिनी — तुम्हारे यहाँ कोई थाना है सरीता ?

हरीश नन्दन — है तो ।

मोहिनी — उसमे एक गाँव है विक्रमपुर ?

हरीश नन्दन — वह भी है ।

मोहिनी — वही का है वह बेचारा !

हरीश नन्दन — थाना सरीता, मौज़ा विक्रमपुर (सोचता है) अरे, भोला सिंह तो नहीं ?

मोहिनी — यही तो नाम बताया था उसने !

हरीश नन्दन — (ठहाका मारकर हँसता है) हा हा हा .... भोला सिंह, बेचारा ? हा हा हा--

मोहिनी — हँस रहे हो ? बडा गरीब है !

हरीश नन्दन — भोला सिंह गरीब ? हा हा हा।

मोहिनी — बडा दुखियारा है बेचारा !

हरीश नन्दन — भोला सिंह दुखियारा ? हा हा हा

मोहिनी — मैं कहती हूँ और चाहे जो करो उस गरीब की जायदाद मत लुटने देना।

हरीश नन्दन — जायदाद ! अरे वह इतना मालदार है कि हमें तुम्हें खरीद कर रख दे।

मोहिनी — वह ? चीथडे तो पहने था .....

हरीश नन्दन — रईस की तरह आता तो तुम उस पर पसीजती थोडे ही। आया होगा अपने मुकदमे की सिफारिश कराने।

मोहिनी — तुम्हे कैसे मालूम ?

हरीश नन्दन — वह है नम्बरी मुकदमेबाज, सारा इलाका जानता है।

मोहिनी — चपरासी तो कहता था कि उसके दुश्मनो ने उसे फँसा दिया है !

हरीश नन्दन — फिर यह चपरासी बदमाशी करने लगा। (ज़ोर से आवाज़ देकर) . रहीम !

रहीम — (नेपथ्य से वही मुस्तैद आवाज़) आया हुज़ूर !

हरीश नन्दन — उसी भोला सिंह ने उलझा रहा होगा।

(रहीम आता है और अदब से सलाम देता है।)

हरीश नन्दन देखो जी रहीम, यह जानते हुए कि भोला सिंह पुराना मुकदमेबाज़ है, तुमने उसे अन्दर क्यों आने दिया?

रहीम (जैसे इस प्रश्न का इतज़ार कर रहा हो) हुज़ूर, मैं तो उसे रोक ही रहा था कि कम्बख्त यहाँ आ पहुँचा! बात यह है हुज़ूर कि मेम साहब का दिल तो दया से भरपूर है। दूसरे की मुसीबत देखकर ज़रा सी देर मे पसीज जाती हैं। (तीर निशाने पर ठीक बैठा है!) यही तो ऊँचे घराने की निशानी है! सारे इलाके में मेम साहब के मिजाज की शोहरत है, घर-घर में गुनगान हो रहे हैं! यों तो हुज़ूर का वैसे ही बहुत इकबाल है, लेकिन मेम साहब के मिजाज और दरियादिली ने उसमे चार चाँद लगा दिये हैं! हम लोगो का भी भाग ऊँचा है कि ऐसी मेम साहब की खिदमत का मौका .

हरीश नन्दन (झुँझलाहट, मीठी झिडकी में तबदील हो गई है) अच्छा, अच्छा जाओ! आगे से ऐसी गलती न करना! उसे चलता करो!

[रहीम लम्बा सलाम झुका कर अदब के साथ बाहर जाता है।]

मोहिनी बड़ा ही बातूनी है।

हरीश नन्दन लेकिन तबीयत तो उसने मेरी खुश कर दी!

मोहिनी (जानकारी की मुस्कान) बड़ी जल्दी

हरीश नन्दन (मोहिनी की कुर्सी के पीछे जाकर उसके बालो को उँगलियो में उलझाते हुए) तुम्हारी तारीफ सुन कर मेरा सीना चौड़ा हो जाता है!

मोहिनी (बालो को छुड़ाती हुई, हँसकर) हटो भी !

हरीश नन्दन लोग ठीक कहते है, साहब को खुश करना हो तो मेम साहब से शुरुआत करो ! पहले मै इस बात को नही मानता था !

मोहिनी अब क्या तुम भी मुझे मेम साहब कहोगे ?

हरीश नन्दन क्या बुराई है ? हमारे एक दोस्त और उनकी बीबी एक दूसरे को डार्लिग कहते थे सब के सामने। 'डार्लिग' वह किताब तो उठा दो, 'डार्लिग' आज तरकारी मे नमक ज्यादा है। 'डार्लिग' कोट मे बटन......

मोहिनी गोया कि 'डार्लिग' क्या हुआ .. घिसा हुआ पैसा हो गया ?

हरीश नन्दन घिसा हुआ पैसा ! .क्या पते की बात कही है तुमने ! कुछ लोग रोमास को रोज़ाना की जिन्दगी मे भिडाकर घिसा हुआ पैसा ही बना देते है।

मोहिनी असली रोमास नही नकली रोमास ! केमिकल गोल्ड ! लेकिन रोज़ाना के जीवन मे से असली रोमास का बहिष्कार करोगे तो मुकदमो की मिसलो मे ही फँसे रह जाओगे। न भई, ऐसी बातें कहकर मुझे न डराओ !

हरीश नन्दन यह बात नही (रुककर) सुनो, आज तो एक रोमाटिक प्रस्ताव लेकर आया हूँ ! चलो मेरे साथ दौरे . ..

मोहिनी मोटर से या रेल से ?

हरीश नन्दन कुछ दूर मोटर से, फिर हाथी से, फिर पैदल और लौटते वक्त नाव से ! कहो, क्या एडवेचर का नुस्खा मौजूद है ! हो तैयार ?

मोहिनी	क्यो नही (फिर याद आते हुए) ...लेकिन. वह भाषण ?
हरीश नन्दन	लाट साहब वाला ? उसका इतज़ाम लौटने पर होगा ! तुम बेफिक्र रहो !
मोहिनी	तुम जानो। मर्ज़ तुमने दिया है तो दवा भी तुम्हें ही करनी है !
हरीश नन्दन	लो रोमास तो तुम बिगाड रही हो !
मोहिनी	कैसे ?
हरीश नन्दन	एक बढिया से शेर को तुम ने यो ही उँडेल दिया। असली चीज़ तो यह है—
	तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं ...

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[दानापुर गर्ल्स मिडिल स्कूल का पीछे वाला बरामदा। बरामदे के पीछे कुछ सीढियां हैं और तीन दरवाजे, जिनमें बीच वाला बन्द है! इन दरवाज़ों के पीछे एक हाल है जिसमें स्कूल का पारितोषिक-वितरण-उत्सव हो रहा है! सभा की कार्रवाई सुनाई पड़ती है!

बरामदे में एक कुर्सी और एक बेंच पड़ी है। कुर्सी पर हरीश नन्दन कुछ चिन्तामयी उत्सुकता में बैठे हुए हैं, महिलाओं का जलसा होने के कारण उन्हे इस पिछवाड़े के बरामदे में बैठकर ही सन्तोष करना पड़ रहा है। हाल में से गवर्नर साहब की लेडी साहबा के भाषण के अन्तिम शब्द सुनाई पड़ते हैं।]

भाषण—दूसरा दृश्य
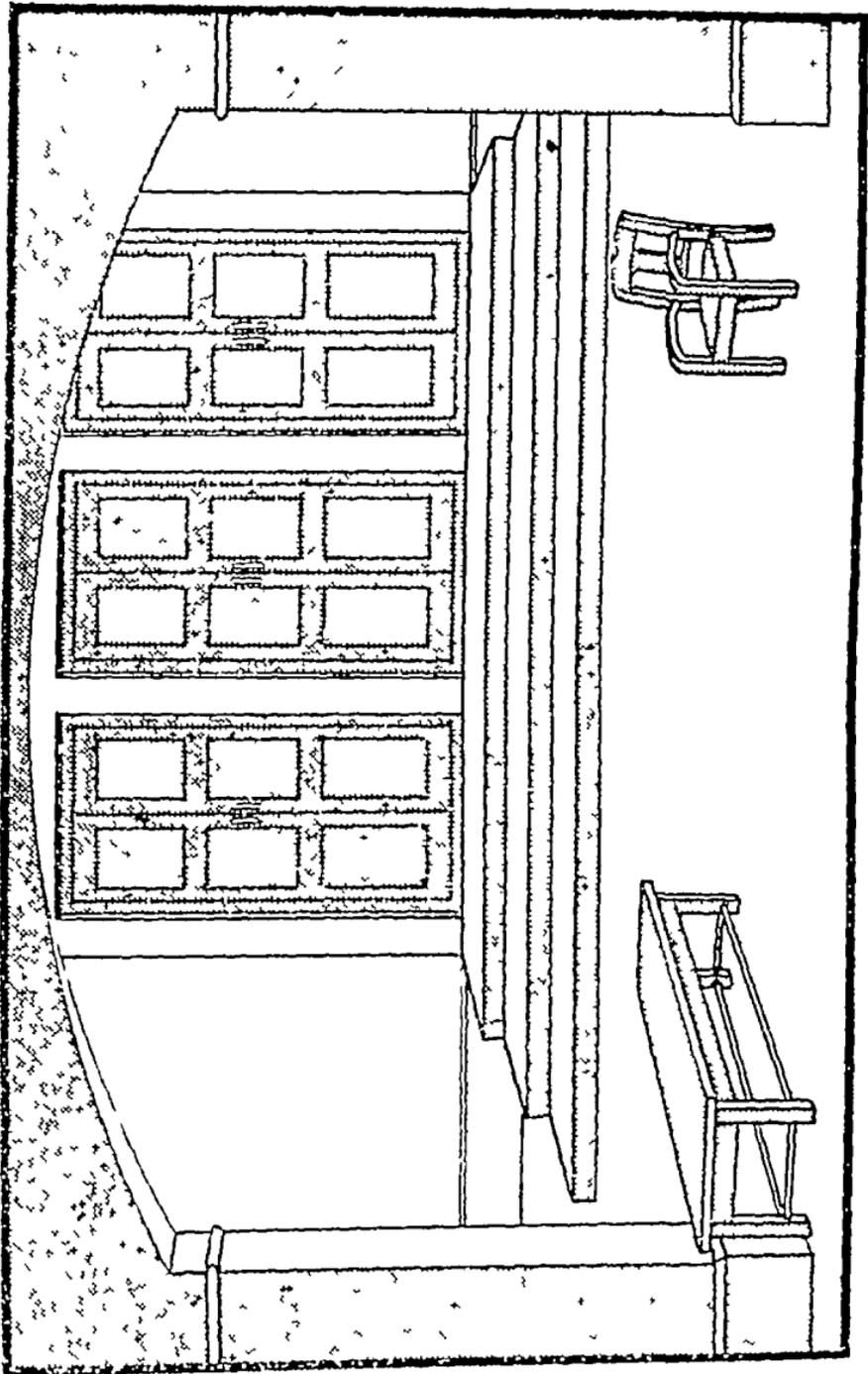
लेडी साहबा : और मैं उम्मीद करती हूँ कि आप लोगो के स्कूल की तरक्की वरावर होगी और थोडे दिन वाद यह मिडिल स्कूल हाई स्कूल वन जायगा ।

[ताली....थोडी देर में हारमोनियम की आवाज सुनाई पडती है। फिर घवराई हुई हालत में हेडमिस्ट्रेस प्रवेश करती है—अधेड उम्र, रंग सावला, चश्मा, साडी पहनने का ढग पुराना। जिस ढग से मर्दो से वात करती है, उसे देख कर एक नयी प्रकार की नायिका का आभास होता है, 'अज्ञात-प्रौढा' ! लेकिन इस समय घवराई हुई है।]

हेडमिस्ट्रेस मर, सर ! . वह तवले वाली अध्यापिका जाने कहाँ चली गयी ?

हरीश नन्दन क्या ? स्वागत गान पर तो मौजूद थी और अव आखिरी में गायव ? रहीम, रहीम ! कहाँ मर गया ?

हेडमिस्ट्रेस अव कैसे होगा !

हरीश नन्दन देखिए कोशिश तो करता हूँ क्या करूँ आपका जनाना जलसा है, वरना तवला तो मैं ही वजा लेता !

हेडमिस्ट्रेस सर, सर, देर हो रही है।

हरीश नन्दन (मजवूरन) अच्छा, तवला, यही ले आइए। मै यही से वजाता रहूँगा।

हेडमिस्ट्रेस मर, आपकी वडी मेहरवानी है। आप ही की वजह से .

हरीश नन्दन (झुंझलाहट में) अच्छा अच्छा, वक्त खराव न कीजिए (हेडमिस्ट्रेस जाती है) जव कोई और चारा ही नही !......

रहीम (तेजी में आकर सलाम झुकाता हुआ) हुजूर ने वुलाया था ?

हरीश नन्दन : कहाँ चला गया था ? हमेशा ज़रूरत के वक्त गायब मिलते हो। देखो, थोडी देर के लिए किसी को इधर मत आने दो !

रहीम जी हुजूर !

हरीश नन्दन तुम भी न आओ !

रहीम जी हुजूर !

[रहीम कुछ हक्का-बक्का होकर बाहर जाता है ? थोडी देर में दोनों हाथो में मुश्किल से तबले थामे हुए हेडमिस्ट्रेस का प्रवेश, हरीश के पास तबला रख देती है। हरीश जोश में आकर तबले पर थोडा हाथ चलाते हैं।]

हेडमिस्ट्रेस वही छोटी सी चीज़ है, किन शब्दो में करें बखान ...

हरीश नन्दन तिताला या कहरवा ?

हेडमिस्ट्रेस जी, ताल ? (कुछ फेर में पडकर फिर साफ स्वर में) जी जिस ताल मे चाहे बजा लीजिए !

हरीश नन्दन जिस ताल मे चाहे ? (चिढ कर) आप अध्यापिका जी कुछ जानती भी है ? तबला भी कोई चपत है जिस गाल पर चाहे लगा दीजिए !

हेडमिस्ट्रेस (सकपकाती हुई) जी, वह सगीत की अध्यापिका दूसरी है । क्या करूँ वह लीजिए लडकियो ने शुरू भी कर दिया !

[झट से अन्दर घुस जाती है। नेपथ्य से गाना कोरस . अलग-अलग स्वरों की अलग-अलग गति जैसे स्लोसाइक्लिग रेस में दौडने वाली साइकिले ! हरीश तबले पर ताल जमाने की कोशिश करते है मगर आसान नहीं है।]

किन शब्दो मे करे वखान
हो तुम हम सब के मेहमान
सदा रहे हम पर श्रीमान् .
(लडकिया रुक जाती है.. फिर...) नही नही..
सदा रहे हम पर हे मात,
कृपा-दृष्टि तेरी, हे मात
हम सब बच्ची रही निहार
कब होवे नैया ये पार
किन शब्दो .

[हरीश मजबूरन आधे गीत में ही तबला छोड देते है। चेहरे पर सख्त झुंझलाहट! नेपथ्य से तालियो की आवाज। थोडी शान्ति के बाद मोहिनी के खखारने की आवाज! हरीश हठात् चैतन्य हो जाता है। जल्दी जल्दी जेब से एक कागज निकालता है। इतने में रहीम आता है।]

रहीम हुजूर!

(झुंझलाहट से हरीश उसकी ओर मुडते है।)

रहीम हुजूर वह तबले वाली—

हरीश नन्दन (होठो पर उगली रख कर आहिस्ता स्वर में) चुप, चुप! मेम साहब बोल रही है!

रहीम मेम साहब......

हरीश नन्दन बोल रही है, भाषण दे रही है!

[नेपथ्य से भाषण आरम्भ होता है, आवाज में थोडी लडखडाहट। भावोन्मेष नहीं है, यद्यपि खत्म करने की जल्दी तो है ही]

मोहिनी श्रीमती सभानेत्री महोदया, महिलाओ और वालिकाओ,

इस स्कूल की मैनेजिंग कमेटी की ओर से मैं आप लोगो को हृदय से धन्यवाद देती हूँ, विशेषत सभानेत्री महोदया को, जिनकी असीम अनुकम्पा और अनुपम गुणो का हम वर्णन नही कर सकते !

[हरीश इस वाक्य की स्पष्ट और सफल समाप्ति पर काफी खुश जान पडते है, लेकिन सहसा कुछ याद आ जाने पर रहीम की ओर उन्मुख होकर .]

हरीश नन्दन (आहिस्ता से) रहीम, उसका इतज़ाम किया न ? वही ।

(हथेलियां मिलाकर सकेत करता है ।)

रहीम (और भी आहिस्ता से) जी हुजूर, सब ठीक है ।

(भाषण जारी हो गया है ।)

हरीश नन्दन (उसी तरह) तुम ज़रा खुद जाकर देख आओ !

(रहीम जाता है, उधर भाषण जारी है ।)

मोहिनी लाट साहब की धर्मपत्नी होते हुए भी आपने इतना कष्ट उठाया कि इस नन्ही सी सस्था में पधारी ! यही इस बात का द्योतक है कि शिक्षा और बच्चो की प्रगति मे आपकी कितनी दिलचस्पी है ।

[हरीश के हाथ ताली बजाने के लिए उठते है, लेकिन जान पडता है सभा के लिए वह वाक्य अधिक मुश्किल साबित हुआ । जो भी हो करतल-ध्वनि की अनुपस्थिति से हरीश को कुछ निराशा तो अवश्य हुई है । खैर शायद आगे चलकर ढग ठीक हो, इसीलिए हरीश हाथ वाले कागज को, जिसमें शायद भाषण की प्रतिलिपि है, गौर से पढते है और मिलान करते जाते है ।]

मोहिनी इस छोटे नगर मे आप जैसी—सम्मान्य महिलाओ के तो दर्शन ही नही होते और. ..

[नेपथ्य से किसी एक व्यक्ति के ताली बजाने की आवाज़ आती है, हरीश चौंक उठते है। थोड़ी देर तक वह ताली अकेली ही बजती रहती है, फिर कुछ बच्चों की तालियो की ध्वनि उसमें मिल जाती है। लेकिन अध्यापिकाओं के स्वर 'चुप, चुप.. बन्द करो!' इत्यादि के बाद फिर से सभा भवन शान्त हो जाता है। कुछ खखारने के बाद मोहिनी पहले से कम विश्वास भरे स्वर में भाषण जारी रखती है। हरीश की गति इस दौरान में साप-छछुदर की-सी हो जाती है। चेहरे पर बेहद परेशानी, घुटने पर हाथ पटकते है, बाहर की ओर भी कदम बढाते है, फिर लाचारी के साथ कुर्सी पर बैठ जाते है और कान लगाकर सुनते है।]

मोहिनी और इसीलिए हम उचित रीति से आपका सत्कार नही कर पाये। आशा है आप हमारी कमियो की ओर ध्यान न देंगी। अब मैं इस पाठशाला के छोटे से किन्तु कठिनाइयो से घिरे जीवन का थोडा-सा ज़िक्र करके अपना भाषण समाप्त करूँगी।

[फिर वही अकेली ताली, जिसकी प्रत्येक ध्वनि हरीश के कानों में बिच्छू के डक की तरह लगती है और वह रह-रहकर कुर्सी से उछल-सा पडता है! कभी माथे को पकडता है, कभी बाहर की ओर भागता है।]

हरीश नन्दन (दबी आवाज) रहीम, रहीम. ...वह भी कम्बख्त वही जाकर मर गया! सब ढेर कर दिया!

मोहिनी (फिर खखार कर कुछ हिम्मत के साथ) माफ

कीजिएगा। आप लोग शायद उकता गई हैं, लेकिन मैं थोड़ी ही देर में समाप्त कर दूंगी .

[फिर वही ताली, और इस बार बच्चों की करतल ध्वनि भी शामिल हो जाती है। अध्यापिका जी 'चुप-चुप!' कहकर शान्त करती हैं। हरीश फिर बेताबी से पुकारता है, 'रहीम, रहीम' कागज हाथ से गिर गया है। मोहिनी भी इन विघ्न-बाधाओं की आदी हो गई जान पड़ती है।]

मोहिनी तो मैं कह रही थी इस पाठशाला का जीवन छोटा ही है। दो बरस के अन्दर ही यहाँ की लड़कियों ने जितनी उन्नति कर ली है, इसका तो नमूना आप लोग देख ही चुकी हैं। सभानेत्री महोदया ने स्वयं अपने भाषण में इन लड़कियों के काम और स्कूल की पढ़ाई का उल्लेख करने की कृपा की है।

[करतल ध्वनि के लिए रुकती है, हरीश भी उत्सुकता से कान लगाये बैठा है, मगर हाय री नाउम्मेदी! एक भी ताली नहीं बजती!]

— इसलिए हमारा इतना साहस है कि हम उन्हीं के सन्मुख अपनी माँगें भी पेश करें। दुर्भाग्यवश न इस स्कूल का अपना मकान है, (फिर वही ताली) न बैंक में स्कूल के नाम कोई बड़ी रकम ही जमा है, (ताली) और न स्टाफ ही काफी है। (ताली) मतलब यह है कि स्कूल क्या है। एक अनाथ बच्चा है!

[इस बार ताली जोर से बजती है, बच्चे भी शामिल हो जाते हैं। हरीश साहब बेकरार होकर चिल्ला उठते हैं 'बन्द करो, बन्द करो!' नेपथ्य में कुछ हलचल सी

होती है, मोहिनी कुछ लडखडाकर रुक जाती है।
उद्विग्न मुद्रा में हेडमिस्ट्रेस का प्रवेश]

हेडमिस्ट्रेस सर सर, आखिरी पन्ना !

हरीश नन्दन आखिरी पन्ना ?

हेडमिस्ट्रेस जी, मेम साहव की स्पीच का आखिरी पन्ना शायद आपके पास ही रह गया !

हरीश नन्दन गज़ब ! (भाषण की प्रति के लिए अपनी सभी जेवो में हाथ डालते है लेकिन वहा नहीं है) पहले से नोच समझ कर देखा भी नही ! आप लोग भी खूब है !
(कुर्सी के ऊपर तलाश करते है।)

हेडमिस्ट्रेस सर सर, देरी हो रही है !

हरीश नन्दन यही तो था मेरे हाथ मे। अभी तो पढ रहा था मैं .

हेडमिस्ट्रेस वह तो नही है ऊपर वाली जेव में ?

हरीश नन्दन जी, वह वह मेरा रूमाल है ! हाँ, यह रहा ..
(हेडमिस्ट्रेस के पैर के नीचे दवे हुए कागज पर निगाह पड जाती है) आप खुद तो दवाये खडी है !
[हेडमिस्ट्रेस घवडा कर पैर के नीचे से कागज को उठाने के लिए झुकती है और उसी क्षण हरीश भी; दोनो का सिर टकरा जाता है ! हेडमिस्ट्रेस घवडा कर सिर उठाती है।]

हेडमिस्ट्रेस माफ कीजिएगा, सर !
[न जाने क्या समझ कर हेडमिस्ट्रेस झेंप कर कुछ मुस्करा भी देती है ।]

हरीश नन्दन (झल्लाकर कागज उठाकर उसमें से आखिरी पन्ना फाडकर हेड मिस्ट्रेस को थमाते हुए) लीजिए, लीजिए, फौरन जाकर मेम साहव को दे दीजिए फौरन !

[इससे पहले कि हरीश अपनी बात पूरी करे, नेपथ्य से मोहिनी की आवाज़ आती है ।]

मोहिनी इतने शब्दो इतना इतना कहकर मैं अपना भाषण समाप्त करती हूँ . और और आप सब को– सब महिलाओं को धन्यवाद देती हूँ ।. .

[हरीश और हेडमिस्ट्रेस एक दूसरे की ओर देखते हैं, हरीश के चेहरे पर अपरिमित व्यथा है ।]

हेडमिस्ट्रेस खतम भी हो गया ! उफ !

[तेजी से हाल में घुस जाती है थोडी देर बाद नेपथ्य से हेडमिस्ट्रेस की आवाज़ आती है]

— अब जलसा समाप्त हो गया है .. देखिए आप लोग अपने-अपने स्थान पर बैठी रहिए ! जब तक लेडी साहबा हाल के बाहर न पहुँच जायें ! शोर न मचाइए . . . बीच वाली महिलाएँ कृपया रास्ता दें ! . . . जी इधर से . . . इधर से ..

(नेपथ्य की हलचल कम होती जाती है ।)

हरीश नन्दन (आप ही आप) औरतों का जलसा और बीस खटराग ! गवर्नर साहब का मामला है । जो भी दोष हो अफसर के मत्थे ! . कहाँ का झंझट मोल ले लिया मैंने भी !

(रहीम का प्रवेश)

रहीम हुजूर, लेडी साहबा बहुत खुश-खुश जा रही है !

हरीश नन्दन लेडी साहबा खुश और खफा तो बाद में होंगी, पहले तुम मुझे बताओ कि किस अहमक ने मेम साहब की स्पीच के दरम्यान ताली बजवाने का इतज़ाम किया था ?

रहीम जैसा हजूर ने फरमाया था—

हरीश नन्दन — जैसा हुजूर ने फरमाया था। (तैश में) क्या मैंने यह फरमाया था कि जब मेम साहब रोये तो ताली बजे ?

रहीम — मेम साहब रोये ? हुजूर मेम साहब .

हरीश नन्दन — हाँ, हाँ मेम साहब स्कूल का दुखडा तो रो ही रही थी और उधर जोरो के साथ ताली बज रही थी! . और . और जब वह लेडी साहबा की तारीफ कर रही थी, तब सारा हाल गुमसुम, जैसे साँप सूंघ गया हो! . कुछ अक्ल भी है तुम लोगो मे ? कहाँ है वह ?

रहीम — हुजूर बाहर ही है।

हरीश नन्दन — बुलाओ, इसी दम बुलाओ।

रहीम — हुजूर कसूर .. ..

हरीश नन्दन — मैं कहता हूँ, फौरन उसे हाजिर करो।

[रहीम भीगी बिल्ली-सा बाहर जाता है और थोड़ी देर में एक बुर्केवाली औरत को साथ में लिये आता है। इस बीच में हरीश गुस्से में कभी कुर्सी पर बैठता है कभी घूमता है। बुर्केवाली जरा कद्दावर जान पड़ती है और कुछ झुकी सी पडती है !]

हरीश नन्दन — यही है क्या ? (बुर्केवाली से) बुर्का तो ऐसे ताना है जैसे तम्बू हो, मगर दिमाग की तीलियाँ भी कुछ कमी होती, ..

रहीम — हुजूर बात यह थी.....

हरीश नन्दन — बात क्या थी ? क्या जो कागज़ मैंने दिये थे, उसमें मेम साहब का भाषण लिखा हुआ नही था ?

रहीम — जी था तो..

हरीश नन्दन — क्या उसमें लाल पेन्सिल से उन स्थानो मे निशान नही लगे थे जहाँ तालियाँ बजानी थी ?

रहीम जी थे तो, लेकिन . . .

हरीश नन्दन लेकिन क्या ? . . बुर्के के अन्दर शायद इतना अंधेरा था कि लाल निशान सफेद हो गये।

रहीम हुजूर असल बात यह है कि इसे पढ़ना-लिखना आता ही नहीं !

हरीश नन्दन (मानो उबल पड़ता हो) क्या ! पढ़ना-लिखना ही नहीं आता ? तो किसने इसे तय किया था ? (बुर्के-वाली से) कितने रुपये मिले हैं तुम्हें ?

रहीम हुजूर .

हरीश नन्दन बताओ कितने रुपये मिले हैं ? . (जवाब नदारद !) क्या मुंह में ताला लगा है ? जवाब दो।

[उन्मुक्त विहग की भांति उल्लासपूर्ण गति से स्मितवदना मोहिनी का प्रवेश !]

मोहिनी किस पर गरम हो रहे हो ? वहाँ नहीं चलोगे ?

हरीश नन्दन कहाँ ?

मोहिनी (बुर्केवाली पर निगाह पड़ते ही कुछ चकित-सी रह जाती है) अरे यह तो वही है ?

हरीश नन्दन हां यह वही है जिसने एक नहीं सात दफे तुम्हारे भाषण के बीच में बेमौजू ताली बजाई थी ! अहमक ! जाहिल !

मोहिनी हाँ, भई, भद्द तो इसने करा ही दी, हालांकि . . .

हरीश नन्दन भद्द ! अरे इस कम्बख्त ने नाक ही तो कटवा दी, लेडी साहबा के सामने ! कैफियत पूछता हूँ तो जवाब नदारद देखो तो इस जाहिल की सूरत ! रहीम, खोल दो इसका बुर्का

मोहिनी हे हे, यह क्या गजब करते हो ? इतनी बेइज्जती क्यो करते हो इस बेचारी की ?

हरीश नन्दन बेचारी ? . यह बेचारी नही है (बुर्के वाली के करीब जाकर उसका बुर्का-फुर्ती के साथ खोलते हुए) यह है बेचारा ! मूछो वाला बेचारा !

[बुर्काफाश होते ही नजर पडता है गगा जमुनी मूंछों वाला एक पुरुष, करुणा और विनम्रता का मूर्तमान स्वरूप ! हाथ जोड कर याचना की मुद्रा में खडा है ! हरीश बुर्का खोलते वक्त उसकी तरफ न देख कर मोहिनी की ओर देखता है ऐसे ही जैसे कोई कलाकार अपनी अनुपम कलाकृति को प्रशसोन्मुख दर्शको को दिखा रहा हो ! लेकिन मोहिनी उसके चेहरे को देखकर चौंक पडती है !]

मोहिनी अरे, इसका चेहरा तो देखो ! यह तो वही वृद्ध जान पडता है जो उस रोज अपने मुकदमे की सिफारिश के लिए बगले पर

हरीश नन्दन हे ! (बुर्के वाले की तरफ देखता हुआ पीछे हटता जाता है) यह—भोला सिह है ? भो ला . सि ह (कुर्सी के पास पहुँच कर रुक जाता है और रहीम की ओर आखें गडाकर देखता है !) रहीम यह तो भोला सिह है ?

रहीम जी जी . हुजूर

हरीश नन्दन वही, भोला सिह जिसका मुकदमा मैंने खारिज कर दिया था ?

भोला सिह (ऐसे स्वर में जिसमें व्यग्य की गध भी नहीं है ;)

हुजूर के इकबाल से जज साहब की अदालत से मुकदमा तो बहाल हो गया ! .. .

हरीश नन्दन हूँ ..तो तुमने हमसे बदला लेने और हमें जलील करने का यह तरीका सोचा ? क्यों ?

भोला सिंह (**बहुत आजिजी के साथ**) नही, हुजूर आप ऐसा सोचिएगा तो मैं कही का नही रहूँगा ! जज साहब की अदालत से हो, चाहे हाई कोरट से, हुजूर की निगाह के बिना तो इस इलाके मे एक पत्ता भी नही खटक सकता ।

हरीश नन्दन तो फिर तुम्हारे इस बेहदापन की वजह ?

भोला सिंह हुजूर मैं तो आया था सलाम करने, रहीम भाई ने बताया कि पाँच मिनट के लिए किसी की जरूरत है, बुर्का लगाकर ताली बजाना है । मैंने सोचा हुजूर और मेम साहब की खिदमत का इससे अच्छा मौका कब मिलेगा ? मुझे क्या मालूम था कब ताली बजानी है ? जब देखा सब लोग चुप हैं, कुछ चहल-पहल चाहिए, तभी ताली बजा दी !

[**मोहिनी यह सब सुनते-सुनते, मुह में रूमाल दबाकर हँसी रोकती हुई कुरसी पर बैठ जाती है ।**]

रहीम हुजूर कुसूर इसका नही है । असल मे मौके पर कोई और आदमी तैयार ही नहीं हो रहा था !

हरीश नन्दन रहीम, तुमको आदमी तैयार कराने के लिए नाजिर जी ने कितने रुपये दिये थे ?

रहीम (**हिचकता हुआ**) हुजूर एँ ..

हरीश नन्दन कितने रुपये दिये थे । (**कडक कर**) जवाब दो !

रहीम हुजूर । पच्चीस !

हरीश नन्दन और वे पच्चीसो रुपये तुम्हारी जेव मे गये ? भोला-सिह ने तो मुफ्त काम किया होगा ? यही वात थी न ?

रहीम हुजूर . . हूँ .

हरीश नन्दन रहीम !

रहीम हुजूर !

हरीश नन्दन कितने वरस से तुम अरदली हो ?

रहीम हुजूर. . १५ वरस होने आये !

हरीश नन्दन आज से तुम अरदली से हटकर दफ्तर का काम करोगे ! न रहेगा वास न वजेगी वासुरी !

रहीम इस वार माफी दी जाय हुजूर, सरकार का .

हरीश नन्दन मै कुछ नही सुनना चाहता निकल जाओ मेरी आँखो के सामने से .

रहीम हुजूर .

हरीश नन्दन अभी, इसी दम !

(दोनो जाते है ।)

— वेईमान कही का . मट्टी ही ख्वार करा दी . ...

मोहिनी (हँसते हुए) अरे भई, तुम तो वेकार इतना विगड रहे हो ! ऐसी तो कोई वात हुई नही है कि तुम इतना आपे से वाहर हो जाओ !

हरीश नन्दन खूव ! यानी आप हँस रही है !.. ...

मोहिनी . वात ही हँसने की है. . .मुझे तो गुमान तक नही हुआ कि देवियो के जलसे मे वुर्के के अन्दर यह देवता विराजमान है ! . अगर थोडी अक्लमन्दी से इसने काम लिया होता तव तो मामला वना-वनाया था !

हरीश नन्दन वही तो मलाल है। इतना अच्छा प्लान था ! सव ढेर

हो गया ! क्या करे, तकदीर ही मे लाट साहब की नाराजगी लिखी थी . ....

मोहिनी — इतने मायूस न बनो !

हरीश नन्दन — (खीझ के साथ) तुम तो बहुत खुश मालूम देती हो !

मोहिनी — मेरी बात पूरी सुनो तो तुम भी खुश हो जाओगे !

हरीश नन्दन — सुने ।

मोहिनी — लेडी साहबा बहुत खुश थी ।

हरीश नन्दन — उस अटपटे भाषण के बावजूद ?

मोहिनी — भाषण ही से तो बहुत प्रसन्न हुई । बोली कि जब मैं तुम्हारे बराबर थी तो मैं तो एक वाक्य भी पूरा नही बोल सकी, किसी दूसरे से पढवा दिया था अपना भाषण । तुमने तो बहुत मजे का भाषण दिया है ।

हरीश नन्दन — (आखो में चमक) सच ?

मोहिनी — फिर कुछ शक्ल-सूरत की तारीफ करने लगी, बोली कि तुम्हारे मिया बहुत लकी (भाग्यवान) हैं !

हरीश नन्दन — (जैसे बाछें खिली हो) सच ?

मोहिनी — (कुछ शर्माकर) क्योंकि उन्हे तुम्हारे जैसी बीवी मिली है । सर्विस मे ऐसी बीवी होना तरक्की की उम्मीद बढा देता है ।

हरीश नन्दन — मोहिनी, यह तो कमाल की बात हो गई ! हो सकता है लाट साहब कुछ मुझ मे दिलचस्पी लेने लगें ! . .

मोहिनी — वही तो ! लेडी साहबा कहने लगीं कि राजधानी मे बुजुर्ग महिलाएँ तो कई हैं ! जरूरत है कुछ कम उम्र के जोडो की .

हरीश नन्दन — (हाथ पर हाथ मारकर) मार ली बाजी ! राजधानी की सेक्रेटेरिएट में अक्सर जगह खाली होती रहती

है या या लाट साहब के निजी दफ्तर में भी कुछ ऊँचे ओहदे हैं वहाँ पहुँचने पर तो तुम्हें भी लेडी साहबा के कुछ काम आने का मौका मिल जायगा।

मोहिनी तो फिर जल्दी चलो।

हरीश नन्दन तुम तो समझ बैठी कि लाट साहब अभी हमारे हाथ में हुक्म दे देंगे।

मोहिनी मैं कह रही थी कि स्टेशन चलो. . .

हरीश नन्दन (घड़ी देखता हुआ) लाट साहब की गाड़ी तो दो घंटे बाद आती है।

मोहिनी लेडी साहबा ने कहा है कि तुम लोग जल्दी आ जाओ। चाय हमारे सैलून में ही पीना।

हरीश नन्दन भई वाह मोहिनी! (कमर में हाथ डालकर झूमते हुए) तुमने तो मेरा मामला ही साध दिया!

मोहिनी (कमर छुड़ाते हुए) हटो भी! क्या बचपना करते हो! . ..

हरीश नन्दन लाट साहब कह रहे थे कि हम लोग बिल्कुल बच्चे लगते हैं।

मोहिनी तभी शायद बातों-बातों में लेडी साहबा ने मेरी उम्र भी पूछ ली! मैंने कहा १९. ....

हरीश नन्दन (कुछ चौंक कर) १९?

मोहिनी हाँ १९ बरस . क्यों, सोच में क्यों पड़ गये?

हरीश नन्दन तुमने कहा तुम्हारी उम्र १९ बरस है?

मोहिनी तो क्या गलत कहा? देखो पैदायश का सन्—

हरीश नन्दन · मोहिनी सच बताओ, तुम्हारी उम्र १९ बरस ही है?

मोहिनी यह लो! यह बात तो तुम्हें शादी होने से पहले पूछ लेनी चाहिए थी। देखो पैदायश का सन्.. .

हरीश नन्दन — मोहिनी तुम्हे ठीक याद है ?

मोहिनी — यह खूब रही ! बात पूरी सुनते नही, अपनी ही कहे चले जा रहे हो ! देखो पैदायश का सन्

हरीश नन्दन — (कधे हिलाकर कुर्सी पर बैठते हुए) कुछ भी हो, मैंने तो तुम्हारी उम्र २२ बरस बता दी !

मोहिनी — (कुचित भ्रू) २२ बरस बता दी ! किसे ?

हरीश नन्दन — लेडी साहबा को !

मोहिनी — (रोष बढ़ रहा है) तुमने लेडी साहबा को मेरी उम्र २२ बरस बताई ? कब ?

हरीश नन्दन — उन्हे अस्पताल लाते वक्त मोटर मे ।

मोहिनी — (उबल कर) तुम्हे शर्म तो न आई होगी मुझे बुढिया बनाते वक्त !

हरीश नन्दन — बुढिया ?

मोहिनी — बुढिया नही तो क्या ? मै २२ बरस की लगती हूँ ? (भाव और शब्द एक प्रवाह में !)ज़लील करने का और कोई तरीका नही मिला था तुम्हे ? यह कौन जन्म का बदला लिया है ? तुम्हे मेरी यह कदर करनी थी तो शादी से पहले क्यो न कह दिया था ? तुम्हारे लिए किसी बुढिया बीवी का ही इन्तजाम कर देती ! मेरी यह बेइज़्ज़ती तो न होती--चार जनो के सामने !

हरीश नन्दन — अरे भई मेरा मतलब

मोहिनी — अब मै कौन सा मुह दिखाऊँगी लेडी साहबा को ? वह भी सोचेगी कि कैसी बीवी है और कैसे मियाँ ! मै पूछती हूँ कि तुम्हे कौन सी बात दीखी मेरे अन्दर जो तीन बरस तुमने जोड दिये मेरी उम्र मे ? चेहरा ?

चाल ? आंखो की नज़र ? (रुआसी) मेरा तो जी करता है अपने घर चली जाऊँ ! तुम्हारे यहाँ रहकर तो फिकर ही मे आदमी मर जाय। देहात की ज़िन्दगी, मकान है तो सौ साल पुराने, चपरासी है सो पच्चीस साल पुराने, फर्नीचर पुराना, सारी जिन्दगी पर पुरानापन छाया हुआ है ! इसमे तुम्हे सूझेगा क्या ? बुढापा !

हरीश नन्दन मै कहता हूं, सुनोगी भी......

मोहिनी ऐसे भी आदमी है जो अपनी बूढी बीवियो को भी जवान दिखाने की कोशिश मे लगे रहते है ! मि० अरुण को ही देखो, उनकी बीवी से जब पूछो तो उम्र बतायेंगी २६ बरस ! न जाने कब से वह अपनी आयु २६ बरस बनाती आ रही है, मगर मजाल क्या कि मि० अरुण ने कभी चू भी की हो !

हरीश नन्दन लेकिन मि० अरुण के बाल सफेद हो चले है !

मोहिनी उससे क्या होता है ? दिल तो उनका बूढा नही हुआ। मगर तुम तो कभी-कभी ऐसी बाते करते हो जैसे भीतर से बूढे हो चले ! दिल में उमग रखो तो बाहर की झुर्रियाँ जेल की सीकचे नही बन सकती, अरमानो को रगीन रखो तो बालो की सफेदी जवानी का सफेद कफ़न नहीं बन सकती। मैं पूछती हूँ, आदमी बुजुर्ग बनने के लिए क्यो आतुर हो ? बुजुर्गीयत तो प्रतिध्वनि है कमजोर, धीमी होती हुई आवाज़ की, जो समस्याओ की चट्टानो से टकराकर बेबसी के साथ, सिसकती-सी वापस आती है। मैं चाहती हूँ हमारा जीवन बुलन्द आवाज़ो की झड़ी हो, एक के बाद एक

जानदार आवाज जो उन चट्टानो को ढाहती चले, उनसे टकराकर वापस न आय !.....

हरीश नन्दन (जिसने अब अपने को सम्हाल लिया है और जो इस भाषण को मुस्कान मिश्रित सजीदगी के साथ सुनता रहा है) हियर, हियर .हियर हियर !

[ताली बजाता है। नेपथ्य से भी तालियो की आवाज आती है । हरीश फिर ताली बजाता है और दुबारा नेपथ्य से तालियो की आवाजें आती है]

— कौन ? हेडमिस्ट्रेस है क्या ?

(हेडमिस्ट्रेस का प्रवेश)

हेडमिस्ट्रेस सर, वह अखबार वाले बाबू आये है और मेम साहब के भाषण की रिपोर्ट माँगते है !

हरीश नन्दन उनसे बोलिए कि हम एक नही दो-दो भाषणो की रिपोर्ट देगे ।

मोहिनी दो दो ?

हरीश नन्दन हा, मोहिनी, तुम्हारा दूसरा वाला भाषण भी लाजवाब रहा है ! क्यो न हेडमिस्ट्रेस साहबा, आपको तो पसद आया न ? आपने तो तालियां भी बजाई ?

मोहिनी तो आप छिपकर हम लोगो की बाते सुन रही थी ?

हेडमिस्ट्रेस (कुछ हिचकिचाकर ! कभी हरीश कभी मोहिनी की तरफ देखती हुई) जी, जी, मैंने समझा समझा कि

मोहिनी आपने सब समझा आप लोग ....

हरीश नन्दन कोई बात नही हेडमिस्ट्रेस साहबा, आप अखबार-नवीस से कह दीजिए कि हमारे बगले पर मिले (हेडमिस्ट्रेस छुटकारा सा-पाकर पृष्ठ-द्वार की ओर जाती है ।)

हरीश नन्दन और देखिए हमारी मोटर इधर पीछे की तरफ ही भेज दीजिए !

(हेडमिस्ट्रेस का प्रस्थान)

— क्यों बिगडती हो ? तुम्हारा दूसरा वाला भाषण इतना ज़ोरदार रहा कि थोडी देर और बोलती तो यहाँ हजारो की भीड ही जमा हो जाती...वस मोहिनी मैंने तय कर लिया !

मोहिनी क्या तय कर लिया ?

हरीश नन्दन यही कि अगले इलेक्शन मे तुम्हे असेम्वली की सीट के लिए खडा किया जायगा। गाँव-गाँव मे तुम्हारे ज़ोरदार भाषण होगे, हज़ारो की तादाद मे स्त्री और पुरुष जमा होगे। लाखो पोस्टर तुम्हारी तसवीरो के साथ वटेगे और फिर एक दिन घोषणा होगी श्रीमती मोहिनी नन्दन एम० एल० . .ए० .....

(रहीम का प्रवेश)

मोहिनी धत्---

रहीम हुजूर, मोटर आ गई है।

हरीश नन्दन रहीम, हम आज वहुत खुश है। और मेम साहव भी !

रहीम हुजूर !

हरीश नन्दन इसलिए मेम साहव की मशा है कि तुम फिर से अरदली के काम पर वहाल किये जाओ !

मोहिनी मेरी मशा ?

रहीम हुजूर का इकवाल दिन दूना रात चौगुना हो ! ये कागजात मोटर मे रख दू हुजूर ?

हरीश नन्दन हाँ !

(रहीम का प्रस्थान)

हरीश नन्दन चलो! मेरी होने वाली एम० एल० ए०, लेडी साहबा की चाय पर जाना है।

मोहिनी बातों को टालना तो तुम खूब जानते हो। बात तो हो रही थी कुछ और तुमने छेड़ दी दूसरी तान..

हरीश नन्दन अरे, वह बात? वह तो मैं लेडी साहबा से कह दूंगा कि मैंने २२ तो अपनी उम्र बनाई थी, तुम्हारी वही १९ है! कह दूंगा मैं उनके सवाल को गलत समझा था!

मोहिनी (आगे चलते हुए) तुम अकसर बातों को गलत समझते रहते हो.... .

हरीश नन्दन लेकिन मोहिनी! (रुकता है) मोहिनी! एम० एल० ए० बनने के लिए तो उम्र २५ वर्ष की होनी चाहिए।

मोहिनी एं?

हरीश नन्दन और तुम अभी १९ बरस की हो।

[दोनों एक दूसरे की ओर देखते हैं, हरीश किंचित् हँसता है, मोहिनी भी हँसती है, धीरे-धीरे करके दोनों अट्टहास में शामिल हो जाते हैं।]

(पर्दा गिरता है।)

ओ मेरे सपने

पात्र

मगनचन्द
सूरजभान
गोपीनाथ
कछी
विमल
सरिता
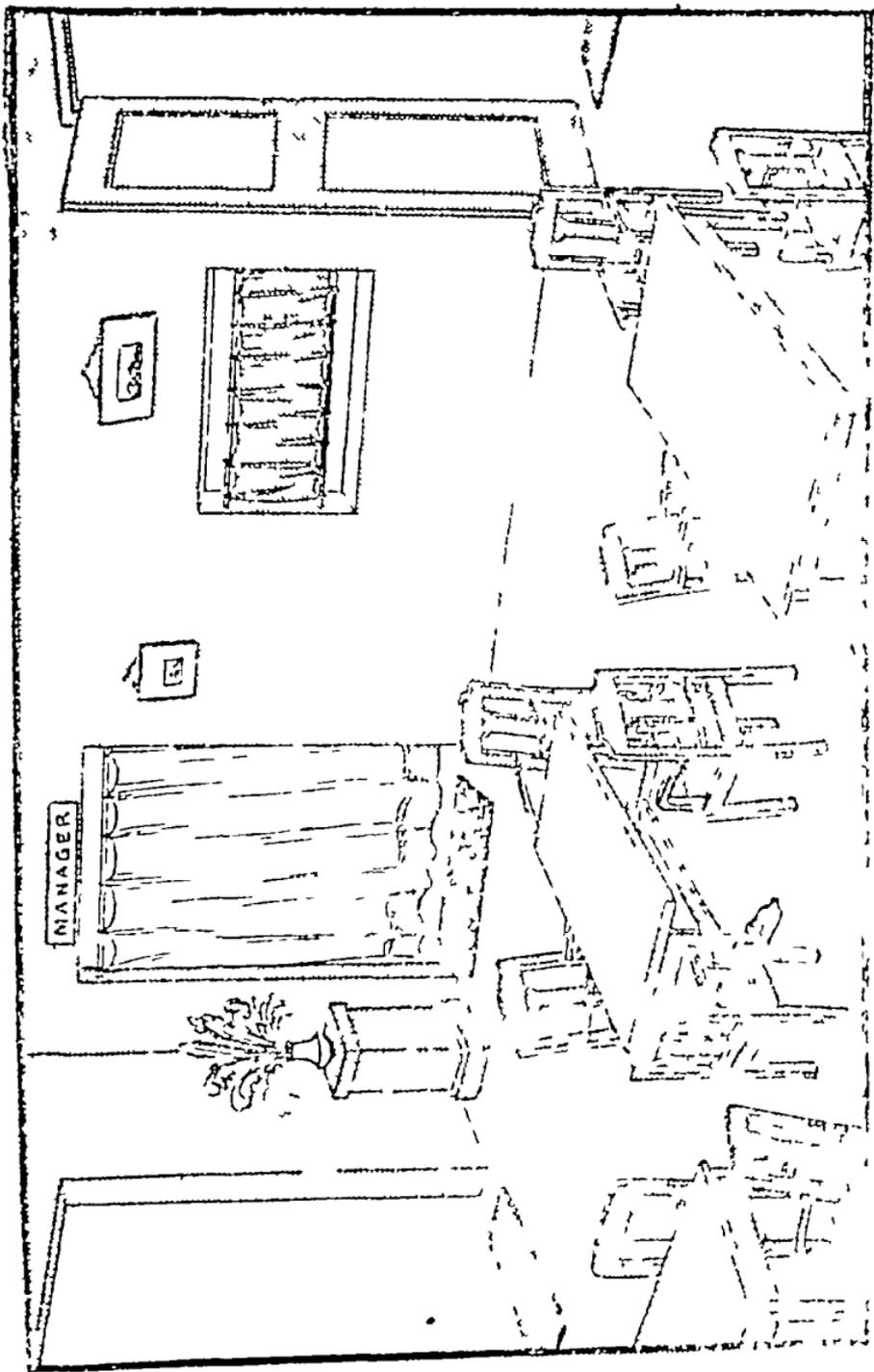
ओ मेरे सपने—पहला दृश्य

[स्थान, किसी भी ऐसे नगर का एक रेस्तरां या काफी हाउस जहां कोई विश्वविद्यालय है। रेस्तरां के इस हिस्से में तीन-चार मेज हैं, हरएक के चारों तरफ कुछ कुर्सियां। पीछे एक दरवाजा है, जिस पर पर्दा टंगा है और ऊपर लिखा है—'मैनेजर'। एक नौकर सामान लेकर उसी दरवाजे से आता-जाता है। बाकी लोगों के लिए आने-जाने का मार्ग दाहिनी ओर है। दीवारों पर विविध भांति के कैलेंडर और पोस्टर लगे हैं। सध्या बीत चुकी है, लगभग ८॥ बजने को आये हैं। गाहक छंट गये हैं, बचे हैं तीन शौकीन जो आदत से मजबूर होने के कारण रेस्तरां को घोसला माने हुए हैं। तीनों युवक हैं, चाय का दौर चल रहा है और बुलन्द आवाज में वाद-विवाद भी।]

सूरजभान नहीं मगनचन्द, नहीं, नहीं। मालिनी का मुकाबिला माला क्या, कोई भी फिल्म-एक्ट्रेस नहीं कर सकती। याद नहीं है, जब मालिनी ने मेवानन्द की हथेली पर एक पैर और घोड़े पर दूसरा पैर रखकर दो गाने की लड़ी गाई थी ?

गोपीनाथ वही न ? (गाता हुआ)

'भोले भोले, मन के घोडे,
एजी, मुझको उडाये चलो !'*

सूरजभान और तभी घोडा भाग निकलता है।

मगनचन्द मालिनी को लेकर ?

सूरजभान जी नही। इसके मानी यह है कि आपने इस फिल्म को देखा ही नही।

मगनचन्द बात यह है सूरजभान, कि उन दिनो छमाही इम्तहान हो रहे थे।

गोपीनाथ उससे क्या होता है ? हम तो इम्तहान के दो पेपरो के बीच मैटिनी शो देख चुके है।

सूरजभान मतलब यह कि आप नही जानते कि घोडे के भाग निकलने पर मालिनी कहाँ गिरती है ?

मगनचन्द (उत्सुकता से) कहाँ गिरती है ? बताओ न, गोपीनाथ !

गोपीनाथ (विजयोल्लास-सहित) मेवानन्द की गोद में।

मगनचन्द गोद में ?

सूरजभान (उमगपूर्ण स्वर) मेवानन्द एक हाथ से उसकी टाँगे सँभालता और दूसरे से उसकी बाँहे पकडता है।

मगनचन्द बाँहे पकडता है ?

गोपीनाथ (दूसरा विजयोल्लास) और मालिनी सहारा लेने के लिए मेवानन्द की गर्दन मे हाथ डाल देती है।

मगनचन्द (मानो उछल ही पडेगा) गर्दन मे हाथ ?

सूरजभान जी ! और मेवानन्द की ओर हसरतभरी नजर से देखने

---

*प्रसिद्ध फिल्मी गीत 'गोरे गोरे मन के भोले' की तर्ज पर।

लगती है । . . . बड़ी ही प्यारी सूरत लगती है उन दोनों की उस समय !

मगनचन्द (गहन उत्सुकता से) तब . . . उसके बाद . . क्या होता है ?

सूरजभान (कुछ सोचता-सा) उसके बाद . . .

मगनचन्द (चरम-उत्सुकता से) हाँ, उसके बाद . . . . .

(रेस्तराँ के नौकर कछी का प्रवेश)

कछी बाबू जी, गरम चिप्स तैयार है ।

मगनचन्द (कुछ झुंझलाहट से) गरम चिप्स ! . . . . ऊँह !

सूरजभान (कुछ आश्वस्त होकर) गरम चिप्स !

गोपीनाथ चिप्स ! . . . . अच्छा ले आओ कछी ।

(कछी जाता है ।)

मगनचन्द लेकिन गोपी, बताओ न, उसके बाद मालिनी और मेवानन्द क्या करते हैं ?

गोपीनाथ उसके बाद . . . . उसके बाद तो वही गाना होता है ।

मगनचन्द (निराशोच्छ्वास) गाना ! बस ?

गोपीनाथ वही गाना । (गाता हुआ)

"मैं तुझको कार ले दूगा, ओ चंदा ।"*

(कछी चिप्स की तश्तरिया रखकर चला जाता है ।)

सूरजभान बस उसी सीन को देखकर मैंने यह बुशर्ट पहननी शुरू की । देखते नहीं, मालिनी की तसवीर इसकी पाकिट पर छपी हुई है । 'दिल के आइने में है तस्वीरे यार, जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली !'

---

*फिल्मी गीत 'मैं तुमको प्यार कर लूंगा, ओ चन्दा, चन्दा' की तर्ज पर ।

मगनचन्द · मैंने भी अपनी पतलून का स्टाइल बदल लिया, जब मे माला को देखा—'फव्वारा' फिलम में।

गोपीनाथ वही न जिसमें वह पतलून पहने हुए कीचड भरे खेतो के बीच से गुजरती है ?

मगनचन्द क्या अदा है माला की उस समय। पतलून की जेबों मे हाथ, आँखो मे अरमान, पैरो मे चचलता और होठो पर गीत। (गहरी सास लेता हुआ) हाय री माला! तुझे भूलने के लिए मैं आँखे बन्द करता हूँ (आखें बन्द करता है) तो तेरी वह बाँकी छवि मेरी बन्द आँखो मे भी चमक कर मेरे दिल मे और भी अँधेरा भर देती है। (बन्द आखो झूमता है) माला! . माला!

सूरजभान और मालिनी। मेरी मालिनी! हे मधुर मालिनी, तेरी तसवीर की झाकी लेते ही (बुशशर्ट पर छपी तसवीर को देखता है) मैं इतना मदहोश हो जाता हूँ कि कोई चाहे तो मेरा आपरेशन कर दे। (देखते-देखते आखें झपक जाती हैं) मालिनी! मालिनी!

गोपीनाथ दोनो-के-दोनों अपनी-अपनी आराध्या के ध्यान म मग्न है। अब मैं क्या करूँ? हाँ 'फव्वारा' फिल्म मे हीरो का दोस्त क्या करता है? क्या करता है? वह लडकी के बाप यानी सेठ के पास जाकर कहता है—'सेठ, तुम्हारे सीने मे दिल है? दिल मे खून, खून मे रगत, रगत में—लेकिन, लेकिन यहाँ न तो माला का बाप है, न मालिनी का पापा—तब तब तो गरम चिप्स की ही एक प्लेट और मँगा लु। कल्ली! ओ कल्ली!

[दाहिने दरवाजे से एक अद्यतन सभ्य महिला का प्रवेश! नैसर्गिक सौंदर्य के होते हुए भी लिपस्टिक,

पाउडर इत्यादि का आवरण स्पष्ट है, लेकिन अतिशय नहीं। पोशाक—शलवार, कमीज, कढी हुई वास्कट या जो भी तत्कालीन फैशन है। कमसिन है या जान पडती है, यह तो आजकल के सौंदर्य-उपादानो की बदौलत हम-आप निश्चित रूप से कह ही नहीं सकते। हा, महिला के रूपवती होने में सदेह की गुजाइश नहीं है। हाथ में पर्स, नये ढंग का बटुआ है। और नाम ? नाम रख लेते है सरिता !]

सरिता (गोपीनाथ के निकट आकर) क्या आप ही इस रेस्तरा के मैनेजर है ?

गोपीनाथ (इस अप्रत्याशित सौंदर्यवर्तुल की लपेट में आता हुआ-सा) मैं मैं मैनेजर। (आखें सरिता पर गड़ी है, लेकिन मगनचन्द को एक हाथ से हिलाता हुआ) मगनचन्द, मगन . !

[मगन आंखें खोलकर भौंचक्का-सा सरिता को देखता है।]

सरिता क्या ये मैनेजर है ?

गोपीनाथ (वही दशा) मैनेजर। (इस बार सूरजभान को हिलाता है) सूरजभान ! सूरज !

सरिता तो क्या (सूरजभान की तरफ इशारा करती हुई) ये मैनेजर है ?

गोपीनाथ मैं मैनेजर। (कंछी आता हुआ दीखता है।) हाय, मैं मैनेजर क्यो न हुआ ! कंछी !

कंछी (सरिता के निकट आकर) क्या हुकुम है बीबीजी ? चाय लाऊँ ?

मगनचन्द मैंने भी अपनी पतलून का स्टाइल बदल लिया, जब मैं माला को देखा—'फव्वारा' फिल्म में ।

गोपीनाथ वही न जिसमें वह पतलून पहने हुए कीचड भरे खेतों के बीच से गुजरती है ?

मगनचन्द क्या अदा है माला की उस समय । पतलून की जेबों में हाथ, आंखो मे अरमान, पैरो मे चचलता और होठो पर गीत । (गहरी सांस लेता हुआ) हाय री माला ! तुझे भूलने के लिए मैं आँखे वन्द करता हूँ (आखें बन्द करता है) तो तेरी वह बाँकी छवि मेरी वन्द आंखो मे भी चमक कर मेरे दिल में और भी अँधेरा भर देती है। (वन्द आखो झूमता है) माला ! . माला !

सूरजभान और मालिनी। मेरी मालिनी ! हे मधुर मालिनी, तेरी तसवीर की झाकी लेते ही (बुशशर्ट पर छपी तसवीर को देखता है) मैं इतना मदहोश हो जाता हूँ कि कोई चाहे तो मेरा आपरेशन कर दे । (देखते-देखते आखें झपक जाती है) मालिनी ! मालिनी !

गोपीनाथ दोनो-के-दोनो अपनी-अपनी आराध्या के ध्यान मे मग्न है । अब मैं क्या करूँ ? हाँ 'फव्वारा' फिल्म मे हीरो का दोस्त क्या करता है ? क्या करता है ? वह लडकी के बाप यानी सेठ के पास जाकर कहता है—'सेठ, तुम्हारे सीने मे दिल है ? दिल मे खून, खून में रगत, रगत में—लेकिन, लेकिन यहाँ न तो माला का बाप है, न मालिनी का पापा—तब तब तो गरम चिप्स की ही एक प्लेट और मँगा लु। कछी ! ओ कछी !

[दाहिने दरवाजे से एक अद्यतन सभ्य महिला का प्रवेश । नैसर्गिक सौंदर्य के होते हुए भी लिपस्टिक,

पाउडर इत्यादि का आवरण स्पष्ट है, लेकिन अतिशय नहीं। पोशाक—शलवार, कमीज, कढी हुई वास्कट या जो भी तत्कालीन फैशन है। कमसिन है या जान पडती है, यह तो आजकल के सौंदर्य-उपादानों की बदौलत हम-आप निश्चित रूप से कह ही नहीं सकते। हा, महिला के रूपवती होने में सदेह की गुजाइश नहीं है। हाथ में पर्स, नये ढंग का बटुआ है। और नाम ? नाम रख लेते हैं सरिता !]

सरिता (गोपीनाथ के निकट आकर) क्या आप ही इस रेस्तरा के मैनेजर है ?

गोपीनाथ (इस अप्रत्याशित सौंदर्यवर्तुल की लपेट में आता हुआ-सा) मै मै मैनेजर। (आंखें सरिता पर गडी है, लेकिन मगनचन्द को एक हाथ से हिलाता हुआ) मगनचन्द, मगन !

[मगन आंखें खोलकर भौंचक्का-सा सरिता को देखता है।]

सरिता . क्या ये मैनेजर है ?

गोपीनाथ (वही दशा) मैनेजर। (इस बार सूरजभान को हिलाता है) सूरजभान ! सूरज !

सरिता तो क्या (सूरजभान की तरफ इशारा करती हुई) ये मैनेजर है ?

गोपीनाथ मै मैनेजर। (कंछी आता हुआ दीखता है।) हाय, मै मैनेजर क्यो न हुआ ! कछी !

कछी (सरिता के निकट आकर) क्या हुकुम है बीबीजी ? चाय लाऊं ?

सरिता नही। हमे एक पैकिट काफी की जरूरत है। सुना है, इस रेस्तरा मे काफी ताजा पीसकर सप्लाई की जाती है।

छंछी जी.. .जी . हा। अन्दर आफिस मे मैनेजर साहब बैठे है। मै अभी उन्हे खबर देता हू।

सरिता मैनेजर साहब आफिस मे है? हूँ। (गोपी और उसके साथियो पर प्रतारणा-पूर्ण दृष्टि डालती हुई) ठहरो, मै भी चलती हूँ।

(छंछी और सरिता मैनेजर के आफिस में घुस जाते है।)

सूरजभान गोपी, गोपी! यह मैने क्या देखा?

गोपीनाथ काश, मै मैनेजर होता।

मगनचन्द गोपी यह स्वप्न था या सत्य? ठीक वही सूरत, ठीक वही मुद्रा!

सूरजभान (मगन चन्द पर चुनौती पूर्ण दृष्टि डालते हुए) क्या मतलब तुम्हारा, ठीक वही सूरत, ठीक वही मुद्रा! क्या तुम समझते हो कि खुशबू की महक की तरह जो यह लडकी अभी यहा आई थी वह. .

मगनचन्द ठीक माला की तरह है! बिल्कुल वही छवि, वही बाँकी मुस्कान, वही

सूरजभान मगनचन्द, तुम्हारी आँखे है या बटन? क्या तुम देख नही पाते कि यह जो लडकी बिजली की तरह चमकी और आशा की तरह ओझल हुई, वह और कोई नही, हजारो की आंखो की तारा और मेरी कल्पना की देवी, मालिनी की हूबहू तसवीर थी। अरे, मैने जो आँख खोली तो समझा कि इस बुशशर्टवाली तसवीर की छाया किसी शीशे मे पड रही है!

मगनचन्द सूरजभान, तुम मेरे दोस्त हो, लेकिन इसके मानी यह नही कि मैं तुम्हे एक अनिंद्य सुन्दरी की निन्दा करने दू। भला जो माला के अनुरूप है, उसकी तुलना क्या मालिनी-जैसी छिछोरियो से की जानी चाहिए ?

सूरजभान मगनचन्द, याद है 'पोखर की सुन्दरी' फिल्म मे हीरो ने उस बकवासी का क्या इलाज किया था ?

मगनचन्द क्या किया था ?

सूरजभान उसने उसे बायें हाथ से उठाकर उछाल दिया था जिससे वह पेड की डाल पर जा अटका था । आज मालिनी की झलक पाकर मेरे खून मे भी वही जोश उमड रहा है ।

मगनचन्द सूरजभान, तुम्हारी ये खोखली धमकियाँ मुझे डिगा नहीं सकती। मैंने न जाने कितनी बार माला की खातिर अपना खून बहाया है—अनगिनती सपनो मे !

[दोनों एक दूसरे की ओर सघर्ष-कटिबद्ध मुद्रा से देखते हैं और कमीजो की बाजू चढाते है। परिस्थिति में तनाव और क्षण भर का नीरव।]

गोपीनाथ दोस्तो, थोडा और, थोडा और !

सूरजभान (झुझलाहट से) क्या थोडा और ?

गोपीनाथ (सोत्साह) तुम दोनो थोडा और लडो। एक दूसरे पर कुर्सियो से वार करो। और तब 'बीस महल' के हीरो की तरह तुममे से एक घायल हो जायगा। माथे से खून बहने लगेगा।

(नाटकीय मुद्रा)

मगनचन्द दोनो के ?

गोपीनाथ किसी एक के। और तब मै विश्वासपात्र मित्र की

तरह भागा-भागा जाऊँगा, और बुला लाऊँगा उसी खूबसूरत बला को, जो अभी अन्दर गई है। कहूँगा उससे . ..

सूरजभान क्या कहोगे ?

गोपीनाथ कहूँगा 'चलो मेरे साथ और देखो तुम्हारी नादान खूबसूरती ने क्या गजब ढाया है'। . ..बदहवास-सी वह दौड़ी आयगी। बाल बिखरे होंगे, मगर पाउडर जमा होगा। और आते ही वह गिर पडेगी।

मगनचन्द कहाँ ?

गोपीनाथ तुम पर मगनचन्द या सूरजभान तुम पर! . जो भी घायल होगा जिसके भी माथे पर से खून बह रहा होगा। (दोनो अपना-अपना मस्तक सहलाते है, शायद खून हो!) सिर गोद मे ले लेगी। आहिस्ता से बालो को सहलायेगी। ..शायद खून भी पोछे। मैं उसकी तरफ दर्दभरी नजर से देखता होऊँगा और उसकी डबडबाई आँखें अपने घायल हीरो पर लगी होगी। और तब

सूरजभान (चरमोत्सुकता से आप्लावित) और तब ?

गोपीनाथ और तब, दबे हुए, भीतरी आसुओं से, गीले गले मे, उसका मन्द, जादू भरा स्वर निकलेगा। वही गाना. अरे वही गाना!

गाता है—

इक आम के टुकडे चार हुए,
इक यहाँ गिरा इक वहाँ गिरा।
पर हाय तुझे क्या मिला सनम,
गुठली भी नही, गूदा भी नहीं।

छिलके पै भला क्यों फिसल पडा ?
मेरा दिल भी तो था, चिकना-सा घडा,
चिकना-सा घडा, चिकना-सा—*

[गाने के समाप्त होने से पहले ही मैनेजर के दफ्तरवाले दरवाजे से सरिता आती है और पीछे-पीछे चार पैकिट लिए हुए कछी। गाना सुनकर सरिता कुछ ठिठकती है। तीनों को देखकर कुछ मुस्कराती है, फिर आहिस्ता से खखारकर दाहिने दरवाजे से बाहर निकल जाती है। पीछे-पीछे कछी।

सहसा उसके ओझल होते हुए दुपट्टे पर सूरजभान और मगनचन्द की निगाह पडती है और गीत के जादू से मानो छिटककर वे खडे हो जाते है और फिर एक साथ गोपी के हाथ पकडकर झकझोरते है।]

सूरजभान गोपी ! गोपी !

(गोपी गाये जा रहा है।)

मगनचन्द गो ओ पी।

गोपीनाथ (इस विघ्न से झुंझलाकर गाने को अधूरे में रोककर) क्यों गला फाड रहे हो ? सारा मज़ा ही किरकिरा कर दिया।

मगनचन्द अरे वह तो चली गई।

गोपीनाथ वह ?

सूरजभान नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा। न मुझे मालिनी मिली और

मगनचन्द न मुझे माला !

---

*प्रसिद्ध फिल्मी गीत 'इस दिल के टुकडे हजार हुए', की तर्ज पर।

गोपीनाथ तुम्हारा मतलब है कि जो लडकी अभी काफी लेने आई थी वह वह चली भी गई ?

सूरजभान जी हां। और आप गाते ही रहे। (मुह बनाते हुए) चिकना-सा घडा चिकना-सा घडा।

गोपीनाथ (कुछ रुककर) हूं ! (सोचता हुआ) लेकिन .. लेकिन यह हो कैसे सकता है ?

सूरजभान क्यो नही ?

मगनचन्द तुम भी गोपी

गोपीनाथ (अधिकारपूर्ण स्वर में) क्योकि ऐसा किमी भी फिल्म मे नही हुआ। याद करो। हीरोइन सामने मे निकल जाय और हीरो के कान पर जू भी न रेगे।

मगनचन्द तुम अपने को हीरो समझते हो क्या ?

सूरजभान मेढकी को भी जुकाम होते लगा।

(कछी का प्रवेश)

गोपीनाथ यह लो, कछी वापस आ गया। क्यो भई कछी, कहा गई वह ?

कंछी कौन बाबूजी ?

गोपीनाथ अरे वही, जो मैनेजर साहब को पूछ रही थी।

कछी यह तो मालूम नही, किधर जा रही है वह बीबीजी। पर मैं काफी के पैकिट उनकी मोटर मे रख आया हूँ।

[दूसरी मेज पर से ट्रे उठाता है और दीवार पर टँगा झाडन]

सूरजभान मोटर !

मगनचन्द मोटर ! उनकी मोटर ! ! कछी, मोटर चली गई क्या ?

छोकरी मेरे सामने तो गई नही थी। ड्राइवर तो दीखा नही। शायद खुद चलाती है।

सूरजभान खुद चलाती है? मगन, वह मोटर खुद चलाती है!

मगनचन्द और मोटर अभी गई नही है सूरज! अभी—

सूरजभान मौका है। बिल्कुल वैसा ही जैसा मेवानन्द ने मालिनी के लिए

मगनचन्द जैसा मजल ने माला के लिए .....

गोपीनाथ किस फिल्म मे?

(लेकिन सूरज और मगन उसकी उपेक्षा ही करते है।)

सूरजभान मगन, अभी चलो!

मगनचन्द फौरन चलो, सूरज, फौरन!

[दोनो तेजी से बाहर की तरफ भागते है। गोपी पीछे-पीछे पुकारता जाता है।]

गोपीनाथ अरे भई, मुझे तो बताओ, किस फिल्म में? सूरज! ओ मगन, मगन ..

(प्रस्थान)

छोकरी (प्लेट और प्याले ट्रे में रखता हुआ) खब्ती है तो क्या, इन्हीं बाबुओ की बदौलत तो होटल चलता है। सवेरे चाय-चिप्स, दोपहर को चाय-चिप्स, शाम को सनीमा के पहले चाय-चिप्स, सनीमा के बाद चाय-चिप्स। सनीमा न देखें तो चाय-चिप्स हजम कैसे हो? हमारे भी पैसेवाले मा-बाप होते तो मजा करते। होटल में चाय-चिप्स उडाते और देखते रोज सनीमा। यहा तो 'नाइट शो' में पाच आने का टिकट तकदीर में लिखा है। घर पहुँचो तो कम्बख्त घरवाली की समझ में सनीमा ही नही आता। काटने

गोपीनाथ	तुम्हारा मतलब है कि जो लडकी अभी काफी लेने आई थी वह वह चली भी गई ?
सूरजभान	जी हां। और आप गाते ही रहे। (मुह बनाते हुए) चिकना-सा घडा चिकना-सा घडा।
गोपीनाथ	(कुछ रुककर) हूं ! (सोचता हुआ) लेकिन .. लेकिन यह हो कैसे सकता है ?
सूरजभान	क्यो नही ?
मगनचन्द	तुम भी गोपी
गोपीनाथ	(अधिकारपूर्ण स्वर में) क्योकि ऐसा किसी भी फिल्म मे नही हुआ। याद करो। हीरोइन सामने से निकल जाय और हीरो के कान पर जू भी न रेगे।
मगनचन्द	तुम अपने को हीरो समझते हो क्या ?
सूरजभान	मेढकी को भी जुकाम होने लगा।

(कछी का प्रवेश)

गोपीनाथ	यह लो, कछी वापस आ गया। क्यो भई कछी, कहा गई वह ?
कंछी	कौन बाबूजी ?
गोपीनाथ	अरे वही, जो मैनेजर साहब को पूछ रही थी।
कछी	यह तो मालूम नही, किधर जा रही है वह बीबीजी। पर मैं काफी के पैकिट उनकी मोटर में रख आया हूँ।

[दूसरी मेज पर से ट्रे उठाता है और दीवार पर टँगा झाडन]

सूरजभान	मोटर !
मगनचन्द	मोटर ! उनकी मोटर !! कछी, मोटर चली गई क्या ?

कछी — मेरे मामने तो गई नही थी। ड्राइवर तो दीखा नही। शायद खुद चलाती है।

सूरजभान — खुद चलाती है? मगन, वह मोटर खुद चलाती है!

मगनचन्द — और मोटर अभी गई नही है सूरज! अभी—

सूरजभान — मौका है। बिल्कुल वैसा ही जैसा मेवानन्द ने मालिनी के लिए .

मगनचन्द — जैसा मजन ने माला के लिए .....

गोपीनाथ — किस फिल्म मे?

(लेकिन सूरज और मगन उसकी उपेक्षा ही करते है।)

सूरजभान — मगन, अभी चलो!

मगनचन्द — फौरन चलो, सूरज, फौरन!

[दोनो तेजी से बाहर की तरफ भागते है। गोपी पीछे-पीछे पुकारता जाता है।]

गोपीनाथ — अरे भई, मुझे तो बताओ, किस फिल्म में? सूरज! ओ मगन, मगन ..

(प्रस्थान)

कछी — (प्लेट और प्याले ट्रे में रखता हुआ) खब्ती है तो क्या, इन्ही बाबुओ की बदौलत तो होटल चलता है। सवेरे चाय-चिप्स,'दोपहर को चाय-चिप्स, शाम को सनीमा के पहले चाय-चिप्स, सनीमा के बाद चाय-चिप्स। सनीमा न देखें तो चाय-चिप्स हजम कैसे हो? हमारे भी पैसेवाले मा-बाप होते तो मजा करते। होटल मे चाय-चिप्स उडाते और देखते रोज सनीमा। यहा तो 'नाइट शो' मे पाच आने का टिकट तकदीर में लिखा है। घर पहुंचो तो कम्बख्त घरवाली की समझ मे सनीमा ही नही आता। काटने

को दौडती है, काटने को । ..क्या हीरोइन मिली है हमे भी !

(भोडे स्वर में गुनगुनाने लगता है)

मौसम वहार है ।
बीबी वेकार है,
आ जा प्यारी मौत अव तेरा इतजार है ।'

[विमल का प्रवेश । पैंट, कमीज । उम्र लगभग ३०-३२ वर्ष । हाय में कागज के पैकिट । चश्मा पहने हैं । गठा हुआ बदन । रग-ढग और व्यक्तित्व आत्म-विश्वासपूर्ण । बातचीत में अनायास सहजपना । लेकिन इस समय कुछ भटका-सा जान पडता है ।]

विमल ए मिस्टर !—

कछी (चौंककर) जी !

विमल मैंने कहा, वेरा, इस रेस्तरा मे ताजा काफी के पैकिट मिलते है ?

[कछी सम्हलकर अपनी व्यवसाय-बुद्धि पर आ गया है ।]

कंछी जी जी हा हुजूर । .मैनेजर साहव आपके सामने ही मशीन में काफी पीसकर पैकिट में भर देगे । इधर चलिए मैनेजर साहब के कमरे मे (चलते-चलते) अभी तो एक वीवीजी चार पैकिट लेकर गई है ।

विमल (रुककर) गई ?

कंछी जी गई ! क्या हुआ हुजूर ? (विमल को वापस होता देख) ओहो, तो आप भी उन वीवीजी के ही पीछे

विमल क्या मतलब तुम्हारा ?

कछी अजी साहब, अभी-अभी तीन बाबू लोग तो उन्ही के पीछे-पीछे भागे गये है ।

विमल तीन बाबू लोग ... क्यो ?

कछी आप लोग सब जवान आदमी है, हमसे क्या पूछते है ?

विमल अच्छा, यह बात है । किस तरफ गये है वे लोग ? दरवाजे पर तो मिले नही ।

कछी मैं तो मोटर पूरब की तरफ चचल स्टोर्स के सामने छोड आया था । आप पच्छिम से आये होगे ।

विमल . चचल स्टोर्स ? साडियो की दूकान ? अच्छा . अच्छा तो भई, चाय लाओ ।

(एक मेज के पास बैठ जाता है ।)

कछी काफी के पैकिट नही लीजिएगा ?

विमल अभी नही । कौन है वे बाबू लोग ?

(नेपथ्य में बातचीत का स्वर सुन पडता है ।)

कछी लीजिए, जान पडता है, वे लोग वापस ही आ गये ।

(दरवाजे की ओर झाकता है ।)

विमल आ गये । साथ मे

कछी (विमल की तरफ देखकर मुस्कराता हुआ) बीबीजी नही है ।

विमल नही है ? (खडा होता है । फिर कुछ सोचकर बैठता हुआ) खैर, तुम चाय लाओ और देखो एक प्लेट चिप्स भी ।

कछी जी ।

[गोपी, सूरज और मगन का जोर-जोर से बातें करते हुए प्रवेश]

गोपीनाथ — कछी ! लाओ और तीन प्याला चाय और चिप्स गये तो थे हास्पिटल का खाना खाने, मगर तक़दीर तो लिखी थी यहाँ की चाय और चिप्स ।

[कछी अन्दर जाता है । विमल सिगरेट पीता हु ध्यान से सुनता है ।]

सूरजभान — मगन, अगर तुमने जरा सूझ-बूझ से काम लिया हो तो हममें से एक तो उसकी मोटर से धक्का खाक गिर ही पड़ता । फिर तो उसी की मोटर मे हास्पिट ले जाये जाते । उसी के कोमल हाथों से सेवा-शुश्रू होती और जैसा 'हड़कल' फिल्म में हुआ है, मौत कं बीमारी मुहब्बत की बीमारी में तबदील हो जाती ।

मगनचन्द — मुझे क्या मालूम था कि वह मोटर को आगे न ले जाकर बैक करके ले जायेगी । आगे ले जाती तो हम-लोग मुस्तैद थे ही, जरूर टक्कर लगती, मगर वह जालिम तो झट से मोटर बैक करके उडा ले गई और हम देखते ही रह गये । माला की मोटर तो हमेशा आगे ही जाती है, चाहे रास्ते मे आदमी हो चाहे गधे ।

सूरजभान — लेकिन मालिनी तो मोटर बैक करने में इनाम पा चुकी है ।

मगनचन्द — फिर वही बात, सूरजभान ! कहाँ राजा भोज

गोपीनाथ — (बीच-बचाव करता हुआ) तुम दोनो ही ने गलती की सूरजभान । मगनचन्द, मुझसे बिना पूछे जब किसी काम मे तुम दोनो ने हाथ लगाया, वही बेकार गया ।

सूरजभान — तुम बड़े अफलातून हो न !

गोपीनाथ (इस बात पर कान न देता हुआ) मगन, 'दिल की सवारी' फिल्म की याद है ?

मगनचन्द हाँ। वही न . .

गोपीनाथ हाँ, वही जिसमे हीरोइन अकेले मोटर ले जा रही है। बस वही तरकीब थी। मै जाता और एक साथ उसपर हमला करके एक रुमाल से उसका मुह बांध देता और दूसरे से उसके हाथ। स्टीयरिग व्हील छीन लेता। मोटर तेज हो जाती। उसी वक्त तुम लोग आ पहुँचते।

सूरजभान कहाँ से ?

गोपीनाथ कही से भी। बस, चलती गाडी मे छलाग मारकर उसे बचाने की नीयत से तुम पीछेवाली सीट पर बैठ जाते। और मुझे छुरा दिखाते। मै डरकर स्टीयरिग व्हील तुम्हारे हवाले कर देता। उस लडकी को तुम मुक्त करते और वह कृतज्ञता-भरी आँखो से तुम्हें देखती।

[मगनचन्द और सूरजभान विस्फारित नयनो से एकाग्रचित्त होकर सुन रहे है, मानो समूचा व्यापार उनकी आँखो के सामने हो रहा हो।]

गोपीनाथ उसके बाद जानते हो क्या होता ?

मगनचन्द बताओ न !

गोपीनाथ उसके बाद एक सुहावने जगल के बीच पहुँचकर मोटर का पेट्रोल खत्म हो जाता। तुम लोग उतरते। चारो ओर फूलो से लदे वृक्ष, भीनी-भीनी हवा, चिडियाँ चहक रही होतीं . और उसी समय वह लडकी गाना शुरू कर देती। अरे, वही गाना, 'ओ ओ'—

[गाना शुरू करता ही है कि कोनेवाली मेज़ पर से विमल बोल उठता है।]

विमल (अपने ही स्थान से) लेकिन जनाव, इस सिलसिले में दो वातें आप भूल गये। एक तो यह कि आप मे से कोई मोटर चलाना भी जानता है या नही ?

[इस विघ्न से तीनो चौंक जाते हैं और विमल को देखने लगते हैं। उधर विमल आत्मविश्वास के साथ सिगरेट पीता हुआ, धुएँ के नाना आकार उडा रहा है।]

सूरजभान मोटर चलाना ? मैं तो नहीं जानता।

मगनचन्द मैं भी तो नही।

गोपीनाथ (सहसा विघ्नकर्त्ता की उद्दडता का ध्यान करते ही) हम लोग मोटर चलाना न जानते सही, लेकिन (जरा तेजी से) लेकिन साहव, आप कौन होते हैं दखल देने वाले ?

विमल (अपनी कुर्सी से उठकर उन लोगो की मेज के निकट आता हुआ और गोपी की वात को अनसुनी करता हुआ) और दूसरी वात यह है कि उस लडकी के दात वडे तेज है, वडे पैने। (उन लोगो की मेज के पास खड़ा होकर) जो सज्जन उसके मह पर कपडा वांधते, उनकी उँगलियो की खैर नही ?

गोपीनाथ (कुछ चिन्तित स्वर में) उँगलियो को काट लेती ?

विमल (कृत्रिम गाभीर्य) जी हां, हड्डी-समेत।

[गोपी कुछ सिहर उठता है। चाय और चिप्स लिये हुए कंछी का प्रवेश। सूरजभान वगैरह की चाय और तश्तरिया उस मेज पर रखता और फिर विमल से पूछता है।]

कछी हुजूर की चाय भी ?

सूरजभान (सोचता-सोचता नयी सूझ के आवेश में) लेकिन, लेकिन साहब आपको कैसे मालूम कि उसके दाँत इतने तेज है, मिस्टर .

विमल विमल। मेरा नाम है विमल।

मगनचन्द (सूरजभान की सूझ से शह पाकर) हाँ, आपको कैसे मालूम मि० विमल!

विमल मुझको कैसे मालूम? (कछी से) अच्छा भई, मेरी चाय और चिप्स भी इसी मेज पर रख दे। . . (उन लोगो से) क्यो साहब, बैठ सकता हूँ?

तीनों जी-जी, बैठिए . बैठिए!

[कछी प्याले और प्लेट रखकर अन्दर चला जाता है। विमल कुर्सी खींचकर उसी मेज के पास बैठ जाता है।]

विमल (बडे तपाक से, चम्मच से चाय मिलाता हुआ) बात यह है साहब कि आप लोगो की तरह मै भी उसके प्रेम मे डूब चुका हूँ, और और मुझे उसके दातो के कारनामो का तजुर्बा है।

गोपीनाथ अच्छा, उसने आपको भी दाँतो से काटा?

सूरजभान कहाँ काटा?

मगनचन्द चेहरे पर तो काटने का निशान नही दीख पडता।

विमल इतनी तकदीर कहाँ मि० मगनचन्द! लेकिन उसके दाँतो की तेजी मैने देखी जबकि दो मोटे अखरोट मेरे देखते-ही-देखते उसके दाँतो के बीच ऐसे चकनाचूर हो गये जैसे चक्की के पाटो के बीच में घुन।

सूरजभान (निराश स्वर) अखरोट!

विमल जी हाँ, छिल्के-समेत।

मगनचन्द (उसी निराश स्वर में) अखरोट! .. हम तो समझे थे—

विमल (लम्बी सांस खींचता हुआ) काश, वह नौबत आ पाती, मगन बाबू! बात यह है कि मेरे प्रेम के बादल पहाड़ की चोटियों पर सतरंगी छटा दिखाने ही लगे थे कि उनको पकड़ने के लालच में मैंने एक ऐसी नादानी कर डाली कि बस .

सूरजभान क्या हुआ?

विमल क्या बताऊँ! बादल तो गायब हो गये, और रह गया एक नाला, बराबर बहता हुआ पानी, कभी उछलता-कूदता, लेकिन अक्सर धीमी रफ्तार से बहता हुआ।

मगनचन्द निराश प्रेमी के आँसुओं की धारा!

विमल अब आप जो समझ लें।

[आंसुओं को रोकने का नाट्य। जेबों में रुमाल टटोलता है, लेकिन मिलता ही नहीं।]

सूरजभान मेरा रुमाल लीजिए।

(रुमाल पकड़ाता है)

विमल (भरे गले से रुमाल से आखें पोंछता हुआ) थैंक यू! अब कितने रुमाल रखूं। दर्जनों रोज गीले हो जाते हैं।

गोपीनाथ (एक प्रसिद्ध फिल्मी तर्ज को करुण स्वर में गुनगुनाता हुआ) 'जब याद किसी की आती है' .

मगनचन्द ट्रैजडी! दिल दहलानेवाली ट्रैजडी!

सूरजभान कौन-सी वह नादानी थी जिसने आपको यह दिन दिखाया?

विमल वह नादानी जी, मौका आने पर उसका हाल भी

आपको वतलाऊंगा ताकि आप लोगो पर वह न गुजरे जो मुझ पर गुजर चुकी है। लेकिन मुझे विश्वास है कि आपको मेरी सीख की जररत नही पडेगी।

सूरजभान क्यो !

विमल क्योकि मेरी तरह आप लोगो की शिक्षा अधूरी नही रही।

गोपीनाथ . आप तो पहेलियो मे वात करते है मि० विमल !

विमल वात यह है गोपी वावू कि जब मै यूनिवर्सिटी में पढता था तब महीने मे एक ही वार सिनेमा देख पाता था।

तीनों (एक साथ अचभित स्वर में) महीने में एक ही वार !!

मगनचन्द आप यूनिवर्सिटी मे पडते थे या गुरुकुल मे ?

सूरजभान यह किसी गाव का जिक्र तो नही है ?

गोपीनाथ महीने मे सिर्फ एक वार ? साहव, यकीन नही होता !

विमल तो शायद आप यह भी यकीन नही करेंगे कि उन फिल्मो मे सिर्फ तीन या चार गाने होते थे !

(तीनो आश्चर्य से अवाक् रह जाते है।)

सूरजभान तीन गाने। नामुमकिन।

मगनचन्द सारे तीन घटे के फिल्म मे गाने महज तीन या चार ?.. जनाव, वीस गाने से कम की फिलम तो दिखाई ही नही जा सकती।

गोपीनाथ सुना है, सेन्सर वोर्ड अव पच्चीस गाने से कम की फिलम पास ही नही करेगा।

विमल रोना तो यही है कि उस जमाने में ऐसा कोई सेन्सर वोर्ड ही नही था। यही नही। उन फिल्मो के हीरो-

हीरोइन भी होते थे, बिल्कुल रोज़मर्रा की जिन्दगी में पाये जानेवाले लोग।

सूरजभान क्या मतलब ? क्या जमीदार के लडके और ग्वाले की लडकी की प्रेम-कहानी नही होती थी ?

विमल जी नही।

मगनचन्द और सेठ की लडकी और तागेवाले की मुहब्बत।

विमल वह भी नही।

गोपीनाथ और मिल-मालिक की इकलौती लडकी और बेकार ग्रेजुएट का प्यार ?

विमल बिल्कुल नही साहब, बिल्कुल नही। मैने कहा न, रोजाना की जिन्दगी की तसवीरे थी, बस।

सूरजभान तब तो उन फिल्मो मे चादनी रात मे हीरोइन तैरने की पोशाक भी नही पहनती होगी ?

विमल तैरने की पोशाक ? आपका मतलब साडी वगैरह गायब ? वह तो कभी नही।

मगनचन्द और हीरोइन के जन्म-दिन पर उसका अमरीकी नाच भी नही होना होगा ?

विमल कहाँ साहब, ये सब नज़ारे कहाँ नसीब होते थे हम लोगो को ! बडी दकियानूसी फिल्मो का जमाना था वह।

(तीनो अचरज में एक दूसरे का मुह देखते है।)

गोपीनाथ तब आप किस मुह मे मुहब्बत करने चले थे विमल साहब ?

मगनचन्द मि० विमल, भला प्रेम के मैदान मे आप कैसे सफल हो सकते थे ? आप तो बिल्कुल आउट आव डेट है।

गोपीनाथ आपने तो असली जिन्दगी देखी ही नही।

विमल असली जिन्दगी। (**सोचता हुआ**) कहते तो आप ठीक है।

गोपीनाथ आपको इस मैदान से रिटायर हो जाना चाहिए।

विमल (पराजित मुद्रा) वह मैदान तो मेरे लिए पहले से ही बन्द हो गया। मन्सूबे मिट्टी हो गये। बस एक तमन्ना बाकी है।

सूरजभान वह क्या ?

विमल वह यह कि आप-जैसे मंजे हुए खिलाडियो के कुछ काम आ सकू।

गोपीनाथ आप सच कहते है ?

विमल हाथ कगन को आरसी क्या !

मगनचन्द तो देखिए, हम लोगो का सन्देशा उस लडकी तक पहुँचा दीजिए।

विमल सदेशा क्या, मै तो आपकी उससे आज ही मुलाकात करा सकता हूँ।

(तीनो खुशी से उछल पडते है।)

सूरजभान घर तो जानते ही होगे ?

विमल अच्छी तरह। लेकिन इस वक्त रात हो चली है, इसलिए पिछवाडे मे जाना ठीक होगा।

मगनचन्द 'आसमानी घटा' फिल्म मे हीरो-हीरोइन के बँगले के पिछवाडे जाकर मैडोरिन बजाता है।

सूरजभान गोपी के पास है तो सही बैजो। आज ही मरम्मत कराई है।

गोपीनाथ वह रखा है। (कोने से बैजो उठा लाता है) साथ मे ले चलूगा। (बैजो पर आघात करते हुए) और गाऊँगा दर्दभरी आवाज मे वही गाना

सूरजभान 'बेवफा' फिल्म का हीरो हीरोइन के लिए एक प्रेजेंट

लेकर जाता हूँ। मैं सोचता हूँ कि एक जेवर या साडी ले चलूं।

विमल साडी का ख्याल बुरा नही है। पास मे दूकान भी है, चचल स्टोर्स।

सूरजभान ठीक। अभी साडी लेते चलेंगे।

मगनचन्द और मैं ? मुझे भी तो कुछ करना चाहिए।

विमल मेरी सलाह माने तो बातचीत की जिम्मेवारी आप अपने ऊपर लीजिए।

मगनचन्द आप ठीक कहते हैं। मेरी बातो मे शहद की मिठास होगी, कृष्ण की वशी का जादू होगा और होगी प्रेम-वीणा की झकार, जिसे सुनकर उसकी हृदय-कमलिनी ऐसे ही खिल पडेगी जैसे माला अँगडाइयाँ लेती है।

सूरजभान फिर वही बात। मालिनी की अँगडाइयो की तारीफ तो फिल्मेशिया का सम्पादक हमेशा करता है, और तुम लिये फिरते हो माला को!

विमल (बीच-बिचाव करते हुए) देखिए मि० सूरजभान! सुनिए मि० मगनचन्द! आप लोग तो इन मामलो मे माहिर ठहरे। मैं आप लोगो को क्या सीख दूं। लेकिन इस लडकी के स्वभाव को जानता हूँ इसलिए

गोपीनाथ हाँ, हाँ, कहिए-कहिए। हमे तो आपके तजुर्बे से लाभ उठाना है।

विमल जी हाँ। मेरा मतलब यह है कि मालिनी या माला—किसी की भी तारीफ आपने उस लडकी के सामने की तो डर है कि सब किया-कराया चौपट हो जायगा।

सूरजभान मैं समझ गया। कोई भी हीरोइन दूसरी हीरोइनो की तारीफ नही सुन सकती।

मगनचन्द मै भी यही सोच रहा था ।

विमल बिलकुल ठीक । देखिए, कितनी जल्दी आप समझ गये इस बात को । आजकल की फिल्मो से बुद्धि कितनी तेज हो जाती है, यह इस बात का सबूत है । चलिए । (उठते हुए) टैक्सी से ही चलना होगा ।

गोपीनाथ हा, हर फिल्म के हीरो के पास टैक्सी या अपनी मोटर होती है ।

(खडा हो जाता है ।)

मगनचन्द आज हम लोगो को सच्चे मानी मे फिल्मी हीरो बनने का मौका मिल रहा है.।

(खडा हो जाता है ।)

सूरजभान आज सारी फिल्मी दुनिया का रोमास हमारी मुटठी मे आया ही चाहता है ।

[खडा हो जाता है—ज्योही सब लोग प्रस्थान के लिए उद्यत होते है, त्योंही कछी का प्रवेश]

कछी बाबूजी, मैनेजर साहब पूछ रहे है कि और चाय-चिप्स चाहिएँ आप लोगो को। अब होटल बन्द करने का वक्त .

गोपीनाथ चाय-चिप्स ! कछी, आज हमलोग और चाय-चिप्स नही लेंगे । आज हमलोग मुहब्बत की मजिल के राह-गीर है ।

कछी राहगीर । बाहर जा रहे है क्या ?

गोपीनाथ एक नयी दुनिया मे, एक अनूठे तजुर्बे की खोज मे . .

कछी (सिर खुजलाता हुआ) और पैसे बाबू जी ?

सूरजभान क्या बेमौके बात करते हो कछी ? जानते नही हमारा हिसाब

कंछी — मैं समझा, शायद लौटकर आना कब हो .

विमल — मेरे कितने पैसे हुए कछी ?

मगनचन्द — नही विमल साहब, आज आप हमारे मेहमान हैं। कछी हमारे हिसाब मे लिखो।

विमल — यह तो जरूरी नही जान पडता। (बटुआ जेब में वापस रखता हुआ) खैर जब आप मानते ही नही तो थैंक यू ।

सूरजभान — चलिए, पहले साडी खरीदनी है।

[चारो का दाहिने दरवाजा से प्रस्थान। कंछी थोडी देर सिर खुजलाता रह जाता है और फिर चाय के बर्तन ट्रे में रखते हुए आप-ही-आप बडबडाता है।]

कंछी — अबतक तो तीन ही थे, अब एक और मिल गया। क्या जमाना है ? दूध के दाँत टूटे नही कि चले मुहब्बत करने। हमारी घरवाली-सी बबुआइन मिले तो छठी का दूध याद आ जाय, छठी का। ..

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

[एक मकान का पिछवाडा । दो ऊँची खिडकियां जो आदमी की ऊँचाई से ऊपर हैं । एक खिड़की बन्द है, एक खुली । मकान के आगे खुली जगह में कुछ झाडिया, कुछ छोटे गमले, और एक बड़ा गमला लोहे के पीपेवाला, ये सब वस्तुएँ छितराई पडी हैं । बडे गमले का सहारा लेकर कभी-कभी पात्र बैठ जाते हैं, किन्तु वह दीवार से दूर हटकर रखा है। खुली खिडकी में से मन्द रोशनी आ रही है ।

विमल के पीछे-पीछे गोपीनाथ, सूरजभान और मगनचन्द का दबे- पावों प्रवेश । सूरजभान के हाथ में सारी का खूबसूरती मे बंधा हुआ बडल है। गोपीनाथ बंजो लिए हुए है और मगनचन्द एक कागज जिसे कभी-कभी वह गौर से देखता है। चारों आपस में बातचीत कुछ दबे स्वर में करते हैं, लेकिन बाद में स्वर अनजाने ही खुल जाता है ।]

ओ मेरे सपने—दूसरा दृश्य
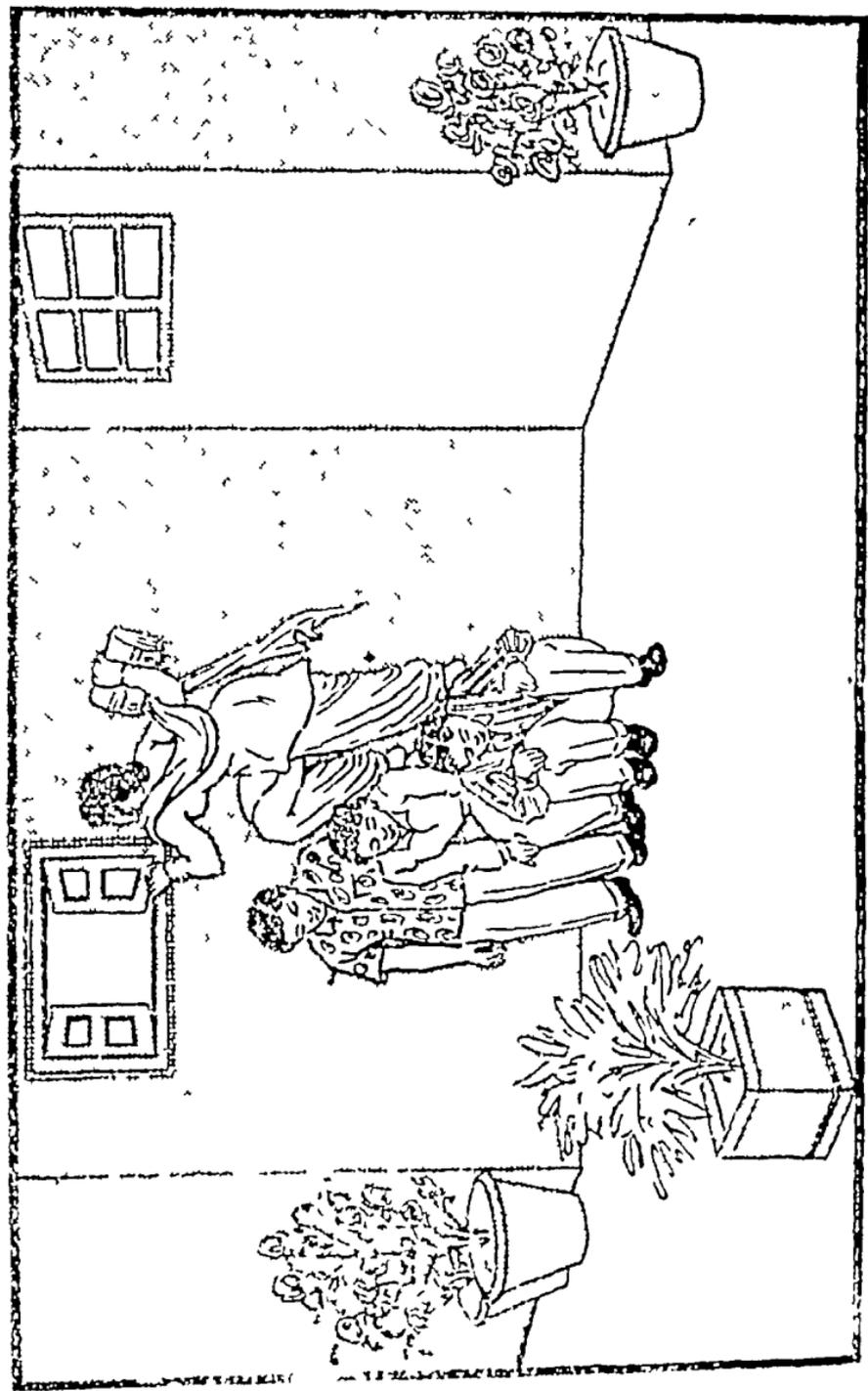
विमल · बस, इसी जगह ठीक रहेगा।

गोपीनाथ अगर सोती हुई तो .

विमल आपके मधुर संगीत को सुनकर जग उठेगी।

गोपीनाथ (बैंजो बजाने की चेष्टा करता हुआ) 'उठ जाग मुसाफिर' .

विमल ऐसे नहीं और अभी नहीं।

गोपीनाथ और कोई तरीका ही नहीं उसे खिड़की पर बुलाने का। खिड़की बहुत ऊँची है।

सूरजभान पहले झांक तो लें कि अन्दर है या नहीं। (दाहिनी ओर को जाता हुआ) इस तरफ ही 'तो है दरवाजा।

विमल उधर जाने की जरूरत नहीं। जरूर अन्दर ही होगी।

मगनचन्द तुम भी कैसी बेमजा बात करते हो सूरजभान ! दरवाजा ! दरवाजा ! अरे, कैसा रोमांटिक मौका है खिड़की से उसकी झलक लेने का, उससे दो मीठे बोल बोलने का ! बिल्कुल रोमियो और जूलिएट ! मेरे पहले शब्द भी वही होंगे—'काश मैं तेरे हाथ का दस्ताना होता।'

विमल दस्ताना वह पहनती ही नहीं। दस्ताने से उसे चिढ़ है।

मगनचन्द · एँ ! (हाथवाले कागज को घबराहट से देखता हुआ।) तो तो मुझे अपने शब्द बदलने होंगे। . यह तो एक नयी मुसीबत खड़ी हो गई

सूरजभान · अब कैसे हो ? एक मुश्किल और भी तो है। खिड़की देखो कितनी ऊँची है ? हाथ ही नहीं पहुँचता। साड़ी का पैकिट कैसे पकड़ाऊँगा ?

(चिन्तित मुद्रा।)

गोपीनाथ असल मे यह ट्यून ठीक नही बैठ रहा। (घबराहट मे बंजो पर आघात करता हुआ।) कोई दूसरी .

विमल : (उन तीनो की घबराहट को ताडता हुआ) देखिए मि० गोपीनाथ। मि० सूरजभान, सुनिए। आप भी मि० मगनचन्द। आप तीनो इस समय 'नर्वस' हो रहे है! यानी आपकी सिट्टी गुम होनेवाली है। रोकिए, वरना (कधे हिलाकर) लुटिया ही डूब जायगी।

मगनचन्द . (कुछ लडखडाती आवाज) ऐ . जी ..

गोपीनाथ · लेकिन, लेकिन अब क्या हो ?

विमल . सुनिए जैसे भक्त लोग अपने इष्टदेव का ध्यान करके शान्ति पाते है, वैसे ही आप लोग भी ध्यान कीजिए किसी-न-किसी फिल्मी-हीरो का। जरूर शान्ति और हिम्मत मिलेगी। कीजिए ध्यान!

सूरजभान . (जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिला हो) मेरे तो दिल पर मालिनी और दिमाग पर मेवानन्द खिचे है। उन दोनो के मधुर मिलन का चित्र आखो के सामने झलक रहा है। अहा! क्या सुन्दर युगल मूर्ति है, क्या अनुपम दृश्य है।

(आखें बन्द करके झूमने लगता है।)

मगनचन्द और मै ? मै वही सपना देखता हूँ जो महीप कुमार ने चट्टान पर सिर रखकर रोते-रोते सो जाने पर देखा था। वह देखता है, माला बादलो और तारो के बीच सफेद खच्चर पर बैठकर उड रही है। खच्चर आसमान से नीचे उतरता है और महीप कितने प्यार से उसकी झब्बेदार पूछ को दुलराता है, सहलाता है,

(हाथ से सहलाने का सकेत करता है) अहा ! कैसा अपूर्व सपना है यह, कैसा मधुर !

[तन्मय हो आखें बन्द कर स्वप्न का रसास्वादन करता है। इस बातचीत के दौरान में विमल खिसककर दाहिनी तरफ बाहर चला जाता है। उसके प्रस्थान से ये लोग अपरिचित है।]

गोपीनाथ मुझे भी याद आ रहा है वह गाना, वह तराना, जो रेलगाडी छूट जाने पर भजन गाता है, प्लैटफार्म पर चहलकदमी करते हुए। अरे, वही गाना, वह तो आपने भी सुना होगा मि० विमल, (पीछे मुडकर देखता है) अरे, मि० विमल कहा गये ? मि० विमल ? (सूरजभान और मगनचन्द को झकझोरते हुए) सूरजभान ! अरे मगन, उठो, उठो ! वह विमल साहब तो है ही नही।

सूरजभान है ही नही। (कुछ उनींदा-सा) अगर अब नही है तो पहले भी नही रहे होगे।

गोपीनाथ तो क्या हम लोग सपना देख रहे थे।

मगनचन्द मै तो देख ही रहा था।

गोपीनाथ अरे वह खच्चरवाला सपना नही। मै कहता हूँ कि क्या मि० विमल सपने की चिडिया थे जो उड गये ?

सूरजभान (कुछ वैसी ही धुन में) लेकिन यह कैसे हो सकता है ? यह साडी जो मेरे हाथ में है यह तो असलियत है और अगर यह असलियत है तो हमारा इस स्थान पर मौजूद होना ख्वाब नही हो सकता।

मगनचन्द तुम ठीक कहते हो। यह कैसी अनहोनी बात है। इस समय तो हम लोग 'इन्सपायर्ड' है, हमारे दिलो मे

गोपीनाथ असल में यह ट्यून ठीक नही बैठ रहा। (घबराहट में बैंजो पर आघात करता हुआ।) कोई दूसरी

विमल (उन तीनो की घबराहट को ताडता हुआ) देखिए मि० गोपीनाथ। मि० सूरजभान, सुनिए। आप भी मि० मगनचन्द। आप तीनो इस समय 'नर्वस' हो रहे हैं! यानी आपकी सिट्टी गुम होनेवाली है। रोकिए, वरना (कंधे हिलाकर) लुटिया ही डूब जायगी।

मगनचन्द (कुछ लडखडाती आवाज) ऐ जी ..

गोपीनाथ लेकिन, लेकिन अब क्या हो ?

विमल सुनिए जैसे भक्त लोग अपने इष्टदेव का ध्यान करके शान्ति पाते हैं, वैसे ही आप लोग भी ध्यान कीजिए किसी-न-किसी फिल्मी-हीरो का। जरूर शान्ति और हिम्मत मिलेगी। कीजिए ध्यान!

सूरजभान (जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिला हो) मेरे तो दिल पर मालिनी और दिमाग पर मेवानन्द खिचे हैं। उन दोनो के मधुर मिलन का चित्र आखो के सामने झलक रहा है। अहा! क्या सुन्दर युगल मूर्ति है, क्या अनुपम दृश्य है।

(आखें बन्द करके झूमने लगता है।)

मगनचन्द और मैं? मै वही सपना देखता हूँ जो महीप कुमार ने चट्टान पर सिर रखकर रोते-रोते सो जाने पर देखा था। वह देखता है, माला बादलो और तारो के बीच सफेद खच्चर पर बैठकर उड रही है। खच्चर आसमान से नीचे उतरता है और महीप कितने प्यार से उसकी झब्बेदार पूछ को दुलराता है, सहलाता है,

(हाथ से सहलाने का संकेत करता है) अहा ! कैसा अपूर्व सपना है यह, कैसा मधुर !

[तन्मय हो आखें बन्द कर स्वप्न का रसास्वादन करता है। इस बातचीत के दौरान में विमल खिसककर दाहिनी तरफ बाहर चला जाता है। उसके प्रस्थान से ये लोग अपरिचित है।]

गोपीनाथ मुझे भी याद आ रहा है वह गाना, वह तराना, जो रेलगाडी छूट जाने पर मजन गाता है, प्लैटफार्म पर चहलकदमी करते हुए। अरे, वही गाना, वह तो आपने भी सुना होगा मि० विमल, (पीछे मुडकर देखता है) अरे, मि० विमल कहा गये ? मि० विमल ? (सूरजभान और मगनचन्द को झकझोरते हुए) सूरजभान ! अरे मगन, उठो, उठो ! वह विमल साहब तो है ही नही।

सूरजभान है ही नही। (कुछ उनींदा-सा) अगर अब नही है तो पहले भी नही रहे होगे।

गोपीनाथ तो क्या हम लोग सपना देख रहे थे।

मगनचन्द मै तो देख ही रहा था।

गोपीनाथ . अरे वह खच्चरवाला सपना नही। मै कहता हूँ कि क्या मि० विमल सपने की चिडिया थे जो उड़ गये ?

सूरजभान (कुछ वैसी ही धुन में) लेकिन यह कैसे हो सकता है ? यह साडी जो मेरे हाथ मे है यह तो असलियत है और अगर यह असलियत है तो हमारा इस स्थान पर मौजूद होना ख्वाब नही हो सकता।

मगनचन्द तुम ठीक कहते हो। यह कैसी अनहोनी बात है। इस समय तो हम लोग 'इन्सपायर्ड' है, हमारे दिलो मे

मस्ती है। और मेरे दिमाग में प्रेम-गायन भी तैयार है, बिलकुल।

गोपीनाथ और मेरा 'बैंजो' भी बजने के लिए उतावला है।

सूरजभान और यह साड़ी ? बिना परिचय के साड़ी कैसे दूंगा ?

गोपीनाथ ऐसे समय में मि० विमल का गायब होना खतरे से खाली नहीं है।

मगनचन्द खिड़की पर कोई नहीं आया।

सूरजभान कोई नहीं ! वहां भी कोई नहीं, यहां हमारे पास भी कोई नहीं !

[तीनों कुछ भयभीत होकर करीब-करीब आ जाते हैं और कुछ रुक-रुककर और आहिस्ता से बोलते हैं। यह वह भय है, जिसमें उन्हें कुछ रस भी मिलता है।]

गोपीनाथ चारों तरफ सन्नाटा है !

मगनचन्द रात ज्यादा हो गई है !

गोपीनाथ अगर यह बैंजो तलवार बन जाय !

सूरजभान और यह साड़ी का पैकिट ढाल !

मगनचन्द तो हम लोग अपना जौहर दिखा दें।

सूरजभान तीन घोड़े हों तो हम लोग भाग निकल सकते हैं।

गोपीनाथ दो से भी काम चल सकता है। 'पाताल की सुन्दरी' फिल्म में

मगनचन्द (लगाम पकड़ने की भंगिमा) सरपट, सरपट हमलोग दौड़ते नजर आयें।

सूरजभान और दुश्मन पीछा करता हो।

मगनचन्द, गोपीनाथ (आविष्ट स्वर) दुश्मन !

सूरजभान (मानो पीछे ही हो) दुश्मन ! !

[तीनों एक दूसरे से सटे हुए दर्शकों की तरफ मुंह

किये खडे हैं, और उन्हें नहीं मालूम है कि पीछे क्या हो रहा है। सहसा दाहिनी तरफ से किसी के गुनगुनाने की आवाज। 'जिया भरमाय' की तर्ज। तीनो यह सुनकर और भी सटकर खड़े हो जाते है। लेकिन पीछे मुडकर नहीं देखते।]

गोपीनाथ . सुनो . सुनो !

मगनचन्द हमारा पीछा हो रहा है।

सूरजभान : दुश्मन !

गोपीनाथ . नही-नही !. गाना !

[नेपथ्य में गाने का स्वर और किसी के चलने की आवाज आती है।]

सूरजभान (बिना मुडकर देखे हुए) कोई चल रहा है।

मगनचन्द कोई इधर ही आ रहा है।

(पगध्वनि बिलकुल निकट)

गोपीनाथ औरत की आवाज !

सूरजभान . ऐं, औरत !!

[सरिता का गुनगुनाते हुए प्रवेश। तीनों को अपनी तरफ पीठ किये खड़े देख, ठिठककर खड़ी हो जाती है और गुनगुनाना बन्द कर देती है।]

मगनचन्द औरत !

सरिता (कुछ हँसते हुए) जी हा, औरत। आप लोग कैसे मर्द है जो पीठ मोडे खडे है ? एक औरत का स्वागत नहीं करते ?

[तीनो आहिस्ता-आहिस्ता और साथ-साथ पीछे की ओर मुडते है और सरिता को देखते ही चौंक पड़ते है।]

तीनों · आप !!!

सरिता · जी हा, मैं ! मेरा नाम सरिता हूँ।

सूरजभान आप.. आप खिडकी से उतरी है ?

सरिता (मुस्कुराते हुए) जी नही, दरवाजे से आई हूँ। खिडर्क तो ..

गोपीनाथ (निराश स्वर) दरवाज़े से।

मगनचन्द लेकिन लेकिन हम लोग तो खिडकी के लिए तैयार होकर आये थे।

सरिता तैयार ?. . (कुछ हँसकर) समझी। आपलोग शमा की झुलस से डरकर दूर भागने वाले परवाने है।

[तीनो हँस देते है और फिर एक-एक करके जवाब देने की कोशिश करते है।]

गोपीनाथ परवाने आप मैंने कहा ... सूरजभान ...

सूरजभान · वही वही क्या . क्या था . मगन . .

मगनचन्द शमा मेरे कहने का मतलब..

सरिता क्या मतलब आपके कहने का ?

मगनचन्द · मेरा मतलब कि शमा अगर बोलने लगे तो .

सरिता तो ?

मगनचन्द तो उससे दूर रहना ही ठीक।

सरिता ठीक बिल्कुल ठीक। आप तो बाज़ी मार ले गये। मि०

मगनचन्द मगनचन्द।

सरिता मि० मगनचन्द आप तो फिल्मी जवाब देने मे कुशल है।

मगनचन्द फिल्म तो मेरी रग-रग में

गोपीनाथ (सरिता का ध्यान आकृष्ट करते हुए) लेकिन आपने मेरा गाना . . फिल्मी गाना . तो सुना ही नही। मेरा नाम गोपीनाथ है। ही, ही, ही !

सूरजभान और मेरा सूरजभान। मुझे भी तो (पैकिट को आगे की तरफ बढ़ाता हुआ) कुछ अपनी सेवा करने का मौका दीजिए। ही, ही, ही !

सरिता अच्छा तो आप तीनो ही फिल्मी फौज के रगरूट (कुछ रुककर) बहादुर है, और आप तीनो ही मुझसे .

तीनों (एक साथ खीसें निपोरते हुए) .... जी ....
ही ही ही ! जी . . .

सरिता लेकिन देखिए मि० गोपीनाथ, मि० सूरजभान आप भी। और मि० मगनचन्द ! .. देखिए, आप लोग जानते ही है, हर फिल्म में एक हीरोइन होती है, एक हीरो और एक विलेन दुष्ट। जैसे देवताओ की दुनिया में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ऐसे ही फिल्मी दुनिया में यह त्रिमूर्त्ति सत्य-सनातन से होती आई है। मगर यहा हमलोग चार है, चार।

मगनचन्द लेकिन . लेकिन आप तो हममें से हरएक के लिए अलग-अलग हीरोइन है। मुझे तो आप माला की प्रतिमा दीख पडती है। •

(सरिता का मुंह फूल जाता है।)

सूरजभान और मेरे लिए तो आप ही मालिनी है। मालिनी !

(सरिता भडकने ही वाली है।)

गोपीनाथ और मेरे

सरिता बस, बस, बस। अगर आपलोगो ने माला-मालिनी

वगैरह से मेरा मुकावला करके मेरा अपमान किया तो याद रखिए, आपलोगो की यह शमा परवानो मे बोलती ही नही, उन्हे झुलसा भी देनी है !

[तीनो सकपका कर चुप हो जाते हैं और रुँआसे होकर एक दूसरे की सूरत देखने लगते है। थोड़ी देर सन्नाटा रहता है, फिर कुछ मुस्कराकर, कुछ हँसकर, शिशिर के उस मौन को पिघलाती हुई वसत की वातास-सी सरिता बोलती है]

सरिता आप लोग डर गये ? (वही मोहक हँसी) वडे भोले है ।. . (चील की भयावह छाया के हट जाने पर जैसे खग-शावक अपनी नन्हीं गर्दन उठाते हैं ऐसे ही तीनो धीरे-धीरे सरिता की ओर मुडकर देखते हैं ।) . वडे भोले, वडे नादान है आपलोग ! कभी-कभी तो आप लोग मुझे विल्कुल वच्चे लगते है, वच्चे !

गोपीनाथ (स्तव्ध) वच्चे !

सूरजभान (उलहने के स्वर में) ऐसा कहकर आप हमे ज़लील न करें सरिताजी ।

सरिता . ज़लील !

मगनचन्द : किसी भी हीरो को उसकी हीरोइन वच्चा कहे तो उसे जीते-जी मरा हुआ समझिए ।

सरिता जीते-जी मरना ही तो प्रेम की पराकाष्ठा है ।

सूरजभान हम आपके लिए मरने को भी तैयार है, हमारी इष्ट-देवी !

(घुटने टेककर याचना की मुद्रा)

मगनचन्द · और जीने को भी, हमारी हृदयसम्राज्ञी !

(घुटने टेककर प्रणय-मुद्रा)

गोपीनाथ आज्ञा दे, प्रणय-देवी ! मै अद्भुत प्रेम-सगीत की धारा वहा दूँ ।

[घुटने टेककर बैजो पर कुछ आघात करता है और कुछ तीव्र स्वर उस क्षणिक मौन को और भी नीरव कर देते हैं । कुछ ही क्षण वाद सरिता खिलखिलाकर हँस पडती है, किन्तु वे तीनो विवश वन्दी की भाति घुटने टेके ही बैठे रहते हैं ।]

सरिता (हँसते हुए) वाह, वाह ! क्या अपूर्व दृश्य है । मै तो क्या, देवलोक की अप्सरा भी आये तो भी आप-लोगो की झोली भर दे । लेकिन मै अपने तीन टुकडे तो नही कर सकती । इसलिए मेरे अनोखे प्रेमियो, जैसा मै कहती हूँ वैसा करो । मै यहा बैठ जाती हूँ । (बीचवाले बड़े पीपे को साफ कर बैठ जाती है ।) और तुमलोग एक-एक करके निकट आओ और अपने प्रेम का प्रदर्शन करो । बातो से, गीत से या भेट देकर, जैसे भी चाहो । और फिर मै तुममे से एक को पसन्द कर लूगी, जो भी मुझे अच्छा लगेगा । क्यो, ठीक है न, मेरे परवानो ? और सुनो, मेरा 'तुम' कहकर पुकारना बुरा तो नही लगता ?

सूरजभान बडा मीठा लगता है, तुम !

मगनचन्द (विभोर) तुम !

गोपीनाथ हम भी अपनी इष्टदेवी को 'तुम' कहना चाहेगे ।

सरिता शौक से अच्छा तो मगनचन्द पहले तुम आगे बढो । तुम्हारी प्रेम-पगी वाणी सुनने को मेरा मन मचल रहा है ।

[मगनचन्द आगे बढता है और जल्दी-जल्दी जेब से कागज निकालकर पढता है और फिर सरिता के निकट जाकर नीचे बैठ जाता है, घुटने टेककर ! बाकी दोनों अपने-अपने स्थान पर खडे हो जाते हैं। सरिता विमुग्ध नायिका की मुद्रा से मगनचन्द को देखती है और ठोडी पर हाथ टेककर ध्यान से सुनती है। मगनचन्द लड-खडाती-सी आवाज में प्रारम्भ करता है। ज्यो-ज्यो वह जोश में आता है त्यों-त्यो हाथ और चेहरे से नाटकीय सकेत करता जाता है।]

मगन चन्द काश मै तुम्हारे हाथ का द द (रुक जाता है) काश मै तुम्हारे मन का मोती होता तो तुम मुझे संजोकर रखती। लेकिन तुमने तो मुझे आख का आसू भी न रखा, न ढलने दिया, न बरसने दिया ! क्या मालूम, तुम्हारी आखो मे मेरा बसेरा है भी या नही। लेकिन मेरे दिल मे बसेरा है तुम्हारी मोहिनी मूरत का . और और एक धू-धू करती हुई चिता का, मेरे अरमानो की चिता ! आह। तुम मा-बाप की जिद के कारण किसी और के गठबन्धन के जाल में फँस रही हो लो, मै भी कूदता हूँ कूदता हूँ इस अथाह सागर में, आ जाओ सागर की लालची लहरो, लपेट लो मुझे, बुझा दो मेरी धधकती हुई चिता को और हमेशा के लिए, शान्त कर दो मेरे जीवन-प्रदीप को। आह ! ऊह ! ऐह !! ओह !! .

सरिता ठहरो मगनचन्द ! ठहरो ! भई, यह तो ट्रेजडी है, और ट्रेजडी से मेरी तबीयत बहुत घबराती है, प्रेम

उभडना तो दूर रहा ! वैसी बातें कहो न ...
जैसी 'चुलबुली' फिल्म में छलिया ने कही है।

मगनचन्द : (सिटपिटाता हुआ) जी . जी मैंने कहा....

सरिता क्यो, क्या छलिया से तुम कुछ कम हो ?

मगनचन्द कम ही ही ही। कम ? बिल्कुल नही।

सरिता : तो फिर करो न कोशिश ।

मगनचन्द (जोश में आकर) मुझे कोशिश करने की जरूरत ही नही, मेरी बिजली ! कोयल बोल रही है। .बादल है, बरसा नही, आम है, बौर नही। . तुम हो, पीतम नही। यह इधर तो देखो, इधर, कौन खडा है ? मैं मैं हूँ तुम्हारी बहार, तुम्हारा घनश्याम !.. इधर आओ। आओ न ! क्या कहा, मैं बडा वैसा हूँ !... पर तुम भी तो बडी वैसी हो, मेरी सजनी !.. यह देखो, क्या है ? पान ? ऊँहूँ।. यह है 'हार्ट', दिल। यही तो तुम मेरा छीन बैठी हो। और यह क्या है ? तीर ? ऊँहूँ। यह है प्रेम का कीडा। यही तो मेरे दिल को खा रहा है।

सरिता (अस्वीकृति-सूचक सिर हिलाती हुई) नही, नहीं, मि० मगनचन्द ! तुमसे काम नही चलेगा। भले आदमी हो। प्यार के शौकीन भी। मगर अभी कच्चे हो। मालूम होता है, तुम सिर्फ मैटिनी शो देखते हो, तभी तुम्हारे रग कुछ फीके है।

मगनचन्द (रुआसा होकर) मगर मैं तो कई 'नाइट शो' देख चुका हूँ।

सरिता तो मैटिनी से लेकर लगातार एक बैठक में आधी रात तक तीन शो देखने की आदत डालो। तब कुछ पक्के

वनोगे, मेरे नन्हे दोस्त। अच्छा, अव जरा मि० गोपीनाथ को आने दो। (मगन शिथिल अग और निस्तेज चेहरा लेकर उठ खडा होता है) इतने मायूस न वनो मगन। तुम भी मेरे कुछ-न-कुछ तो काम आओगे ही।

(मगन एक तरफ खडा हो जाता है।)

गोपीनाथ (वैंजो पर झकार करता हुआ आगे वढकर) मायूसी का इलाज गाना है। वल्कि यो कहना चाहिए कि गाना ही रोना है और रोना ही गाना है। ऐसा आजकल की हर हिन्दुस्तानी फिल्म हमे सिखाती है।

सरिता (लुभावनी भगिमा के साथ) अच्छा तो तुम मुझे गाकर रिझाओगे गोपीनाथ ?

गोपीनाथ (घुटने टेककर वैठता हुआ) ऐसे ही जैसे 'गाफिल' फिल्म में करोडकुमार चलनी गुलकद को रिझाता है।

सरिता सुने।

गोपीनाथ (गाता है) हम तुमसे दुलत्ती खाके सनम,
न इधर के रहे, न उधर के रहे।
पर दिल है हमारा इस्पाती,
ये झटके हजारो सह लेगा।*

सरिता वस वन्द करो, वन्द करो।

[गोपी सकपका कर रुक जाता है। सरिता उसके हाथ से वैंजो वडे अन्दाज से ले लेती है और फिर नर्म-मधुर वाणी में वोलती है।]

— गोपीनाथ, तुम्हारा वाजा तो अच्छा है, सितार, तानपुरे की तरह दकियानूसी नही। गाना भी तुमने नफीस

---

*प्रसिद्ध फिल्मी गीत 'हम तुमसे मुहब्बत करके सनम' की तर्ज पर।

छोटा, लेकिन, बुरा न मानना, तुम्हारी शक्ल में करोड़-कुमार की चमक नहीं, (गोपीनाथ अपने चेहरे पर हाथ फेरता है) शीशा होता तो दिखाती। ..और फिर (प्यार से गोपीनाथ की नाक पकड़कर हिलाती हुई) तुम्हारी आवाज भी . मर्दानी कम है। .(गोपीनाथ निराश होकर उठ खड़ा होता है) मायूस न हो गोपीनाथ, तुम भी मेरे कुछ-न-कुछ तो काम आओगे ही।

सूरजभान . सरिता देवी, अब तो तुम्हें मुझे ही हीरो बनाना होगा।

सरिता क्यों ? (मोहक मुस्कराहट) क्या इसलिए कि अब तुम ही रह गये हो सूरजभान ?

सूरजभान इसलिए कि 'स्टट' फिल्मों के हीरो की तरह मैं बोल कर नहीं, गाकर नहीं, बल्कि कुछ करके तुम्हारा मन रिझाऊँगा।

सरिता रिझाओ !

सूरजभान (छलांग मारकर सरिता के निकट पहुँचता है, झटके से साडी के पैकिट को खोलता है और घुटने टेककर सरिता के सामने रखता है) यह लो।

[सरिता हर्षातिरेक से चीखकर साडी को उठाती है और तह खोलकर लटकाकर साडी को देखती है।]

सरिता साडी ! उफ, कितनी खूबसूरत है। कितनी शोख है ! लवली ! बिल्कुल मेरी पसन्द का डिजाइन, बिल्कुल। और रंग भी वही। . कैसे तुम जान गये सूरज बाबू कि मेरी यही पसन्द है।

सूरजभान (गर्वोल्लास से खडा होकर) मेरे दिल से पूछो, सरिता देवी, मेरे दिल की धड़कन से मेरी हीरोइन !

सरिता · (उच्छ्वसित) तुम तुम तो सच ..

सूरजभान तुम्हारा हीरो हूँ।

[मकान के भीतर से किसी के खासने की आवाज। सरिता कुछ चौंक उठती है।]

सरिता हीरो! (फिर खासने की आवाज) अच्छा,... पहनकर दिखाऊँ ?

सूरजभान इससे बढकर मेरा क्या इनाम होगा, मेरी हीरोइन !

सरिता मगर मकान के अन्दर कैसे जाऊँ ?

सूरजभान हमारे सिर-आँखो पर से ..

सरिता ठीक कहा तुमने। अगर तुम 'स्टट' फिल्म के हीरो हो तो मैं भी स्टट फिल्म की हीरोइन से कम क्या बनूं।
दरवाजे से जाने में क्या मजा। तुम लोगो की पीठ और कधो पर से खिडकी मे कूद जाऊँगी।

मगनचन्द पीठ !

गोपीनाथ . कन्धे !

सरिता : तुम दोनो को भी तो मेरे कुछ काम आना है।

सूरजभान हमलोग तुम्हारे लिए ठीक वैसी ही सीढी बना देंगे जैसी 'बूमभडाका' फिल्म मे तीनो बहादुर बनाते है।
मगनचन्द, तुम जरा झुककर बैठ जाओ। (दीवार के सहारे घुटने टेककर और पीठ झुकाकर मगनचन्द बैठता है।) और उसके बाद

गोपीनाथ (जिसे अब फिर लुत्फ आने लगा है) मैं ? मैं कुछ ऊँचा होकर खडा हो जाता हूँ।

[मगन के बराबर थोडा झुककर खडा होता है जिससे सीढी का दूसरा सोपान बन जाता है।]

सूरजभान और उसके बाद मैं सीधा ही खडा हो जाता हूँ।

[गोपीनाथ के बराबर और खिडकी के ठीक नीचे

खडा हो जाता है। तीनो के चेहरे दर्शकों की ओर हैं। जाहिर है कि तीनो को इस स्थिति में कोई शिकायत नहीं है, वल्कि कुछ रस ही मिल रहा है।]

सूरजभान . तो हो गई सीढी तैयार !

मगनचन्द सरिताजी, आओ, और सवसे पहले मेरी पीठ पर ही अपने चरण-कमल रखो !

सरिता शावाश, मगन वावू, यही स्पिरिट होनी चाहिए। तुमने अपनी मायूसी को तिलाजलि दे दी। (**मगन की पीठ पर दीवार से सहारा लेती है। वगल में साड़ी)** देखो, जरा मजवूती से वैठे रहना।

मगनचन्द . तुम कतई चि-चि (**सरिता दूसरा कदम रखकर जमकर खडी होती है, जिससे मगनचन्द की आवाज कुछ दव जाती है।)** न्ता न करो। .

सरिता · अव तुम्हारा नम्वर है गोपी वावू !

(**एक कदम गोपी की पीठ पर रखती है।)**

गोपीनाथ हम लोगो को इस समय अपूर्व आ (**सरिता दोनो पैर रखकर जमकर खडी होती है और वही हाल गोपी का भी होता है।)** ऊँ आ नन्द मिल रहा है।

सरिता लो, सूरज वावू अव आखिरी मजिल है।

(**सूरजभान के कधे पर पैर रखती है।)**

सूरजभान ऐसे रोमाटिक क्षण कितने नौजवानो को नसीव होते हैं ! तुम्हारे चरण क्या है, फू (**वही हाल**) ऊँ .. फू . ल हैं, फूल ! .

सरिता लो, आ गई खिडकी।

(**खिडकी में कूद जाती है। कूदने की आवाज आती है।)**

सूरजभान पहुँच गई ?

सरिता (कमरे में से ही) हा, पहुँच गई ।

मगनचन्द अहा ! इस एडवेंचर ने तो मेरे सारे गम को दूर कर दिया ।

गोपीनाथ कितना सुन्दर रोमास ! कितना अनूठा ! एक नाजुक-सी कली हमारे शरीर को छूती हुई निकल गई । अहा !

सूरजभान तुमने साडी वदली सरिता देवी ?

सरिता (भीतर से ही) वदल रही हूँ ।

सूरजभान . (दोनो की तरफ उल्लास के साथ देखकर और हाथ मलता हुआ) इस साडी मे हमारी हीरोइन कैसी मनमोहक लगेगी !

मगनचन्द (आहिस्ते से) जैसे माला की मुस्कान !

सूरजभान (आहिस्ते से) या मालिनी की चितवन । हा-हा-हा! मिलाओ हाथ ।

गोपीनाथ यानी आज से माला और मालिनी की झडप वन्द ।

सूरजभान विल्कुल । क्यो न मगनचन्द !

मगनचन्द तुम्हारी जीत को मै अपनी हार नही समझता।

सूरजभान आज से माला और मालिनी का सगम हो गया ।

गोपीनाथ आज हम रोमास की उस सतह पर है, जहा मेरा तेरा का भेद ही मिट गया है ।

सूरजभान अहा, यह साडी और वह मुखडा । (पुकारते हुए) सरिता देवी, तैयार हो गई ।

सरिता (भीतर से ही) हा, हो तो गई, लेकिन

सूरजभान लेकिन खिडकी पर तो आओ ।

सरिता कोई मुझे आने नही देता ।

सूरजभान आने नही देता !

सरिता जवरदस्ती रोक रहा है ।

सूरजभान (तैश में आता हुआ) एँ ! यह किसकी मजाल ?... (मगन और गोपी से) दोस्तो, हमारी हीरोइन खतरे मे है !

गोपीनाथ खतरे मे ?

मगनचन्द . मकान को घेर लो। हम अन्दर घुस पडेंगे !

सरिता (वहीं से) दरवाजा अन्दर से वन्द कर लिया है।

सूरजभान एँ ! दरवाजा भी अन्दर से वन्द ?.. कुछ परवाह नही दोस्तो, हम खिडकी पर से ही हमला करेंगे। यही मौका है वहादुरी का !

मगनचन्द (दीवार के पास जाकर झुकता हुआ) मै तैयार हूँ, चढो मेरी पीठ पर गोपी।

गोपीनाथ अत्याचारी के हाथ मे हमारी हीरोइन !

सूरजभान मै उसका खून चूस लूगा, खून .

[तीनो ऊपर चढने का उपक्रम करते है। इतने में खिडकी पर विमल की शक्ल दिखाई पड़ती है।]

विमल . ठहरिए दोस्तो, ठहरिए। इतना गुस्सा नही ।

सूरजभान (तीनों एक साथ) कौन ?

मगनचन्द विमल !!

गोपीनाथ मि० विमल !!

विमल जी हा, मै ही हूँ, विमल।

सूरजभान आप ?

मगनचन्द आप ? वहा ?

गोपीनाथ . आप ?

विमल जी हा, मै, मै, मै। इस वेदर्दी से मुझे न घूरिए, वैसे ही वहुत-कुछ भुगत रहा हूँ। जव से यह साडी मिली है, कह रही है—तुमने क्यो नही दिलवाई ऐसी साडी।

तुम तो चचल स्टोर से चकमा देकर भाग आये, जब मैं काफी लेने गई। अब, भला अब आप ही बताइए, साहब .

सूरजभान . लेकिन यह आप किसकी बाते कर रहे है, मि० विमल ?

विमल मैं बाते कर रहा हूँ अपनी बीवी की। आप लोग नही मिले मेरी पत्नी से ? इधर आओ सरिता, मेरे नये दोस्तो के तो दर्शन करो।

तीनों (आश्चर्यान्वित) सरिता !!

सरिता (खिडकी के पास आकर। नयी साडी पहने है) नमस्ते !

सूरजभान स रि ता देवी। आपकी पत्नी !

मगनचन्द अभी . अभी तो हमने इन्हे खिड़की के जरिए ऊपर भेजा है ?

गोपीनाथ एक मिनट में शादी भी हो गई ?

सूरजभान झूठ, सरासर झूठ !!

विमल एक मिनट ? अरे साहब, एक मिनट नही, चार बरस। . पूरे चार बरस होने को आये मेरी इनकी शादी को। क्यो सरिता ?

सरिता . इस अप्रैल में पूरे चार बरस हो जायेंगे।

मगनचन्द . चार बरस !

गोपीनाथ शादी ! सरिता देवी और शादी !!

सूरजभान यह नही हो सकता। यह नही ....

विमल · अरे जनाब, यह सरिता देवी, यानी मेरी बीवी दो बच्चो की मा भी है।

सूरजभान (चीख उठता है) दो बच्चो की !

सरिता . जी हा। अभी सो रहे है दोनों।

विमल . एक लडका, एक लडकी।

सरिता अगर आप चुपचाप दवे-पाव आने का वादा करे तो दिखा दू दोनो को, वडे भोले है, आपके ही जैसे ।

विमल हा, हा, आइए । मै दरवाजा खोलता हूँ । सरिता, चलो तुम वैठक की वत्ती जलाओ ।

[दोनो खिडकी से गायव हो जाते है, और थोडी देर में दूसरी जगह रोशनी भी होती है । तीनो हतवुद्धि-से खडे है और थोडे मौन के वाद वोलते है ।]

सूरजभान (भर्राए गले से) मगन भाई ! गोपी भाई ! हम लुट गये ।

मगनचन्द हमारे रोमास का महल ढह गया !

सूरजभान हमारा चमकता हुआ सोना मिट्टी हो गया !

मगनचन्द यह क्या हो गया ? कैसे हो गया ?

सूरजभान (विक्षिप्त, दोनो हाथ उठाकर) ओ मेरे सपने ! कहा है तू ? लौट आ मेरे सुनहले सपने, लौट आ !

गोपीनाथ (जो अवतक गहन चिन्ता मे लीन था । ठोडी हाथ से पकडे हुए, खोज की मुद्रा में) लेकिन सूरजभान !.. मगनचन्द ! सुनो मुझे इसमें कुछ गलती मालूम होती है ।

सूरजभान गलती ?

मगनचन्द क्यो ?

गोपीनाथ क्योकि क्योकि किसी भी फिल्म में ऐसा नही हुआ । हुआ ही नही । जरा याद करो ।

मगनचन्द . (सोचता हुआ) तुम कहते तो ठीक हो ।

गोपीनाथ . जव फिल्म में ही नही हुआ, तव ऐसी वात हो कैसे सकती है ?

मगनचन्द . नही हो सकती !

सूरजभान नही ?

मगन, गोपी नही, बिल्कुल नही !

सूरजभान (आखो में चमक और उत्साह) नही तब . तब . .तो हमारे सपनो को हमसे कोई नही छीन सकता ।

मगन, गोपी कोई नही छीन सकता ।

[तीनों के चेहरे विश्वास और आशा से दीप्त हो उठते हैं और वे एक ही तरफ देखने लगते हैं, मानो वहा से आशा की किरण आती हो । आइए, हम आप इन्हें अब यहीं छोड दें ।]

(पर्दा गिरता है ।)

परिशिष्ट

मैं भी खेल चुका हूं।

[कुछ रंगमंचीय अनुभव]

रगमच का चस्का मुझे वचपन में ही लग गया था, कौन-सा नाटक पहले-पहल देखा, यह तो निश्चित रूप से नही कह सकता, लेकिन अपने सर्वप्रथम अभिनय की याद ताजा ही है। वात शायद सन् '२५ की है जव मेरा वर्णमाला से परिचय नया ही था। मेरे अन्तरग वन्धु नरेन्द्र (आजकल हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्रीनरेन्द्र शर्मा) स्कूल मे मुझसे तीन-चार कक्षा आगे थे, लेकिन कद और चचलता के नाते मेरा उनका जोडा शुरू मे ही कायम हो गया। इस दोस्ती की वुनियाद पडी इसी अभिनय में। स्कूल के वार्षिकोत्सव के लिए तैयारिया हो रही थी। तभी किन्ही अध्यापक महोदय ने सोचा कि एक लघु नाटक मे मेरा भी पार्ट रहे। आवृत्ति यानी 'रेसिटेशन' में कई वार सिक्का जम चुका था, झिझक शायद ही कभी हुई हो; इसलिए इस नये खेल मे वडे चाव और उत्सुकता के साथ मैं शामिल हो गया। तय हुआ कि वदरीनाथ भट्ट के प्रहसन 'चुगी की उम्मीदवारी' के दो दृश्यो को खेला जाय।

अभी कुछ दिन हुए 'चुगी की उम्मीदवारी' का एक नया मस्करण देखने को मिला। लेकिन मेरे मन मे तो उसकी वही प्रति बस गई है—गुटिका साइज की, पुराने ढग के टाइप मे छपी, काले कवर की पुस्तक। उस जमाने के लिए वह एक अप-टू-डेट नाटक था। उसमे न शेर थे, न जोशीले भाषण। साधारण बोल-चाल की भाषा या कही-कही विद्रूप और व्यग्य का फव्वारा। चरित्र-चित्रण कही-कही तो बिल्कुल यथार्थानुकूल था, कमजोरियो और स्वभावजनित कारनामो का यथातथ्य खाका खीचा गया था। लेकिन जैसा प्रहसनो मे होता है, कुछ पात्र किसी खास कमजोरी या बहक या सनक या आदत के मूर्तमान स्वरूप हो गये थे। ऐसे पात्र अतिरजना की प्रचुरता मे पनपते है और प्राय उसी मे अपना अस्तित्व भी खो बैठते है। लेकिन यदि उनमे मे कोई एक परम्परा की पहली कडी बन गया तो समझ लीजिए अमर भी हो गया। सस्कृत के जिस नाटककार ने सब से पहले पेटू पडित की कल्पना की, वह बडा भाग्यवान् था, क्योकि उसकी कृति कई पीढियो तक रसज्ञो का कण्ठहार बनी रही। इसी तरह बेन जान्सन के जमाने मे कजूस का बोलबाला था, शेरिडन और गोल्डस्मिथ के युग मे फैशन के भूत पर सबकी नजर थी, कुछ भारतीय देहाती नाटको मे विवाहोत्सुक वृद्ध लोकप्रिय नायक रहा है। बदरीनाथ भट्ट ने अतिरजना शैली मे कई मौलिक पात्रो की सर्जना की, लेकिन परिवर्तनप्रिय इस युग ने उन्हे अपनाया नही और 'चुगी की उम्मीदवारी' के सेठ जी और शकूर मिया हमारी स्मृति मे सस्था के रूप में स्थापित न हो पाये।

इसीलिए उस नाटक से अधिक प्रभावोत्पादक पात्र वे थे जिन्हे गढने मे भट्ट जी ने प्रयासहीन कौशल से काम लिया था—उम्मीदवारो के पैरवीकार, परेशान वोटर, खुशामदी टटटू इत्यादि-इत्यादि, वे लोग 'कारटून' नही थे, दैनिक अनुभव मे पाये जाने वाले व्यक्तियो की छाया थे। मुझे एक पैरवीकार का 'पार्ट' दिया गया। नाम था कन्हैया,

काम था अपने उम्मीदवार मामाजी के लिए वोट मागते-मागते, अपने कोमल शरीर की द्रुतगामिनी क्षीणता पर अफसोस करते-करते प्रतिपक्षी के पैरवीकार से भिड जाना। वह मुठभेड ही उस दृश्य का चरमोत्कर्ष थी। प्रतिपक्षी के पार्ट के लिए नरेन्द्र को चुना गया था। उन्हे एक बहरे पैरवीकार का पार्ट करना था जो रुपये देकर 'वोट' खरीद रहा था। उनके साथ झडप होते-होते मुझे उनके रुपयो की थैली लेकर भागना था। लेकिन नरेन्द्र इन सब मामलो मे हमेशा मुझसे अधिक फुर्तीले रहे है। अत नाटककार की मशा के बावजूद, उस मुठभेड मे उन्होने थैली से हाथ धोना मजूर नही किया। मुमकिन है अभिनय की मुठभेड असली मुठभेड मे तबदील हो जाती, लेकिन नाटककार ने गालियो का इतना मनोरजक सग्रह किया था कि हम दोनो और दर्शको का ध्यान उधर बँट गया। उस वार्तालाप का कुछ नमूना यह है—

क०—शक्ले-हैवान।

व०—बेईमान।

क०—चोर।

व०—सीना जोर।

क०—कजूस।

व०—मक्खीचूस।

क०—मनहूस।

न०—उल्लखद्दूस।

व०—विलायती बिल्ली।

क—हिन्दुस्तानी तिल्ली।

वगैरह-वगैरह।

इस प्रथम प्रहसन के बाद हास्य-प्रधान नाटक मे मैंने शायद एकाध बार और हिस्सा लिया होगा। सुदर्शन के 'आनरेरी मजिस्ट्रेट' नामक प्रहसन को हम दोनो ने खेला था। बहुत दिन बाद प्रयाग-विश्वविद्यालय

फ्राइड क्लब द्वारा अभिनीत 'मर्चेण्ट आव वेनिस' से सम्बद्ध एक रूपक मे भी मुझे लान्सलाट गोबो नामक विदूषक का पार्ट लेना पडा था, जिसका जिक्र आगे करूँगा। लेकिन स्वभावत मैंने अपने को कॉमिक पात्रो के अयोग्य पाया। स्वभावतया योग्यता और रुझान का ध्यान प्राय हमारी एमेचर नाटक मण्डलियाँ पात्रो के चुनाव मे कम ही रखती है। सोचा जाता है कि जो भी रगमच पर उतर सका वह किसी भी पात्र के लिए अच्छा अभिनेता है। सिनेमा मे तो ऐसी गलती अकसर की जाती है। मोतीलाल को एक करुणार्द्र रोमाण्टिक नायक के रूप मे देखकर न रुलाई आती है, न हँसी। पृथ्वीराज के नाटक 'कलाकार' में चपल पहाडी लडकी की भूमिका मे उजरा मुमताज बिल्कुल नही जँची, चूकि उनका व्यक्तित्व गद्दार की नायिका जैसी अन्तर्द्वन्द्व पूर्ण भूमिका मे अधिक उभरता है।

प्रहसन के अभिनय मे कुछ हद तक अपने को भूलने की क्षमता अधिक अपेक्षित है। गम्भीर भूमिका मे अभिनेता के लिए निजी भावनाओ और वार्तालाप मे अन्तर्हित भावप्रवाह के बीच तादात्म्य स्थापित करना इतना कठिन नही होता। शायद उसका एक कारण यह है कि गम्भीर पात्र की समीचीन अभिव्यक्ति के लिए बाह्य उपकरणो, वातावरण और अन्य पात्रो के ऊपर इतना निर्भर नही रहना पडता जितना निजी भावोन्मेष पर।

जो भी हो, मुझे यह समझने मे देर नही लगी कि मै विदूषक के रूप मे प्रभावपूर्ण अभिनय नही कर सकता। कुछ दिनो बाद नरेन्द्र और मै कुश और लव की भूमिका मे उतरे। नाटक किसका लिखा हुआ था यह अब याद नही पडता, लेकिन 'लवकुश' की कहानी से मै इतना प्रभावित हुआ कि मेरी सर्व प्रथम रचनाओ मे से एक एकाकी इसी विषय पर है जो १९३० या १९३१ मे प्रयाग की मासिक पत्रिका 'सेवा' में प्रकाशित हुआ था। मेरी फाइल मे उस प्रारम्भिक रचना का विशिष्ट स्थान है।

'लवकुश' का जो अभिनय मैंने और नरेन्द्र ने किया था, वह उससे पहले की बात है। अभिनय सफल हुआ था इतना मुझे याद है, लेकिन उसमें सब से मजेदार बात शायद यह थी कि कुश (नरेन्द्र) तो गोरे थे, लव (मैं) सांवला और जो मित्र रामचन्द्र बने थे वह बिल्कुल स्याह थे, ऐसे काले कि पाउडर इत्यादि भी उस नीलावृत्त घनसमूह की प्रगाढ कालिमा को हल्का न कर सके। असल में स्कूलों के अभिनय में यदि प्रसाधनों और चमक-दमकपूर्ण पोशाकों का कम ही इस्तेमाल किया जाय तो अच्छा है। उन दिनों तो रंग-बिरंगी पोशाकों और चमकते आभूषणों के बिना नाटक खेला ही नहीं जा सकता था। नाटककार भी पोशाक प्रसाधन के विषय में कोई आदेश नाटक में नहीं देते थे, क्योंकि पोशाक के विषय में कुछ सर्वस्वीकृत 'सिद्धान्त' थे। राजा चाहे पौराणिक युग का रहे चाहे राजपूत युग का, पहनेगा वह चूडीदार पाजामा, बूटेदार अचकन, राजस्थानी साफा और कमरबन्द। आधुनिक यथार्थवादी अभिनय के युग में ये बातें हास्यास्पद लगती हैं। लेकिन यूरोप के मध्ययुगीन लोक-रंगमंच में और भारतवर्ष में कथाकाली इत्यादि अभिनयों में पोशाक के विषय में कुछ परम्पराएँ स्थापित हो गई थीं। यदि ऐसा न हो, तो लोक-रंगमंच तो चल ही नहीं सकता, क्योंकि लोक-रंगमंच अलग-अलग नाटककारों के ऊपर निर्भर नहीं करता, वह तो परम्परा और लोकाभिव्यक्ति के सहारे विकसता है। लोक-रंगमंच की इस प्रवृत्ति का प्रभाव हमें संस्कृत नाट्य-शास्त्रों में पात्रों के वर्गानुसार उनकी वेश-भूषा में रंग के चुनाव के उल्लेख में मिलता है। यूनानी नाटक के अभिनय में तो दर्शक पोशाक की कुछ विशेषताओं से फौरन पहचान लेते थे कि रंगमंच पर कौन पात्र आया। एस्किलस के शायद सबसे पहले नाटक 'दि सप्लाइन्ट्स' में ही यह परम्परा स्थापित हो गई थी कि नायक यदि वह राजा है, तो ऊँचे तले और एडी के जूते पहनेगा और उसके सिर पर 'ओकस' नामक जूडा होगा, जिससे उसके व्यक्तित्व

का रोब झलके। लेकिन जैसा मैंने ऊपर कहा, इन परम्पराओ की बुनियाद लोक-रगमच मे पडी थी। परन्तु पारसी थीएट्रिकल कम्पनियो के असर से हम लोग पोशाको और प्रसाधन की जो रीति मानते थे, उसका तो एकमात्र आधार थी भडकीलेपन से दर्शको को चकाचौंध कर देने की इच्छा। जो जितनी ही कीमती पोशाक पहनता था, उतना ही उसका रोब रहता था। न जाने कितने रईसो के घरो की खाक पोशाको की खोज मे हम लोग छाना करते थे।

'लवकुश' के बाद, 'चन्द्रहास' की भूमिका मे मुझे उतरने का अवसर मिला। उसमे भी नरेन्द्र मेरे साथ थे। उसकी खूबी थी ब्रजभाषा के कुछ मनोहर दोहे, सवैये और छद, जिनकी छटा गद्यमय वार्तालाप को आकर्षक बना देती थी। वे छद मुझे बरसो तक याद रहे और हिन्दी कविता मे मेरी अभिरुचि उन्ही के द्वारा आरम्भ हुई। सस्कृत नाटको की शैली मे भारतेन्दु युग के नाटको मे हम इस प्रकार के छन्दो की बहुलता पाते है, जो कोरे पद्याश ही नही नाटको के अलकार है। उनकी अस्वाभाविकता अखरती नही, नाटक को चार चाद लगा देती है। अत्याधुनिक पाश्चात्य नाटको की गतिविधि से मालूम पडता है कि रगमच का तथाकथित यथार्थाग्रह कोई अच्युत सिद्धान्त नही। क्रिस्टोफर फ्राई और टी० एम० इलियट ने अग्रेजी यथार्थवादी नाटको की धारा को पलट ही दिया और अब तो खूब धडाके के साथ रगमच पर काव्यात्मक नाटक खेले जा रहे है। रही कृत्रिमता की बात, तो उसके जवाब मे पूछा जा सकता है कि यदि बर्नार्ड शॉ के पात्रो द्वारा बोल-चाल मे कही ऊँचे स्तर की भाषा में, जीवन के गहन तत्त्वो का लम्बे वाक्यो मे प्रतिपादन हमे अस्वाभाविक नही जान पडता, तो भारतेन्दु के पात्रो के अर्थगाम्भीर्य और सशक्त सौन्दर्यपूर्ण दोहो से हम क्यो भडक उठते है? क्या इसीलिए कि एक गद्य है और दूसरा पद्य? वस्तुत तो दोनो वाक्य है और दोनो का नाटक की आत्मा मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। अस्वाभा-

विकता का पुट तो उस समय आता है, जब इन काव्यांशो का स्थान कोरे पद्य ले लेते हैं। राधेश्याम, आगा हश्र काश्मीरी और बेताब इत्यादि के नाटको के शेर कविता नही, अलकार नही, केवल पद्य हैं जिसके द्वारा अभिनेता को अपने हाथ-पैर चमकाने और अपने स्वर की प्रखरता प्रकाशित करने का मौका मिलता था। हिन्दी नाटको के ह्रास और उसमें से 'साहित्यिकता' के तिरोहण का एक प्रमुख कारण यही था कि भारतेन्दु-युग के काव्यात्मक शैली के दोहो, सवैयो, छन्दो का स्थान पारसी थीएट्रिकल युग के 'वतगडो' अशआर ने ले लिया। न उनमे उर्दू अशआर की व्यजना थी और न हिन्दी कविता की मार्मिकता। थी एक सस्ती भावुकता और उत्तेजना जिसका नमूना है 'वीरअभिमन्यु' का यह चरण—

"जिस व्यूह के मुखद्वार का तू नागराज है।
वह व्यूह और व्यूह की सब शान तोड दू।"
(ताली और 'वाह वाह'।)

लेकिन उस जमाने मे तो इसी का बोलबाला था और मुझे यह मानने मे कतई सकोच नही कि इस शैली के अभिनेताओ में अपने जिले मे मेरा एक प्रधान स्थान था। राधेश्याम जी का 'वीर अभिमन्यु' नाटक उन दिनो का शायद सबसे लोकप्रिय नाटक था, और उसमे अभिमन्यु की भूमिका में मेरा अभिनय बहुत पसन्द किया जाता था। यहा तक कि १९३२ में जब मैं हृषिकेश मे एक स्काउट कैम्प में गया हुआ था (जिसके अधिष्ठाता थे प० श्रीराम वाजपेयी) तब बाबा काली कमलीवाले ने खास तौर से हम लोगो से यह नाटक कराया और उसकी बडी 'वाहवाही' हुई। उस पात्र का अभिनय करते समय मुझे एक नशा-सा चढ जाता था, जिसमे न यह ख्याल रहता था कि मैं 'मैं' हूं या 'अभिमन्यु'। बहरहाल उस नाटक का वह अश जिसमे अभिमन्यु घेर कर मारा जाता है, मेरी मा कभी नही देख पाती थी, बीच ही से उठ कर चली

जाती थी। हमारे एक मित्र और अध्यापक श्री लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज उस नाटक मे अर्जुन का पार्ट इस खूबी से अदा करते थे कि दर्शको के आसू मुश्किल से रुक पाते और जिस समय वह भर्राई आवाज मे कहते "जाग जाओ गीदडो चमगादडो" उस समय दर्शक भवन मे एक सन्नाटा-सा छा जाता, और सारा जन-समूह कण्ठावरुद्ध हो जाता। इसमे कोई सदेह नही कि राधेश्याम का 'वीर अभिमन्यु' अपने जमाने की एक सस्था था और उसकी उत्तेजनापूर्ण शैली उस युग के नवयुवको को बहुत भाती थी। नरेन्द्र उस नाटक मे प्राय श्री कृष्ण का पार्ट किया करते थे। उसके बाद ही से नरेन्द्र धीरे-धीरे उत्तेजनापूर्ण अभिनय से दूर हट कर सुकुमार और कमनीय अभिनय की ओर खिच गये जिसके लिए वे रूपरंग से पूरी तरह उपयुक्त भी थे। वे मुझसे चार साल पहले ही प्रयाग विश्वविद्यालय मे आ गये थे और वहा हिन्दू बोर्डिंग हाउस मे स्त्री-पात्रो के अभिनय के लिए उनकी प्राय माग रहा करती थी। १९३४ मे शायद उन्होने अपना अतिम अभिनय श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'सन्यासी' मे किया था। उस अभिनय मे 'पार्ट' लेने वाले व्यक्तियो में आजकल के प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल और भूले हुए साहित्यिक वीरेश्वर सिंह भी थे।

वीर अभिमन्यु के बाद स्कूल मे और भी नाटक हम लोगो ने खेले लेकिन और किसी मे मै इतना सफल नही हुआ। उन्ही दिनो द्विजेन्द्रलाल राय के नाटको से मेरा परिचय हुआ और उन पर मै इतना मुग्ध हो गया कि एकाध नाटक के कई पृष्ठ मुझे कण्ठाग्र थे। चूकि द्विजेन्द्रलाल राय के नाटको मे शेर नही थे इसलिए हमारे नगर मे तो उनका 'चलना' मुश्किल था, लेकिन मै प्राय दूसरे नाटको मे अपने 'पार्ट' के बीच मे डी० एल० राय के कुछ वाक्य अपने आप ही शामिल कर लेता था। शायद मेरी नाट्यरचना का प्रथम प्रयास यही प्रक्षेप थे। मुझे खूब याद है कि एक बार जब हम लोग किन्ही साधारण लेखक के 'दुर्गादास'

का अभिनय कर रहे थे, तो मैंने इसी नाम के डी० एल० राय के नाटक में से चन्द वाक्य अपने पार्ट में जोड लिए थे। मैं दुर्गादास के भाई की भूमिका में था। मेरे अभिनय का प्रभाव उन वाक्यों से द्विगुणित हो जाता, लेकिन मेरी निराशा का अन्दाज कीजिए कि जहा वे वाक्य मुझे कहने थे, वही उनसे पहलेवाला वाक्य दुर्गादास महोदय भूल गये। मैं अपने आप उसे कह भी नही सकता था, क्योंकि मेरे पहले शब्द थे—"अनुमान! इसे आप अनुमान कहते है, भाई साहब?"

द्विजेन्द्रलाल राय के अतिरिक्त एक और प्रभाव मेरे ऊपर पडा जिसने रंगमंच-सम्बन्धी मेरी धारणाओं को धीरे-धीरे बदल दिया। प्रारम्भ से ही हम लोग अंग्रेजी के कुछ 'डायलॉग' (संवाद) स्कूल के उत्सवों के अवसर पर उपस्थित किया करते थे। उनमें से कुछ एकांकियों के रूप मे होते थे। फ्लोरा स्टील नामक लेखिका का एक संग्रह भारतीय इतिहास की झांकियों के रूप में था। इनके नाटक हम लोगों को बहुत प्रिय थे। संवादों की शैली भावात्मक होते हुए भी छिछली न थी। उन्हीं दिनों मैंने स्वयं अंग्रेजी में एक लघु नाटक उस अंग्रेजी कविता के आधार पर लिखा जिसमें केसेबियांका नामक वीर बालक जलते हुए जहाज पर अपने स्थान को न छोड कर कर्तव्य-पालन में अपने प्राण की आहुति दे देता है। हम लोगों ने स्कूल मे उस अंग्रेजी नाटिका का प्रदर्शन भी किया, दुर्भाग्यवश मेरे पास उसकी एक भी प्रति नही रह गई है। सन् '३२ में मुझे शेक्सपियर के 'ऐज यू लाइक इट' के उस दृश्य का अभिनय करने का अवसर मिला जिसमे जाक्स का वह अमर भाषण है—"आल द वर्ल्डज ए स्टेज"। इन अंग्रेजी नाट्यदृश्यों को प्रस्तुत करने मे हम लोगों को न तो बहुत भव्य स्टेज तैयार करना पडता और न अभिनय मे विशेष उत्तेजना दिखानी पडती। 'वीर अभिमन्यु', 'ईश्वर भक्ति' और 'चन्द्रहास' इत्यादि के लिए तो रंगबिरंगे पर्दों इत्यादि के बिना काम ही न चलता था। लेकिन अंग्रेजी सीन-सिनरी उपस्थित करने के साधन न

होने के कारण उन्हे हम प्राय खुले रग-बिरगे पर्दे पर ही खेला करते। इस तरह अभिनय पर अधिक जोर डालना पडता और ऊपरी टीम-टाम पर कम।

आगे चल कर सन् १९३३ मे जब इलाहाबाद के यूइग क्रिश्चियन कालिज मे पहुँचा तब मुझे पहले-पहल अभिनय की आधुनिक-कला को समझने का अवसर मिला। हमारे अग्रेजी के अध्यापक श्री० विस्वास ने शेक्सपियर के 'जूलियस सीज़र' और 'मर्चेण्ट आव वेनिस' मे कुछ चुने हुए दृश्यो के अभिनय का आयोजन किया। यवनिका के लिए टेनिस क्लब के पर्दे इस्तेमाल किये गये। पोशाक तैयार करने मे अमेरिकन अध्यापको ने मदद दी। किन्तु हम लोगो को विशेष तैयार किया गया अभिव्यक्ति और 'एक्टिग' मे। श्री ० विस्वास स्वय सिद्धहस्त अभिनेता थे। रिहर्सल बहुत दत्तचित्त होकर कराते और हम लोगो को अपने-अपने 'पार्ट' का खूब अभ्यास करना पडा। मुझे 'जूलियस सीजर' के प्रसिद्ध फोरम सीन मे मार्क एण्टनी की भूमिका मिली और आज तक मुझे मार्क एण्टनी के भाषण के वे शब्द स्फुरित कर देते है जिसमे वह सीजर के हत्यारो के विरुद्ध आवाज़ उठाते समय कहता है, "दोस्तो, रोम निवासियो और प्यारे देशवासियो! मै सीज़र को दफनाने आया हूँ, उसका गुणगान करने नही!" उस भाषण का अभ्यास करते समय विस्वास साहब से एक बडे काम की बात मैने सीखी जिसे स्वर-वैचित्र्य का नाम दिया जा सकता है। उन्होने बताया कि नाटक मे अभिनेता को प्रत्येक वाक्य या वाक्याश को निजी सत्ता देनी है। जहा लम्बे भाषण हो वहा तो विविधता यो भी आवश्यक है। एक ही लय, एक ही स्वर मे चार-पाच वाक्यो को लगातार नही बोलना चाहिए। अभिनेता की परिस्थिति थोडी बहुत सगीत-साधक से मिलती-जुलती है। उसे न सिर्फ जीवन के एक अश का प्रदर्शन करना है, बल्कि साथ ही, एक कलात्मक सृष्टि भी करनी है। यानी एक-एक वाक्य के अर्थ और महत्ता को समझ कर उसका

इस तरह बोलना है कि अन्य वाक्यो से यह भिन्न हो। कही-कही तो भिन्न-भिन्न शब्दो का 'नाद रूप' स्थिर करना आवश्यक हो जाता है। मार्क एण्टनी के भाषण मे तीन जगह हत्यारो के लिए यह वाक्य कहा गया है "वे लोग, वे सब लोग, भलेमानस है।" (दे आर ऑल ऑल जेण्ट्लमेन)। पहली बार इस वाक्य के 'वे लोग' शब्दो पर ज़ोर डालना था, दूसरी बार 'भलेमानस' पर और तीसरी बार "है" पर। इस तरह क्रमिक विकास से स्वर-वैचित्र्य द्वारा शेक्सपियर के गहरे व्यग्य को अभिव्यक्त किया जा सकता है।

गत वर्ष पृथ्वीराज ने मुझे बताया कि 'पठान' मे उन्होने सामूहिक रूप से स्वर वैचित्र्य के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है। कुछ स्थलो मे छ-सात पात्र एक के बाद एक, ऐसे स्वर में बोलते है कि सम्पूर्ण सप्तक के आरोह या अवरोह का आभास होता है। कहना नही होगा कि सगीतानुगामी इस कलात्मक प्रदर्शन को स्वाभाविक रूप में उपस्थित करने के लिए अभ्यास और परिश्रम की आवश्यकता है।

'जूलियस सीजर' के अभिनय की तैयारिया खास तौर से हम लोगो ने इसलिए की थी कि हमारे उत्सव के मुख्य अतिथि उस रोज प्रयाग विश्वविद्यालय के सुविख्यात विद्वान प्रोफेसर अमरनाथ झा थे। दुर्भाग्यवश झा साहब जब तक पहुँचे, मेरा 'पार्ट' खत्म हो चुका था, और मै उन्हे अपना हुनर दिखा ही न सका। उसके दो वर्ष बाद यानी सन् १९३५ मे मुझे झा साहब की वरद छाया में विद्याभ्यास का अवसर मिला और तभी उन्ही के आग्रह से मुझे पुन नाट्य-रचना की ओर झुकना पडा। म्योर होस्टल, जिसके वे उन दिनो वार्डन थे, प्रति वर्ष दीक्षान्त महोत्सव पर अग्रेजी नाटको को प्रस्तुत किया करता था। मैंने हिन्दी नाटक के भी अभिनय का प्रस्ताव किया। झा साहब तो राजी हो गये लेकिन शर्त रखी कि नाटक ४५ मिनट से ज्यादा का नही होना चाहिए। उन दिनो हिन्दी मे एकाकी नाटको का चलन नही था।

भुवनेश्वर प्रसाद का कारवा शायद उसके कुछ महीने बाद प्रकाशित हुआ। हिन्दी मे एकाकीकार शायद अकेले स्वर्गीय गणेशप्रसाद द्विवेदी थे। (रामकुमार जी उन दिनो कवि के रूप मे ही समादृत होते थे।) मैंने माधुरी मे उनका एकाकी 'पर्दे का अपर पार्श्व' पढा, तो रगमच के विचार से खेलने योग्य जँचा। उन्ही दिनो सुना कि वह नाटक द्विवेदी जी के सग्रह 'सोहाग बिन्दी' के नाम से इडियन प्रेस से छप रहा है। मै इडियन प्रेस जा पहुँचा और उस पुस्तक की पहली प्रति मैंने ही खरीदी। अभिनय की तैयारिया शुरू हो गई। मै उस नाटक का निर्देशक और 'प्राम्प्टर' था, लेकिन स्वय रगमच पर नही उतरा। म्योर होस्टल मे वह हिन्दी नाटक का पहला अभिनय था और प्रयाग मे एकाकी के सर्वप्रथम अभिनयो मे से एक। समस्यामूलक और घटनाशून्य होते हुए भी वह नाटक काफी प्रशसित हुआ और मुझे अपने उस नूतन प्रयोग से प्रोत्साहन भी मिला और उपयोगी अनुभव भी।

जिन दिनो उस एकाकी का रिहर्सल हम कर रहे थे, द्विवेदी जी को सूचना मिली कि हम लोग उनके नाटक का अभिनय कर रहे है। वे बेचारे स्वय म्योर होस्टल आये और अपने सुझाव उन्होने हमे दिये। तभी मैंने समझा कि प्राय उत्साही आयोजकगण नाटककार की पूर्व अनुमति लिए बिना अभिनय पर जो जुट जाते है, उसमे नाटककार का वे कितना भारी अपमान करते है।

एक वर्ष बाद सन् १९३६ के वार्षिकोत्सव के लिए झा साहब ने स्वय हिन्दी एकाकी की माग की और तब मैंने आधुनिक शैली मे अपना पहला एकाकी "मेरी बासुरी" लिखा। लिखने से पूर्व मैंने अभिनेताओ की फेहरिस्त बना ली और उनके व्यक्तित्व को मद्देनजर रखते हुए ही अपने नाटक के पात्रो की सृष्टि की। फलस्वरूप अभिनय मे हम लोगो को कुछ आसानी हो गई। रिहर्सल के समय अक्सर झा साहब स्वय आ जाते। हर अभिनय से मैंने कुछ-न-कुछ सीखा। 'मेरी बासुरी' म

एक भावुक आदर्शवादी नवयुवक का पार्ट मुझे करना था, लेकिन कहीं-कहीं भावुकता के आवेश में आकर मैं बहुत उत्तेजित हो जाता था। झा साहब ने लगाम खींची और मैंने जाना कि भावावेश का अभिनय भी तभी प्रभावोत्पादक होता है जब उद्वेलन का संकेत हो, झंझा नहीं। पटने में कई अभिनय पिछले दो वर्षों में देखने को मिले हैं और प्राय सभी में मुझे यह दोष दीखा कि भावुक पात्र पूरे नाटक के दौरान में एक विचित्र आवेश में रहते हैं, हर वाक्य में तनाव (टेन्शन), "शब्द-शब्द है सुधि का दर्शन, चरण-चरण है आह।" आखिर इतनी अनियन्त्रित और सर्वव्यापिनी उत्तेजना की जरूरत क्या है? रोजाना की बातचीत में अक्सर हम लोग उत्तेजित हो जाते हैं, लेकिन यह तो नहीं होता कि पूरे घंटे भर कम्पित स्वर और आवेशपूर्ण मुद्रा में बोलते रहे। और फिर उसी स्तर पर बराबर बोलते रहने के कारण जो वस्तुत उत्तेजनापूर्ण स्थल हैं उनका पूरा-पूरा प्रभाव लक्षित नहीं हो पाता। कांच-खंडो की लडी में असली हीरा खो जाता है।

जिस उत्सव पर 'मेरी बांसुरी' का अभिनय हुआ उसमें इलाहाबाद के तत्कालीन कमिश्नर श्री बी० एन० मेहता मुख्य अतिथि थे और उन्होंने लेखक और निर्देशक को एक पुरस्कार देने की घोषणा भी की। किन्तु कुछ महीने बाद उनकी मृत्यु ही हो गई और मुझे घोषणा मात्र से सन्तुष्ट हो जाना पडा। उसके बाद से प्रयाग में मुझे कई नाटक लिखने और खेलने के अवसर मिलते रहे। १९३७ में 'भोर का तारा' लिखा और वह रंगमंच पर खूब जमा। उसके पहले अभिनय में ही मैं गुप्तकालीन पात्र बन कर मय चश्मे के रंगमंच पर जा पहुंचा! भाग्यवश यह वैषम्य दर्शकों को उस समय नहीं खटका लेकिन एक दूसरे अवसर पर मुझे इस लापरवाही के लिए बडी लताड पडी। फ्राइडे क्लब ने मर्चेण्ट आव वेनिस का काल्पनिक छठा अंक खेला, शेक्सपियर ने तो पांच ही अंको का नाटक लिखा है। हमारे अंग्रेजी

प्राध्यापक डा० दस्तूर ने छठा अक लिख कर यह अनुमान करने की चेष्टा की कि शेक्सपियर के पात्रो पर उसके वाद क्या वीती होगी। मुझे विदूषक 'लान्सलाट गोवो' का पार्ट दिया गया। अग्रेजी नाटको मे विदूषक को मूर्ख (फूल) के नाम से सम्बोधित किया जाता है। जव मैं अपना अभिनय करके ग्रीनरूम मे वापस पहुँचा, तो डा० दस्तूर थोडी देर वाद आये और कहने लगे—"ओ फूल, फूल !" (अरे मूर्ख, मूर्ख !) मैं समझा कि मुझे विदूषक का सफल अभिनय करने पर वधाई दी जा रही है ! लेकिन जव दस्तूर साहव ने उन शब्दो को दोहराया, तो मैंने देखा कि उनकी मुद्रा वधाई या आशीर्वाद देने वाले गुरुजन की नही है। वह तो मुझे नाटकवाला 'मूर्ख' नही, असली मूर्ख वना रहे थे ! मालूम हुआ कि मैंने वाकई वडी मूर्खता की थी और १५वी सदी के वेनिस मे २०वी सदी का चश्मा पहने जा पहुँचा था।

१९३५ से १९३९ तक मुझे एमेचर रगमच के सभी विपयो का अनुभव हुआ। मैं कई नाटको के आयोजन मे केवल प्राम्पटर रहा था, कुछ मे निर्देशक, कुछ मे अभिनेता और नाटक तो लिखे ही। सन् ३८ मे अपनी वहन के कालेज के वार्पिकोत्सव के लिए कलिग-विजय लिखा जिसमे मुझसे माग की गई कि पुरुप पात्र एक से ज्यादा न हो, गाने हो, प्राचीन वेश-भूपा हो ! मेरी वहन के कालेजवालो ने मुझे आमत्रित तो नही किया, लेकिन सुना कि अभिनय वहुत अच्छा रहा, पर एक कसर रह गई। एक पात्री को अपनी कचुकी मे से एक पत्र निकाल कर सम्राट् अशोक को देना था, लेकिन वह वेचारी पत्र ले जाना ही भूल गई, वस सम्राट् है कि प्रतीक्षा कर रहे है, और पात्री है कि पत्र देने की घोपणा करने के वाद निष्क्रिय खडी है ! समझ लीजिये की कोरिया की सधिवार्ता का-सा गतिरोध हो गया ! खैर, मेरी वहन ने जल्दी से पर्दा गिरा दिया और पत्र पकडा देने के वाद उठा दिया। दर्शक समझे की शायद नाटककार की प्रतीकवादी योजना है !!

उसके वाद भी नाटक तो कई लिखे और उनका अभिनय तो यत्र-तत्र होता ही रहा है, किन्तु सरकारी नौकरी मे इतना अभिनय करना पडता है कि रगमच के अभिनय की गुजाइश ही नही । अव पिछले दो वर्षो मे लोक-रगमच के आयोजन का वीडा उठाया है। उसके अनुभव अभी हो ही रहे है और उनकी अपनी कथा है जिनका विवरण फिर कभी लिखूगा।

हिन्दी रगमच के भविष्य के विषय में मेरी क्या धारणाएँ है यह मैं 'कोणार्क' के परिशिष्ट मे लिख चुका हूँ। जहा एक ओर पृथ्वीराज जैसे महान् कलाकार उच्च कोटि के और सर्वसाधन-सम्पन्न व्यावसायिक रगमच की स्थापना कर रहे है, वहा दूसरी ओर अव्यावसायिक (एमेचर) अभिनेताओ और निर्देशको को भी इस पुण्य-यज्ञ में योगदान देते रहना है। विद्यालयो मे ही नही, क्लवो और सामाजिक सस्थाओ को भी नाट्य-शालाएँ स्थापित करनी चाहिए, और साहस के साथ अभिनेय न समझे जानेवाले नाटको को प्रदर्शित करना चाहिए। पटने ही का अग्रेजी नाटक क्लव (जिसमें अधिकतर भारतीय सदस्य है) 'क्लिओपाट्रा' और "टाइम हैज़ अ स्टौप" जैसे 'कठिन' नाटको का अभिनय कर सकता है, लेकिन हमारी हिन्दी नाट्यमडलिया स्वप्नवासवदत्ता अथवा भारतेन्दु, प्रसाद इत्यादि के नाटको के नाम से ही दूर भागती है। हम लोग नाटक-कार के साथ न्याय नही करते। मेरा तो विचार है कि ये अव्यवसायिक नाटक मडलिया वडे रगमच के लिए प्रयोगशालाओ के तुल्य होनी चाहिए। हमारे छोटे-मोटे अनुभव, हमारी भूलें, हमारी सफलताऐं पृथ्वी-राज और शिशिर भादुडी के लिए पथ प्रदर्शक बनें—इस विश्वास और कामना ही से प्रेरित होकर मैंने भी अपने इन साधारण अनुभवो को लिपिवद्ध करने का दुस्साहस किया है।

जगदीशचन्द्र माथुर